चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 130, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 08 जून 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कोर्ट परिसर में गैंगस्टर संजीव माहेश्वरी जीवा की गोली मारकर हत्या

यूपी में फिर से सरेआम शूट आउट

लखनऊः लखनऊ के कैसरबाग स्थित कोर्ट में बुधवार दोपहर पेशी पर आए बदमाश संजीव माहेश्वरी उर्फ जीवा की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हमलावर वकील की ड्रेस में आया था। उसने दोपहर 3.50 बजे कोर्ट के अंदर 9 टट की पिस्टल से 5-6 राउंड फायरिंग की। हमले में जीवा की मौके पर मौत हो गई। जबकि एक बच्ची और दो पुलिसकर्मियों को गोली लगी है। मौके से भाग रहे हमलावर को वकीलों ने पकड़ लिया। उसकी पिटाई की। पुलिस ने किसी तरह उसे वकीलों से छुड़ाया। हमलावर का नाम विजय यादव है। वह जौनपुर का रहने वाला है। उसने जीवा की हत्या क्यों की? इस बारे में अभी कुछ पता नहीं चल पाया है। कोर्ट को छावनी में तब्दील कर लिया है। वारदात के बाद वकील आक्रोशित हो गए। पुलिस से धक्का-मुक्की की। कई पुलिसकर्मी को गेट से बाहर निकालकर गेट बंद कर दिया।

पुलिस कस्टडी में था संजीव जीवा, 4-5 गोलियां मारीः प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, पूरी वारदात 3.50 बजे से 3.55 बजे के बीच हुई है। संजीव जीवा को पुलिस कस्टडी में लेकर एससी/एसटी कोर्ट पहुंची थी। तभी वहां पहले से मौजूद हमलावर ने जीवा को टारगेट करते हुए फायरिंग शुरू कर दी। इससे वहां भगदड़ मच गई। जीवा कोर्ट में जमीन पर गिर गया। पूरी वारदात पांच मिनट हो गई।

18 महीने की बच्ची समेत 3 लोग हुए घायलः कुछ देर बाद मौके पर पहुंची पुलिस जीवा और तीन अन्य घायलों को बलरामपुर अस्पताल ले गई। सीएमएस डॉ. जीपी गुप्ता ने बताया कि जीवा को जब हॉस्पिटल लाया गया था, तब उसकी मौत हो चुकी थी। वहीं, 18 महीने की बच्ची लक्ष्मी को पीठ में गोली लगी है। उसकी हालत गंभीर है। उसे हायर सेंटर के लिए रेफर किया गया है। वहीं, एक पुलिसकर्मी के पैर में गोली लगी है। जबकि दूसरा भगदड़ में जख्मी हुआ है।

मां बोली- खून निकला तो पता चला कि गोली लगी हैः गाजीपुर की रहने वाली नीलम ने बताया, मैं बच्ची के साथ ससुर की पैरोकारी के लिए कोर्ट में आई थी। इस दौरान ही घटना हुई। बच्ची सो गई थी इसलिए मैंने उसे जमीन पर लिटाया था तभी अचानक से फायरिंग शुरू हुई। मैंने बच्ची को तुरंत गोद मे उठाया और बाहर की ओर भागी। थोड़ी देर में ही उसके शरीर से खून निकलने का अहसास हुआ। तब पता चला कि उसे गोली लगी है। एडवोकेट सुनील कुमार ने बताया कि करीब डेढ़ घंटे बलरामपुर अस्पताल में बर्बाद किए बाद में उसे ट्रॉमा सेंटर रिफर किया गया।

हत्यारोपी की पत्नी ने जताई थी हत्या की आशंका

फरवरी-2021 में संजीव जीवा की पत्नी पायल माहेश्वरी ने सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को पत्र लिखा था। उसने पति संजीव की हत्या की आशंका जताई थी। पायल ने कहा था, संजीव माहेश्वरी लखनऊ जेल में बंद है। संजीव की हत्या के लिए लगातार षड्यंत्र किए जा रहे हैं। जेल के अंदर या न्यायालय में पेशी के दौरान हत्या हो सकती है। 30 जनवरी 2021 को एक बड़े अधिकारी ने जेल में पहुंचकर संजीव को पेशी के दौरान हत्या कराने की धमकी भी दी थी। पायल ने पत्र के जरिए मांग की थी कि उसके पति की पेशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए हो।

मुख्तार अंसारी का करीबी था जीवा

जीवा मुख्तार अंसारी का करीबी था। वह लखनऊ जेल में बंद था। हाल ही में प्रशासन ने उसकी संपत्ति भी कुर्क की थी। जीवा मुजफ्फरनगर का रहने वाला था। शुरूआती दिनों में वह एक दवाखाने में कंपाउंडर की नौकरी करता था। बाद में उसी दवाखाने के मालिक को ही अगवा कर लिया था। इस घटना के बाद जीवा ने 90 के दशक में कोलकाता के एक कारोबारी के बेटे का भी अपहरण किया और फिरौती में दो करोड़ रुपए की मांग की। इसके बाद जीवा हरिद्वार की नाजिम गैंग से जुड़ा, फिर सतेंद्र बरनाला के साथ भी जुड़ा। वह खुद अपना भी एक गैंग बनाना चाहता था।

भाजपा नेता ब्रह्मदत्त द्विवेदी नेता की हत्या में भी आया नामः जीवा का नाम 10 फरवरी, 1997 को हुई भाजपा के कद्दावर नेता ब्रह्मदत्त द्विवेदी की हत्या में सामने आया था। इस केस में जीवा को उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी। इसके कुछ दिन बाद जीवा, मुन्ना बजरंगी गैंग में शामिल हो गया। इसी समय उसका संपर्क मुख्तार अंसारी से हुआ। कहते हैं कि मुख्तार को अत्याधुनिक हथियारों का शौक था, तो जीवा के पास हथियारों को जुटाने का तिकड़मी नेटवर्क था। इसी कारण उसे अंसारी का सपोर्ट था। इसके बाद जीवा का नाम कृष्णानंद राय हत्याकांड में भी आया।

कैबिनेट : खरीफ फसलों की एमएसपी बढ़ाने को मंजूरी

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने उत्पादकों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए विपणन सीजन 2023-24 के लिए खरीफ फसलों के एमएसपी में वृद्धि की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने विपणन सीजन 2023-24 के लिए सभी अनिवार्य खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि को मंजूरी दे दी है। सामान्य धान की कीमत 2040 से बढ़ाकर 2183 रुपये, उच्च गुणवत्ता वाले धान की कीमत 2060 से 2203 रुपये, ज्वार हाइब्रिड 2970 से 3180, ज्वार-मालदंडी 2990 से 3225, बाजरा 2350 से 2500, रागी 3578 से 3846, मक्का 1962 से बढ़ाकर 2090, तूर या अरहर 6600 से 7000, मूंग 7755 से 8558, उड़द 6600 से 6950, मूंगफली 5850 से 6377, सूरजमुखी के बीज 6400 से बढ़ाकर 6760, सोयाबीन 4300 से बढ़ाकर 4600, तिल 7830 से 8635, नाइजरसीड 7287 से 7734, कपास (मध्यम स्टेपल) 6080 से 6620, कपास (लंबा स्टेपल) 6380 से 7020 की गई है। मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि हाल के वर्षों में सरकार फसलों के लिए उच्च एमएसपी की पेशकश करके दालों, तिलहनों और पोषक व श्रीअन्न जैसे अनाजों के अलावा अन्य फसलों की खेती को बढ़ावा दे रही है।

विपक्षियों को 2024 में भी नकारेगी जनता : त्रिवेंद्र सिंह

बलिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश व प्रदेश में जिस तरह विकास का दौर चला है, उससे विपक्षी पूरी तरह हताश हो गए हैं।

विपक्षी दल 2024 के लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के लिए तमाम हथकंडे अपना रहे, लेकिन पिछली बार की तरह इस बार भी जनता उन्हें नकारेगी। यह बातें परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह के नारायणी सिनेमा स्थित कार्यालय पर बुधवार को आयोजित प्रेसवार्ता में उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने कही।

सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर कोल्हापुर में बवाल

कोल्हापुरः महाराष्ट्र में औरंगजेब को लेकर दो जिलों में तनाव है। पहली घटना कोल्हापुर में हुई जहां मंगलवार को कुछ युवकों ने सोशल मीडिया पर औरंगजेब के समर्थन में पोस्ट किया था। इसके खिलाफ बुधवार को बुलाए गए विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों की पुलिस से झड़प हो गई। इससे पहले मंगलवार को अहमदनगर में पत्थरबाजी की घटना सामने आई थी। यहां औरंगजेब के समर्थन में हुई एक रैली के विरोध में प्रदर्शन आयोजित किया गया था।

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में मंगलवार को कुछ युवकों ने सोशल मीडिया पर औरंगजेब के समर्थन में पोस्ट किया। बुधवार को इसके विरोध में प्रदर्शन हुआ। इस दौरान पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाने की कोशिश की। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए लाठीचार्ज किया जिसमें कई लोग घायल हो गए। कोल्हापुर के पुलिस अधीक्षक महेंद्र पंडित ने कहा कि कुछ संगठनों ने कोल्हापुर बंद का आह्वान किया था और इन संगठनों के सदस्य बुधवार को शिवाजी चौक पर एकत्र हुए। उनका प्रदर्शन समाप्त होने के बाद, भीड़ तितर-बितर होने लगी, लेकिन कुछ उपद्रवियों ने पथराव शुरू कर दिया, जिससे पुलिस को मजबूर होकर बल प्रयोग करना पड़ा। इस मामले में अब तक 21 लोगों को हिरासत में लिया गया है। वहीं, आपत्तिजनक पोस्ट करने के मामले में पांच लोगों को हिरासत में लिया गया है।

कोल्हापुर से पहले मंगलवार को अहमदनगर में भी इसी तरह के मामले में पत्थरबाजी की घटना हुई। पत्थरबाजी में दो लोग घायल हो गए, साथ ही कई गाड़ियां भी क्षतिग्रस्त हो गई। शहर के बाहरी इलाके में दक्षिणपंथी संगठनों ने एक रैली का आयोजन किया था। इसके बाद कुछ असामाजिक तत्वों ने पत्थरबाजी की।

केजरीवाल ने अखिलेश यादव से की मुलाकात

लखनऊ। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल बुधवार को दोपहर समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिलने लखनऊ पहुंचे। एयरपोर्ट पर उतरने के बाद अरविन्द केजरीवाल का काफिला सपा मुख्यालय के लिए निकला। एयरपोर्ट पर सपा नेताओं के एक प्रतिनिधि मंडल के साथ ही आप पार्टी नेताओं ने दिल्ली के मुख्यमंत्री का स्वागत किया। उनके साथ पंजाब मुख्यमंत्री भगवंत मान, सांसद संजय सिंह भी मौजूद हैं। अरविन्द केजरीवाल का काफिला एयरपोर्ट से कड़ी सुरक्षा के बीच सपा मुख्यालय पहुंचा। यहां पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने उनका पुष्प गुच्छ देकर भेंट किया। उल्लेखनीय है कि अरविन्द केजरीवाल और अखिलेश यादव की मुलाकात के सियासी मायने अहम माने जा रहे हैं। दोनों ही नेता आने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर चुनावी चर्चा करेंगे और भारतीय जनता पार्टी के विजयी रथ को देश में रोकने की रणनीति पर आगे कैसे बढ़े।

पहलवानों के साथ अनुराग ठाकुर की बैठक खत्म

15 जून तक चार्जशीट और केस वापसी पर हुई चर्चा

नई दिल्लीः भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे पहलवानों ने बुधवार (सात जून) को खेल मंत्री अनुराग ठाकुर से मुलाकात की। करीब छह घंटे तक चली इस बैठक में दोनों पक्षों के बीच कई मामलों पर सहमति बनी है। खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने बैठक के बाद इस बात की जानकारी दी कि खिलाड़ियों के साथ बातचीत में 15 जून तक यौन शोषण के मामले में चार्जशीट दाखिल करने पर चर्चा हुई। अनुराग ठाकुर ने कहा, "पहलवानों के साथ सकरात्मक बातचीत बहुत संवेदनशील मुद्दे पर हुई है। लगभग छह घंटे चली इस बैठक में जिन मुद्दे पर चर्चा हुई है उसमें जो आरोप लगाए गए हैं उन आरोपों की जांच पूरी करके 15 जून तक चार्जशीट दायर की जाए और रेसलिंग फेडरेशन का चुनाव 30 जून तक किया जाए। रेसलिंग फेडरेशन की आंतरिक शिकायत समिति बनाई जाए और उसकी अध्यक्षता कोई महिला करे।"

खिलाड़ियों की इन मांगों पर भी हुई चर्चाः खेल मंत्री ने आगे कहा, "पहलवानों ने मांग की है कि उनके खिलाफ सभी एफआईआर वापस ली जानी चाहिए।

पहलवानों ने यह भी अनुरोध किया कि तीन कार्यकाल पूरा कर चुके बृजभूषण सिंह और उनके सहयोगियों को दोबारा नहीं चुना जाना चाहिए। 15 जून से पहले पहलवान कोई धरना प्रदर्शन नहीं करेंगे।"

23 जून को पटना में ही विपक्षी दलों की बैठक

पटनाः केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के खिलाफ विपक्ष की एकजुटता दिखाने का मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का प्रयास अब रंग लाने वाला है। 12 जून को प्रस्तावित बैठक कांग्रेस के प्रमुख नेता राहुल गांधी की दूरी के कारण टालनी पड़ी थी, लेकिन अब जनता दल यूनाईटेड और राष्ट्रीय जनता दल ने घोषणा की है कि विपक्षी दलों के तमाम प्रमुख नेता 23 जून को पटना में जुटेंगे। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के साथ बुधवार शाम प्रेस कांफ्रेंस कर जानकारी दी कि कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी नेता राहुल गांधी के साथ ही पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व सपा प्रमुख अखिलेश यादव, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, राकांपा प्रमुख व पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद पवार, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, भाकपा महासचिव डी राजा, वरिष्ठ वामपंथी नेता सीताराम येचुरी और दीपांकर भट्टाचार्य ने भी 23 जून को पटना में विपक्षी एकता के लिए होने वाली बैठक में आने की स्वीकृति दी है।

अतीक व अशरफ के हत्यारोपियों की न्यायिक हिरासत बढ़ी

प्रयागराजः अतीक और अशरफ के तीनों हत्यारोपियों शूटर लवलेश तिवारी, सनी सिंह, अरुण मौर्या की सीजेएम कोर्ट में सुनवाई हुई। न्यायिक हिरासत 14 दिन और बढ़ाने की मांग की गई, जिसे कोर्ट ने मंजूर कर लिया। अब 20 जून तक तीनों हत्यारोपी प्रतापगढ़ जेल में ही न्यायिक अभिरक्षा में रहेंगे। मामले की अगली सुनवाई 20 जून को सीजेएम कोर्ट में होगी। आज तीनों आरोपियों की न्यायिक हिरासत खत्म हो रही थी। हत्यारोपियों को सीजेएम दिनेश कुमार गौतम के सामने पेश किया गया। तीनों शूटर अभी प्रतापगढ़ की जिला जेल में बंद हैं। इससे पहले एसआईटी तीनों आरोपियों से प्रतापगढ़ जेल में पूछताछ कर चुकी है। अब जून के अंतिम सप्ताह में चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी है। इसके बाद ट्रायल शुरू होगा और आरोप तय होंगे। बता दें कि, बीते 15 अप्रैल को पुलिस हिरासत में अतीक और अशरफ की गोली मारकर हत्या हुई थी। इस मामले की जांच एसआईटी और न्यायिक जांच आयोग कर रहा है।

हत्यारोपी सनी सिंह, लवलेश तिवारी, अरुण मौर्या के खिलाफ पुलिस चार्जशीट दाखिल करने की तैयारी कर ली है। असलहों की फॉरेंसिक जांच को आधार बनाया जा रहा है। फॉरेंसिक जांच और एफएसएल रिपोर्ट में सामने आया है कि हत्या जिगाना पिस्टल से की गई है। बिना किसी प्लानिंग के अतीक और अशरफ की कैसे इन तीनों ने हत्या कर दी। अभी तक यह सवाल पहेली बना हुआ है। शुरूआती बयान में सनी सिंह ने कहा था कि उन्हें किसी ने नहीं भेजा है और ना ही किसी के इशारे पर उन्होंने अतीक और अशरफ की हत्या की है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, तीनों का यह बयान बरगलाने वाला है। कोई न कोई बड़ा चेहरा इस हत्याकांड के पीछे है, जिसे बेनकाब करने के लिए एसआईटी अब फिर पूछताछ की तैयारी में है।

टिफिन लेकर नोएडा पहुंचे नड्डा, कार्यकर्ताओं के साथ किया सहभोज, कार्यकर्ता जनता तक पहुंचाए मोदी सरकार की उपलब्धियां:जेपी नड्डा

2024 में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी भाजपाः नड्डा

नोएडा। भारतीय जनता पार्टी के के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा बुधवार दोपहर अपना टिफिन लेकर नोएडा के सेक्टर-51 स्थित एलपीएस स्कूल पहुंचे। वहां उन्होंने दीप प्रज्जवलन के साथ उन्होंने कार्याक्रम की शुरूआत की। श्री नड्डा ने भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी, सांसद डॉ. महेश शर्मा, राज्यसभा सांसद सुरेंद्र नागर, समेत पार्टी के पुराने और वरिष्ठ कार्यकताओं, मौजूदा पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक ली। उनके साथ सहभोज कियाऔर लोक सभा चुनाव और मिशन-80 पर चर्चा की । इस बैठक में करीब 200 से ज्यादा कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस अवसर पर बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। विश्व में एक अलग पहचान देश की बनी है। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व भारत की तरफ सकारात्मक रुख के साथ खड़ा है ।यह करिश्मा नरेंद्र मोदी ही कर सकते हैं । श्री नड्डा ने कहा कि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में जन कल्याण की बहुत ही की योजनाएं बहुत ही प्रभावी ढंग से लागू हुई हैं और समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक उसका लाभ पहुंचा है।

भाजपा कार्यकताओं को मोदी सरकार की उपलब्धियों को जनता के साथ प्रभावी ढंग से ले जाना है और उन्हें अवगत कराना है। उन्होंने कहा कि इसी के लिए महा संपर्क अभियान शुरू किया गया है और आज की बैठक भी उसी का एक हिस्सा है ।

हमारी सरकार में एक भी नहीं हुआ दंगाः ब्रजेश

फतेहपुरः सपा शासनकाल में 2017 के पूर्व तक उत्तर प्रदेश दंगा प्रदेश के रूप में जाना जाता था। 2017 से अब तक हमारी सरकार में प्रदेश में एक भी दंगा नहीं हुआ है। जो दंगाई थे वे आज देश छोड़कर बाहर चले गये हैं या फिर जेल के अंदर भेज दिये गये हैं। उक्त बातें जिले में बुधवार को पटेल प्रेक्षागृह में आयोजित मोर्चा सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने आये प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने सपा पर प्रहार करते हुए कहा कि सपा के समय बिजली की जो हालत थी वह किसी से छिपी नहीं है। 2017 के पूर्व सपा के शासनकाल में लोगों को एक हफ्ते दिन व एक हफ्ते रात में बिजली मिलती थी। लोग जनरेटर से अपना काम चलाते थे और बच्चे मिट्टी के तेल से पढ़ने के लिए मजबूर थे। आज प्रदेश के सभी 75 जिलों में बराबर बिजली उपलब्ध हो रही है।

खबर संक्षेप

मां और बेटी के साथ मारपीट अश्लील हरकतें करने पर चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। घर में रही मां बेटी के साथ अश्लीलता की गई।शोर मचाने पर मारे पीटे तोफ फोड किये। तहरीर के आधार पर पुलिस ने चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासनीय एक महिला का आरोप है कि वह और उसकी पुत्री घर मे सो रही थी। आरोप है कि तभी गांव के कतिपय युवक घर में घुस कर उसके घर की केबिल काट कर अश्लील हरकतें करने लगे ।शोर मचाने पर मारे पीटे तथा तोडफोड करते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। महिला ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर गांव के ही दशरथ ,विक्रम सिंह ,संतोष सिंह ,आशीष सिंह के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

बाइकों सवार बदमाशो ने युवक का मोबाइल छीनकर भागे

मऊआइमा। मऊआइमा क्षेत्र में शातिर बदमाशों के हौसले बुलंद हैं। एक युवक मोबाइल से बातें कर रहा था तथी मोबाइल छीन कर बाइक सवार भाग निकले। भुक्तभोगी ने थाने में तहरीर दी है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के सुलतानपुर खास गांव निवासी मोहम्मद आरिफ पुत्र रमजान दोपहर में अपनी मोबाइल से बातें करते हुए घर जा रहा था। कि वन विभाग के अन्दर दो बाइकों पर चार सवार शातिर बदमासो ने झपट्टा मार कर मोबाइल छीन कर भाग गए।

32 लाख गमन के मामले में सचिव व तकनीकी सहायक को पुलिस ने भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

करछना। ब्लाक के अंतर्गत गंधियाव मैं 2015 मे प्रधान राधिका यादव के खिलाफ शिकायती पत्र में गबन का मुकदमा दर्ज कराया गया था जिसमें 419 420 406 409 की धारा में मुकदमा दर्ज हुआ था 1 ग्राम विकास अधिकारी रामबाबू जो कि वर्तमान में फूलपुर में तैनात हैं एवं तीन तकनीकी सहायक के नाम भी मुकदमा दर्ज हुआ था मंगलवार को क्राइम ब्रांच के द्वारा रामबाबू सचिव और अशोक कुमार सिंह तकनीकी सहायक करछना को गिरफ्तार किया गया। गबन में कुल 32 लाख रुपए की धनराशि को रिकवरी करने का आदेश दिया गया था।बुधवार को क्राइम ब्राच और स्थानीय पुलिस ने लिखापढी कर चालान कर दिया। इसके पूर्व भी करछना ब्लाक के अंतर्गत 2 साल के भीतर सात सचिव निलंबित हो चुके हैं। वहीं और सचिव के ऊपर लगातार आरोप लगता रहा है। ब्लाक के अधिकारियो सहित जेई एमआई से लेकर तकनीकी सहायक से लेकर अन्य विभागों का कमीशन हर ग्राम सभा के विकास कार्यों में बंधा है। जिसके कारण गांव में और ब्लॉक में भ्रष्टाचार अपने चरम सीमा पर है। ग्रामीण लगातार भ्रष्टाचार की शिकायत करते आ रहे हैं किंतु ब्लॉक के अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा जांच रिपोर्ट में उन्हें बचा लिया जाता है।

सब्जी के व्यापारी से गौहनिया मे मोबाइल की छिनैती

जारी। क्षेत्र के जारी बाजार निवासी सब्जी व्यापारी दीपक अग्रहरि पुत्र रामबाबू अग्रहरी जो सब्जी मंडी जसरा से सुबह करीब सात बजे जसरा सब्जी मंडी से सब्जी लेकर गौहनिया ओवर ब्रिज के नीचे जैसे ही अप्पे से पहुंचे। की स्लेटी कलर की अपाचे सवार तीन पतले दुबले नौजवान जो मुंह अपना ढके हुए थे। करीब 25000 का मोबाइल छीन कर भाग गए। जारी बाजार के व्यापारी दीपक और उसके साथ बैठे अन्य व्यापारी बहुत आवाक रह गए। स्लेटी कलर की अपाचे सवार पतले दुबले युवक गौहनियां की तरफ भागे हैं। लगातार गौहनिया घूरपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत हो रही घटनाओं का केंद्र गौहनिया और ओवर ब्रिज बना हुआ है। यहां मोबाइल छिनैती और बाईक छिनैती करने वाले वाले गैंग सक्रिय हैं। जो भोली भाली जनता को शिकार बना रहे हैं । घूरपुर थाने से संबंधित चौकी इंचार्ज गौहनिया लापरवाही बरत रहे हैं। महीने भर के भीतर दर्जनों बाइक यहां से चोरी चली गई है । लेकिन किसी का कोई पता नहीं लगा।

सीएम योगी के खिलाफ दाखिल मुकदमे की पैरवी करने वाले एके संड बने शासकीय अधिवक्ता

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शासन ने मंगलवार को इलाहाबाद उच्च न्यायालय में बहुप्रतीक्षित सरकारी वकीलों की दूसरी सूची जारी कर दी। चुनावी वर्ष में सरकारी वकीलों की जारी यह सूची राजनीतिक मायने में काफी अहम मानी जा रही है। सरकार ने इस सूची में नए वकीलों को जगह देने के साथ ही जातीय समीकरण को भी साधा है। इस सूची में 2017 में परवेज परवाज की ओर से दाखिल मुकदमे में मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ की ओर से पैरवी कर चुके आशुतोष कुमार संड को शासकीय अधिवक्ता बनाया गया है।न्याय विभाग के विशेष सचिव निकुंज मित्तल की ओर से जारी सूची में शासकीय अधिवक्ता संड समेत 273 अपर शासकीय अधिवक्ताओं की नियुक्ति को स्वीकृति दी गई है। इसमें 65 अपर शासकीय अधिवक्ता प्रथम और 207 अपर शासकीय अधिवक्ता शामिल हैं। इस सूची में जातीय संतुलन का ध्यान रखते हुए हर वर्ग को साधा गया है।बीते 25 - 26 मई को भी सरकारी वकीलों की सूची जारी हुई थी। उस सूची में शामिल नामों को लेकर भाजपा और संघ से जुड़े कार्यकर्ताओं में नाराजगी पैदा होने की बात सामने आई थी। इस सूची में उन्हें संतुष्ट करने की कोशिश की गई है। शासकीय अधिवक्ता नियुक्त किए जाने के बाद संड ने महाधिवक्ता कार्यालय पहुंचकर कार्यभार ग्रहण कर लिया। 1977 में वकालत की शुरूआत करने वाले संड आपराधिक मामलों के ख्याति प्राप्त अधिवक्ता हैं। वर्ष 1997 से लगातार अपर शासकीय अधिवक्ता के रूप में प्रदेश सरकार के फौजदारी मामलों की पैरवी कर रहे हैं। 2017 में समाजसेवी परवेज परवाज की ओर से सीएम योगी के खिलाफ दाखिल मुकदमे में प्रभावी पैरवी करने का उनको फायदा मिलने की बात कही जा रही है।

माना जा रहा है कि राज्य सरकार ने संड के पुराने रिकॉर्ड को देखते हुए शासकीय अधिवक्ता की बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। संड को अब इलाहाबाद उच्च न्यायालय में फौजदारी मामलों के शीघ्र निवारण के साथ ही, शासकीय अधिवक्ता कार्यालय की प्रशासनिक जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करना होगा।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन का मऊआइमा में हुआ स्वागत

मऊआइमा। मऊआइमा में बुधवार को पूर्व केन्द्रीय मंत्री एंव वर्तमान राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन का प्रयागराज से प्रतापगढ़ जाते समय मऊआइमा ब्लाक चौराहे पर भाजपाइयों ने फूल माला पहना कर भव्य स्वागत किया। मऊआइमा के ब्लाक चौराहे पर बुधवार को प्रतागराज से प्रतापगढ़ जाते समय पूर्व केन्द्रीय मंत्री शाहनवाज हुसैन का माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया गया इस अवसर पर एम एल सी सुरेंद्र चौधरी , मऊआइमा ग्रामीण के मंडल अध्यक्ष , राम सुंदर मिश्रा , मऊआइमा नगर अध्यक्ष शारदा प्रसाद शुक्ला, जिला उपाध्यक्ष राम पलट पटेल, असद , आदेश पांडेय, मिठाई लाल, विजय मौर्या ,हरिगोविंद पटेल ,जे पी पटेल ,शंभूनाथ पटेल ,दीपक मिश्रा , दयाराम गौतम , बबलू प्रधान ,निसार उद्दीन ,एयाज अहमद ,राजू , धर्मेंद्र पासी ,युवराज सिंह , रामयश मौर्या , रमेश सोनी वरिष्ठ कार्यकर्ता ओम प्रकाश सोनी निमिष खत्री, शंभू पटेल ,संजय पटेल ,जयप्रकाश पटेल,, चमन मास्टर,मोहम्मद आलम आदि भारी संख्या में भाजपा पदाधिकारियों एंव कार्यकर्ता गण मौजूद रहे।

गंगा की धारा बदली, संगम दक्षिण-पूर्व की ओर दो सौ मीटर दूर शिफ्ट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। संगमनगरी में गंगा की पारिस्थितिकी में बदलाव से संगम स्थल ही बदल गया है। अगर इन दिनों आपको संगम में डुबकी लगानी है, तो निर्धारित स्थल से करीब दो सौ मीटर दूर जाना होगा। अरसे बाद दक्षिण-पूर्व की ओर संगम शिफ्ट हो गया है। इससे गंगा पर आश्रित तीर्थ पुरोहितों, नाविकों की जिंदगी पर तो असर पड़ा ही है, पूजा-प्रसाद का कारोबार भी शिफ्ट करना पड़ा है। शिफ्टिंग रोकने और निर्धारित संगम स्थल की ओर गंगा की धारा मोड़ने के लिए प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने ड्रेजिंग शुरू करा दी है, ताकि देश-दुनिया से आने वाले श्रद्धालुओं को किसी तरह की दिक्कतों का सामना न करना पड़े।गंगा की धारा में बदलाव की वजह से संगम के शिफ्टिंग की यह घटना महीने भर के भीतर हुई है। तीन साल पहले गंगा की धारा के पश्चिम वाहिनी होने की वजह से संगम किला घाट की ओर खिसका था, लेकिन विपरीत दिशा में नैनी की तरफ अरैल घाट पर अरसे बाद संगम की शिफ्टिंग हुई है। जानकार इसके पीछे दारागंज के सामने गंगा पर रेलवे पुल के निर्माण को सबसे बड़ी वजह मान रहे हैं।कहा जा रहा है कि गंगा की धारा निमार्णाधीन पिलरों से टकराकर पूरब की ओर मुड़ती जा रही है। इस वजह से पूरब की ओर गंगा का प्रवाह मुड़ रहा है और कटान का दायरा बढ़ रहा है, जबकि पश्चिम और दक्षिण की ओर रेत के टीले उभर रहे हैं। यही वजह है कि संगम घाट के सामने डेढ़ सौ मीटर के दायरे में रेत का टापू बन गया है।तीर्थपुरोहित राजमणि तिवारी बताते हैं कि 2013 में जून के महीने में अरैल घाट की ओर शिफ्ट हुआ था। लेकिन, दशक भर के भीतर यह पहली घटना है, जब संगम स्नान के लिए अरैल घाट तक की यात्रा श्रद्धालुओं को करनी पड़ रही है। जय त्रिवेणी जय प्रयाग संस्था के अध्यक्ष तीर्थपुरोहित प्रदीप कुमार पांडेय ने बताया कि बैराजों से पानी नहीं छोड़ा जा रहा है। इससे धारा कमजोर हो गई है। रेलवे पुल के पिलरों के निर्माण और खुदाई से भी धारा बदल रही है। इस वजह से गंगा के पूर्वी तट की ओर कटान शुरू हो गई है।गंगा में रेलवे ब्रिज के लिए पिलर खड़े किए जा रहे हैं। इससे फाफामऊ की ओर से आने वाली गंगा की धारा उन पिलरों से टकरा कर पूरब की ओर मुड़ रही है। धारा बदलकर छतनाग और सोमेश्वर महादेव के सामने तट से टकरा रही है। इस वजह से संगम स्थल की शिफ्टिंग स्वाभाविक है।

- प्रो. जेएन त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष- भू एवं ग्रहीय विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

शिफ्टिंग रोकने के लिए गंगा में ड्रेजिंग आरंभ

शिफ्टिंग रोकने के लिए गंगा में ड्रेजिंग शुरू करा दी गई है। मंगलवार को संगम पर एक जेसीबी लगाकर खुदाई कराई गई। ताकि प्रवाह की नई दिशा बनाई जा सके। मेला प्राधिकरण का मानना है कि पूर्व निर्धारित स्थल पर गंगा का प्रवाह आ जाने के बाद लोगों को डुबकी के लिए अधिक दूरी तय नहीं करनी पड़ेगी। साथ ही अरैल के सामने पहुंचे संगम तक मोटरसाइकल से श्रद्धालुओं का आवागमन भी रोका जा सकेगा। दो दिन पहले गंगा में डूबे पांच युवक मोटरसाइकिल से ही वहां पहुंचे थे। अब ड्रेजिंग कर नई धारा बनाए जाने से मौजूदा संगम घाट तक मोटरसाइकिल से पहुंचने का रास्ता भी बंद किया जा सकेगा।

श्रीमद भागवत कथा का सातवें दिन, भगवान कृष्ण और सुदामा की मित्रता का वर्णन किया

अखंड भारत संदेश

करछना। तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत बेंदों में चल रही सात दिवसीय श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के सातवें दिन सर्वप्रथम भगवान की पूजा के बादआचार्य आरती के साथ प्रारंभ हुआ ।मुख्य यजमान श्रीमती प्रभा शुक्ला व डा उमा शंकर शुक्ला जी द्वारा कुल देवता व गुरु की पूजा किए। कथा वाचक आचार्य देवव्रत महराज जी ने विभिन्न प्रसंगों पर प्रवचन दिए। उन्होंने कहा कि सातवें दिन कृष्ण के अलग-अलग लीलाओं का वर्णन किया गया। मां देवकी के कहने पर छह पुत्रों को वापस लाकर मा देवकी को वापस देना सुभद्रा हरण का आख्यान कहना एवं सुदामा चरित्र का वर्णन करते हुए बताया कि मित्रता कैसे निभाई जाए यह भगवान श्री कृष्ण सुदामा जी से समझ सकते हैं। उन्होंने कहा कि सुदामा अपनी पत्नी के आग्रह पर अपने मित्र से सखा सुदामा मिलने के लिए द्वारिका पहुंचे। उन्होंने कहा कि सुदामा द्वारिकाधीश के महल का पता पूछा और महल की ओर बढ़ने लगे द्वार पर द्वारपालों ने सुदामा को भिक्षा मांगने वाला समझकर रोक दिया। तब उन्होंने कहा कि वह कृष्ण के मित्र हैं इस पर द्वारपाल महल में गए और प्रभु से कहा कि कोई उनसे मिलने आया है। अपना नाम सुदामा बता रहा है जैसे ही द्वारपाल के मुंह से उन्होंने सुदामा का नाम सुना प्रभु सुदामा सुदामा कहते हुए तेजी से द्वार की तरफ भागे सामने सुदामा सखा को देखकर उन्होंने उसे अपने सीने से लगा लिया। सुदामा ने भी कन्हैया कन्हैया कहकर उन्हें गले लगाया दोनों की ऐसी मित्रता देखकर सभा में बैठे सभी लोग अचंभित हो गए। कृष्ण सुदामा को अपने राज सिंहासन पर बैठाया हुआ। उन्हें कुबेर का धन देकर मालामाल कर दिया। जब जब भी भक्तों पर विपदा आ पड़ी है। प्रभु उनका तारण करने अवश्य आए हैं। आयोजक आशुतोष शुक्ला एवम अभिजीत शुक्ला ने कथा में आए सभी लोगो का आदर सत्कार किया, साथ ही यह भी बताया कि कल दिनांक 8 जून को हवन पूणार्हुति तथा दिनांक 9 जून को महाप्रसाद वितरण एवम ब्राह्मणभोज का आयोजन किया जायेगा। आज के कार्यक्रम में सादर उपस्थिती में श्री डॉ अजय कुमार, (पूर्व विधायक बारा) श्री नित्यानंद उपाध्याय (पी.डब्लू चीफ) श्री मनोज मिश्रा (एलआईयू इंसपेक्टर) श्री बीएस दिवेदी (प्रधानाचार्य) श्री रजनीश तिवारी, अरुण उपाध्याय, सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

भूमि विवाद को लेकर दो सगे भाइयों में खुनी संघर्ष लूटपाट क्रास मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा में जमीनी विवाद को लेकर दो सगे भाइयों के बीच खूनी संघर्ष लूट पाट तोड़ फोड़ में एक की हालत गंभीर पुलिस ने दोनो पक्षो की तहरीर पर क्रास मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम बसरही निवासी राजेंद्र प्रसाद पुत्र महंगू एक ही नाम के दो सगे भाई हैं। जमीन और नाम के लिए जमकर मार पीट किए। एक ने घर में घुस कर फावडे से मारने तथा तोड फोड करने का आरोप लगाते हुए थाने में नागेंद्र प्रसाद विश्वकर्मा, दिनेश कुमार, उमेश कुमार पुत्रगण नागेंद्र प्रसाद ,रामनारायण तथा पूर्व प्रधान भारत लाल तथा दो अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। जबकि दूसरे राजेंद्र प्रसाद पुत्र महंगू ने मारने पीटने और छीन लेने का आरोप लगाते हुए नागेंद्र उर्फ राजेंद्र पुत्र महंगू तथा दो अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। एक ही नाम के दो सगे भाइयों के बारे में ग्रामीणों ने बताया कि न जाने यह क्यों लड रहे हैं। ग्रामीणों ने चौंकाने वाली बात यह बताई कि आधार कार्ड एंव परिवार रजिस्टर में भी दोनों में राजेंद्र नाम दशार्या गया है। ग्रामीणों ने बताया कि जबकि सच्चाई यह है कि राजेंद्र प्रसाद बडा है जबकि नागेंद्र प्रसाद छोटा है। बहरहाल पुलिस दोनों पक्षों का मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

मऊआइमा के ग्राम बसरही में दो सगे भाई अपने अपने को राजेंद्र बता रहे हैं नाम और जमीन को लेकर सामने आया अजीबोगरीब मामला

विधुत विभाग ने तहसील अधिकारियों के साथ चलाया आरसी वसूली का अभियान

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। तहसील व विधुत विभाग की संयुक्त टीम द्वारा बुधवार को क्षेत्र में आरसी वसूली का विशेष अभियान चलाया गया। एसडीओ प्रांजल मिश्रा व तहसीलदार ओम प्रकाश शुक्ला के नेतृत्व में टीम थानापुर, देवनहरी, रामनाथपट्टी व बीरकाजी गांव के साथ ही फूलपुर कस्बे में जाकर विधुत बिल न जमा करने वाले बड़े बकाएदारों के खिलाफ आरसी रिकवरी की कार्रवाई कर समय से बिल जमा करने की सलाह दी। इस दौरान विधुत विभाग ने बकाएदारों से जहां एक लाख रुपए की राजस्व वसूली की वहीं विधुत विभाग के अधिकारियों की सख़्ती से विधुत बिल के बकाएदारों में हड़कंप मचा रहा। एसडीओ प्रांजल मिश्रा ने उपभोक्ताओं से जनहित में विजली चोरी न करने की सलाह देते हुए कहा कि जो भी उपभोक्ता समय से बिल की अदायगी नहीं कर रहे हैं उनके खिलाफ आरसी की कार्रवाई करने की तैयारी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र के विभिन्न प्रतिष्ठानों एवं घरेलू उपभोक्ताओं के जो भी बकाए की आरसी अथवा विद्युत चोरी की आरसी थी उसको रिकवर करने के लिए तहसील अधिकारियों के साथ विधुत विच्छेदन कराया जा रहा है। विधुत बिल की अदायगी न करने वाले उपभोक्ताओं को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में हर एक विद्युत बकाएदारों के खिलाफ आरसी प्रेषित कर जिला प्रशासन के सहयोग से सख्त से सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। मौके पर लाइनमैन, तहसील कर्मियों के साथ ही विधुत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

विधुत विभाग की सख्त कार्रवाई से बकाएदारों में मचा हड़कंप

एसीएमओ ने जाना सीएचसी मेजा का हाल, व्यवस्थाओं का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

मेजा। बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मेजा का एसीएमओ ने औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने चिकित्सा कक्ष, ओपीडी, एक्सरे रूम,मेडिसिन रूम को भी देखा। एसीएमओ ने मरीजों से भी बातचीत की। अस्पताल परिसर में गंदगी देखकर उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए अधीक्षक ओमप्रकाश को फटकार लगाई और सफाई का निर्देश भी दिया। जिसके बाद उन्होंने अभिलेखों को भी देखा। एसीएमओ के अस्पताल में पहुंचने पर कर्मचारियों में खलबली मच गई। अस्पताल परिसर में गंदगी को देखकर उन्होंने कड़ी नाराजगी जताई और तत्काल साफ सफाई के निर्देश भी दिए। अस्पताल परिसर में बिजली ना होने से उन्होंने कहा कि तत्काल जनरेटर चलाकर गर्मी में पंखा चलाए जाएं और किसी तरह की किसी मरीज को कोई दिक्कत ना हो। तहसील मुख्यालय मेजा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एसीएमओ अजय प्रियदर्शी ने औचक निरीक्षण किया। एसीएमओ के पहुंचते ही अस्पताल में कर्मचारियों में खलबली मच गई। एसीएमओ ने मेडिसिन स्टोर रूम का निरीक्षण किया।वहां मौजूद फार्मासिस्ट कमलेश मिश्र से जानकारी लेते हुए कहा कि जो दवाइयां उपलब्ध न हो उसे तत्काल मंगा लें।मरीजों को किसी भी प्रकार की दवा को लेकर परेशानी नहीं होनी चाहिए। जिसके बाद उन्होंने मरीजों से भी बातचीत की।जानकारी ली कि बाहर की दवा तो नहीं लिखी जाती है।चिकित्सा कक्ष ओपीडी एक्स-रे रूम,मेडिसिन स्टोर रूम, महिला वार्ड का भी उन्होंने निरीक्षण किया। जिसके बाद उपस्थिति रजिस्टर वार्ड वाय रजिस्टर को भी देखा। बुधवार को जब एसीएमओ ने अस्पताल का औचक निरीक्षण किया।उस दौरान डॉक्टर समीम अख्तर, डॉक्टर बब्लू सोनकर, डॉक्टर शाश्वत सिंह, डॉक्टर सुरेश सोनकर, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी अंजू राय, फार्मासिस्ट कमलेश मिश्र,दीपू तिवारी,स्टाफ नर्स आशा कुमारी सहित अस्पताल प्रशासन का समस्त स्टॉफ मौजूद रहा।

न्यूज झरोखा

बारा पॉवर प्लांट में रोपे गए पौधे, बच्चों ने बनाई ड्राइंग

शंकरगढ़। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर जिलेभर में विविध आयोजन हुए। औद्योगिक इकाइयों में भी जागरुकता कार्यक्रमों के आयोजन के साथ-साथ पौधरोपण कर धरा को बचाने का संकल्प लिया गया। इसी कड़ी में प्रयागराज पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड (पीपीजीसीएल) बारा पॉवर प्लांट में भी बड़े पैमाने पर पौधरोपण किया गया और इकाई से जुड़े परिवार के बच्चों ने पोस्टर, स्लोगन और ड्राइंग प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में कचरा निस्तारण पर विशेष रूप से जानकारी दी गई। प्रतियोगिताओं में प्लांट में कार्यरत लोगों के बच्चों ने सहभागिता की और अपने विचारों और संकल्पों को चार्ट पेपर पर उकेरा। पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए प्लांट के चीफ (ओएंडएम) अभिजीत ने कहा, पर्यावरण का संरक्षण करना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। जिस प्रकार हम अपनी व अपनों की देखभाल नियमित रूप से करते हैं, उसी प्रकार हम सभी को प्रकृति की भी देखभाल करनी होगी, तभी हम आने वाली पीढ़ी को एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण का तोहफा दे पाएंगे। जागरुकता कार्यक्रम को प्लांट के चीफ (सेवाएं) एसएच पांडेय ने भी संबोधित किया। इस दौरान एचआर हेड रामेंद्र बनिक, पर्यावरण हेड पंकज कुमार के साथ सभी अधिकारियों ने परिसर में बड़े पैमाने पर पौधरोपण किया।

ब्लॉक दिवस में नहीं आए फरियादी,बीडीओ करते रहे इंतजार

मेजा। शासन द्वारा ब्लॉक दिवस आयोजित करने की मंशा यहां तार-तार हो रही है। प्रचार-प्रसार के अभाव में बुधवार को भी शिकायतकर्ता ब्लॉक नहीं पहुंचे।खंड विकास अधिकारी मेजा सईद अहमद की अध्यक्षता में आयोजित ब्लॉक दिवस में शिकायतकताओं के ना आने के कारण पूरे दिन अधिकारी कर्मचारी फरियादियों के इंतजार में खाली ही बैठे रहे। ब्लाक स्तर पर होने वाला ब्लाक दिवस मखौल बन कर रह गया है। प्रचार प्रसार के अभाव में इसमें लोगों की रुचि नहीं है। जबकि विभिन्न गांवों में विकास कार्यों को लेकर आए दिन शिकायतें आती रहती हैं। कर्मचारी सभागार में मेज कुर्सी लगाए डटे रहे लेकिन कोई नहीं आया। इससे कर्मचारियों की पौ बारह रही। उनका दिन आपस में गप्पें मारने तक सीमित रहा। यानी प्रचार प्रसार के अभाव में ब्लाक दिवस कागजों में सिमट कर रह गया।

पीपीजीसीएल ने पटरी दुकानदारों को बांटा छाता

शंकरगढ़। प्रयागराज पावर जेनरेशन कंपनी लिमिटेड की तरफ से आज प्लांट से प्रभावित क्षेत्रों में गर्मी से बचाव के लिए छाता वितरित किया गया। पीपीजीसीएल बारा के सीएसआर विभाग के द्वारा क्षेत्र के मिश्रापुरवा शिवराजपुर और शंकरगढ़ में खुले में रहने वाले फुटपाथी दुकानदारों को छाता प्रदान किया। सीआरआर के तहत पीपीजीसीएल के द्वारा हाल के दिनों में इंडिया मार्का हैंडपंप की भी स्थापना करवाई गई थी।

अनिल मिश्र उच्च न्यायालय में अपर शासकीय अधिवक्ता नियुक्त

पसना। कोरांव तहसील के बैदवार गांव निवासी अधिवक्ता अनिल कुमार मिश्र को राज्य सरकार द्वारा उच्च न्यायालय इलाहाबाद में सरकार के आपराधिक मुकदमों की पैरवी के लिए अपर शासकीय अधिवक्ता अपराध के पद पर नियुक्त किया गया है।गौरतलब है कि पूर्व में अनिल मिश्र स्टैंडिंग कौंसिल के रूप में हाईकोर्ट में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। श्री मिश्र के नियुक्ति पर विधायक राजमणि कोल,भाजपा उपाध्यक्ष राजेश्वरी तिवारी,तुलसीदास राणा,अखंड पांडेय,राजेश मिश्र, आदि ने बधाई एवम् शुभकामनाएं दी है।

आत्महत्या के लिए उकसाने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने आत्महत्या के लिए प्रेरित करने के अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी क्षेत्र के जूही से की गई है। आरोपी का चालान भेज दिया गया है। एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि धारा 306 व 3(2)5 एससी एसटी एक्ट के अभियुक्त अभिषेक सिंह उर्फ गोलू सिंह पुत्र अमरबहादुर सिंह को आज गिरफ्तार किया गया है। वह शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के जूही का रहने वाला है। आरोपी के खिलाफ धारा 174ए के तहत एक मामला और दर्ज है। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई संतोष कुमार सिंह, ऋतुराज सिंह के साथ कांस्टेबल प्रभुनारायण और विपिन चौधरी भी शामिल रहे।

पशु क्रूरता के बचाव हेतु महापौर को सौंपा ज्ञापन

प्रयागराज। बुधवार को महापौर उमेशचंद्र गणेश केसरवानी को पशु क्रूरता के बचाव हेतु प्रयागराज नगर निगम के द्वारा लगाए गए फ्लेक्स बोर्ड में विज्ञापन के छपाई कराने के संदर्भ में जनहित संघर्ष समिति ने सौंपा ज्ञापन'जिलाध्यक्ष अभिलाष केसरवानी ने बताया पशु क्रूरता प्रतिदिन बढ़ती जा रही है ।समाज के अनैतिक लोगों में किसी भी प्रकार की भय नहीं है जैसा कि संविधान के अंतर्गत पशु क्रूरता को लेकर धारा 11 पीसीए 1960 एवं 429आईपीसी यह धाराएं हैं। प्रयागराज नगर निगम फ्लैश बोर्ड में पशु क्रूरता के रोके जाने के संदर्भ में विज्ञापन छपाई जाए ।इन सब मुद्दों को लेकर महापौर को ज्ञापन दिया है,ज्ञापन देने वालों में मुख्य रूप से जनहित संघर्ष समिति के प्रदेश अध्यक्ष अनिल केशवानी,युवा जिला अध्यक्ष अभिलाष केसरवानी, पूनम गुप्ता, सुभाष खरे,सचिन गुप्ता,दीप्ति विकास, चौरसिया आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे। वरिष्ठ समाजसेवी गुफरान खान ने दी है।

रीवा राष्ट्रीय राज मार्ग के जारी बाजार में सफाई ब्यवस्था ध्वस्त चारों तरफ फैली गंदगी

जारी। क्षेत्र के विकास खंड जसरा के अंतर्गत आने वाली ग्राम सभाओं में जारी , गडैया कला व गडैया खुर्द तीन ग्राम सभा है। जो कि यहाँ पर हाइवे समेत कई जगह पर कूडो का ढेर लगा हुआ है। एक तरफ प्रधानमंत्री व प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा ।तो वही दूसरी तरफ जारी बाजार में बस्ती के अंदर व डिवाइडरो में कूडो का ढेर लगा हुआ है। विगत कई महीनों से चारों तरफ पहेली है गंदगी तीनो ग्राम सभा मे सफाई ब्यवस्था ध्वस्त हो गई है। सरकार द्वारा लाखो रुपये का वेतन सफाई कर्मी घर बैठे उठा रहे है। सफाई कर्मी दिखाई नही देता है। जगह जगह नालिया जाम हो गई है। जिससे जलभराव की स्थिति बनी हुई है। लोगो ने बताया की नालियो की सफाई ना होने से आने वाले बरसात के मौसम मे नालियो का पानी घरो मे प्रवेश कर जाता है। जिससे लोगो को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है ।भीषण गर्मी में बीमारी की आशंका बनी रहती है ।स्थानीय लोगो ने बताया कि यहाँ सफाई कमीर्यो की नियुक्ति है लेकिन कोई दिखाई नहीं पड़ता किसी को कोई जानकारी नही है। न तो आज तक सफाई करते दिखाई दिया। विभागीय अधिकारियों का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है। जिससे समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है।

शास्त्री ब्रिज पर लटकी मिली युवक की लाश

हत्या कर फंदे पर लटकाने की आशंका, ग्रीन बैग में कपड़े मिले, फोन या आईडी नहीं मिला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शास्त्री ब्रिज की रेलिंग से फंदे के सहारे एक युवक की लाश लटकी मिली। बुधवार को लोगों ने बॉडी को देखकर पुलिस बुलाई। आशंका है कि हत्या के बाद लाश को यहां टांगा गया है। युवक कौन है? अगर उसकी हत्या की गई, तो ये फंदा लगाकर किसने फेंक दिया। अगर ये सुसाइड है, तो फंदे पर लटक कर क्यों किया गया। ऐसे सवालों के जवाब के लिए पुलिस ने लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा है।

पुल पर पड़ा मिला ग्रीन कलर का बैग और बोतल : शास्त्री पुल पर जिस जगह से युवक की डेड बॉडी रस्सी के सहारे लटकती मिली। कुछ दूरी पर एक ग्रीन बैग मिला। उसके पास एक पानी की बोतल रखी हुई थी। बैग की पीछे की चेन खुली पड़ी थी। बैग में कुछ कपडे, साबुन-शैंपू रखा मिला है। बैग में फोन या कोई पहचान पत्र नहीं मिला है।पुलिस अब इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही है कि युवक कौन है और शास्त्री पुल पर किस समय पहुंचा। पुलिस इस एंगल से तहकीकात कर रही है कि कहीं युवक की हत्या करके उसे आत्महत्या तो दिखाने की कोशिश नहीं की गई । फिलहाल पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही यह साफ होगा कि यह हत्या है या आत्महत्या।

रेलवे पुल का चल रहा काम, मजदूर ने दी पुलिस को सूचना : दारागंज पुलिस ने बताया कि शास्त्री पुल पर रेलवे के दूसरे पुल का निर्माण कार्य चल रहा है। सुबह 10 बजे के करीब मजदूर ने देखा कि पुल के नीचे से एक शव लटक रहा है। इसकी जानकारी पुलिस को दी गई। पुलिस ने जब पहुंचकर देखा तो युवक नायलॉन की रस्सी से लटकता मिला। रस्सी पुल के ग्रिल से बंधी थी। इस घटना की जानकारी होने पर पुल पर काफी संख्या में भीड़ एकत्रित हो गई।

शिनाख्त के लिए 7 शहर के पुलिस को भेजी फोटो : दारागंज इंस्पेक्टर के मुताबिक, लड़के की अभी पहचान नहीं हो पाई है। उसके पास ऐसा कोई डॉक्यूमेंट नहीं मिला, जिससे उसकी शिनाख्त कराई जा सके। पहचान कराने के लिए जनपद के सभी थानों के अलावा पड़ोसी जनपद भदोही, बनारस, मिजार्पुर, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ , कौशांबी और चित्रकूट जनपद के पुलिस ग्रुप में उसकी फोटो डिटेल भेजी गई है। हालांकि अभी तक कोई बैक कॉल नहीं आई है।

बुधवार से शनिवार तक हीट वेव चलने के आसार

अखंड भारत संदेश

नैनी प्रयागराज। में बहुत जरूरी काम हो तब घर से बाहर निकले गर्मी ने बुधवार को काफी परेशान किया स्थिति यह रही कि सुबह भी एसी, कूलर बंद नहीं हुए दिन निकलने के साथ गर्मी बढ़ती गई और गर्म हवाओं ने झुलसाया। मंगलवार अधिकतम तापमान 43 डिग्री सेल्सियस रहा, जो बुधवार को 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। सुबह से ही सूरज ने तेवर दिखाना शुरू कर दिया था स्थिति यह रही कि सुबह आठ बजे भी घर से निकलना मुश्किल हो गया था 10 बजे के बाद तो हवाएं काफी गर्म हो गई थीं। ऐसे में दिन में बाहर निकलने के लिए मजबूर लोगों को काफी परेशनी उठानी पड़ी। रात में भी तापमान 27 डिग्री के आसपास रहा और लोग बेचैन रहे। आने वाले चार दिन तो और भारी पड़ने वाले हैं। मौसम विभाग के अनुसार बुधवार से शनिवार तक हीट वेव चलने के आसार हैं। इस दौरान दिन में पारा 46 डिग्री को भी पार कर सकता है तो रात में भी तापमान 30 डिग्री से ऊपर रहने के आसार हैं यानि, दिन में लू चलेगी तो रात भी बेचैन करने वाली होगी इसके बाद कुछ राहत की बात कही जा रही है लेकिन रविवार को आसमान साफ रहने एवं तापमान 43 डिग्री के ऊपर पहुंचने के आसार हैं आठ जून को 46 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान रहने की संभावना है, जबकि न्यूनतम 28 डिग्री तक रहने के आसार हैं।

बहुत जरूरी काम हो तब घर से बाहर निकलें

5 नहीं, संगम में डूबे थे 7 छात्र

2 और छात्रों के शवों की शिनाख्त, उत्कर्ष का कुछ पता नहीं, सर्च ऑपरेशन का दायरा बढ़ा

प्रयागराज। संगम में रविवार देर शाम जेटी टूटने से हुए हादसे में 9 नहीं 11 लोग डूबे थे। 7 लोग बह गए थे जबकि 4 लोगों को बचा लिया गया था। एनडीआरएफ-एसडीआरएफ ने दो और शवों को बरामद कर लिया है। इनमें से एक शव ग्वालियर के रहने वाले ऋषभ का है। परिजनों ने उसकी शिनाख्त की है। एक की पहचान होना अभी बाकी है। उत्कर्ष का अभी तक कुछ पता नहीं चल पाया है। सर्च ऑपरेशन बुधवार की सुबह 6 बजे से फिर शुरू कर दिया गया है।

अब तक 5 छात्रों के शव बरामद, एक की पहचान बाकी, एक अभी भी लापता : एसीपी दारागंज चिराग जैन ने बताया कि मंगलवार की देर शाम छतनाग घाट पर सुमित का शव मिला है। उसके परिजनों ने पहचान की है। एक शव जिसकी पहचान नहीं हो सकी है, वह ग्वालियर के ऋषभ का था। वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बीकॉम की पढ़ाई कर रहा था। उसके परिजन प्रयागराज के लिए निकले हैं। अब तक डूबे 5 छात्रों के शव बरामद कर लिए गए हैं। उत्कर्ष की तलाश जारी है।

प्रयागराज में एनडीए की कोचिंग कर रहा था सुमित : सुमित विश्वकर्मा (17) प्रयागराज में रहकर एनडीए की कोचिंग कर रहा था। वह मध्य प्रदेश के सतना जिले का रहने वाला था। उसके पिता शिवमंगल पुणे में नौकरी करते हैं और हादसे की जानकारी मिले के बाद प्रयागराज बुधवार को पहुंचे हैं। इकलौते बेटे की मौत पर परिजनों पर जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। सभी बिलख रहे थे। पोस्टमार्टम के बाद बुधवार की सुबह दारागंज घाट पर ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

4 छात्रों के शवों का हुआ पोस्टमार्टम : पहचान के बाद महेश्वर वर्मा पुत्र छोटे लाल--मऊ, विशाल वर्मा पुत्र विजय वर्मा मुंगेर बिहार, अभिषेक अग्रहरी पुत्र जगदीश अग्रहरी--सुल्तानपुर, सुमित विश्वकर्मा पुत्र शिवमंगल --सतना मध्यप्रदेश। ऋषक जोकि ग्वालियर का रहने वाला है उसके शव की बुधवार को पोस्टमार्टम होना है। एक और छात्र के मिले शव की पहचान होना अभी बाकी है।

पड़ोसी ने की थी हत्या दारोगा की पत्नी की मौत की गुत्थी सुलझी

पड़ोसी धनश्याम दुबे ने ही की थी हत्या, नकदी और जेवरात भी बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पड़ोसी ने की थी हत्या धूमनगंज थानाक्षेत्र में दारोगा की पत्नी पुष्पा देवी (48) की मौत की गुत्थी सुलझ गई है हत्या नामजद आरोपी धनश्याम दुबे ने अपने एक दोस्त शिवपूजन के साथ मिलकर की थी। हत्या के बाद गहने व नकदी लेकर आरोपी भाग निकले थे हत्या वाले दिन घनश्याम दुबे ने कराई थी पूजा-पाठ पुलिस ने घनश्याम दुबे को पकड़कर जब उससे कड़ाई से पूछताछ की तो पता चला कि घटना वाले दिन पुष्पा ने घनश्याम को पूजा-पाठ के लिए बुलाया था रात में वह अपने दोस्त शिवपूजन को लेकर पहुंचा था। पूजा के बाद दोनों ने पुष्पा का दुपट्टे से गला कस दिया और गहने व रुपये लेकर फरार हो गए धूमनगंज इंस्पेक्टर राजेश कुमार मौर्य ने बताया कि धनश्याम दुबे ने पुष्पा को परिवार की एक महिला की बीमारी से निजात दिलाने का झांसा दिया था कहा था कि विशेष अनुष्ठान से यह बाधा दूर हो जाएगी। पुष्पा उसकी बातों में आ गई दोनों रविवार की रात में ही घर में पहुंचे थे मामले में भी और पूछताछ हो रहीहै।

पुष्पा देवी, मृतक

सूत्रों के मुताबिक घर पर पूजा पाठ कराने के नाम पर पड़ोसी घनश्याम दुबे अक्सर अता जाता रहता था इसके आलावा घर पर किसी अन्य व्यक्ति का आना-जाना नहीं रहता था पुष्पा देवी के पति दारोगा निहाल सिंह ने शक के आधार पर अपने पड़ोसी घनश्याम दुबे के खिलाफ 302 की धारा में धूमनगंज थाने में हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था एसआई निहाल सिंह ने धूनगंज थाने में कराई एफआईआर में लिखा है कि उनकी पोस्टिंग जीआरपी टूंडला में है उनका पीपलगांव शाहपुर में आरजी नंबर 770 पर घर बना हुआ है मेरी पत्नी मकान में कुछ समय से अकेले रहती थीं बड़ा लड़का विक्रम पनकी कानपुर में अपनी पत्नी के इलाज के लिए गया हुआ था। छोटा बेटा रविंदर झांसी अपनी पत्नी को लेने गया था मेरी बेटी पूनम रेलवे में नौकरी करती है। पूनम ने रविवार को 10.30 बजे अपनी मां पुष्पा से बात की थी सोमवार की सुबह लगभग 9 बजे फोन मिलाया गया पर बार बार फोन मिलाने पर फोन स्विच ऑफ पाया गया। संदेह होने पर मैंने अपनी बेटी पूनम को बताया तो पूनम ने पड़ोसी वकील के यहां फोन किया कि मेरी मम्मी से बात करवा दो तब वो बगल के वकील की पत्नी मेरे घर आयी और आन्टी आन्टी कह कहकर बुला रही थी आवाज नहीं आने पर वो पहले मंजिल फिर दूसरी मंजिल फिर तीसरी मंजिल गयीं तो देखा कि हमारी पत्नी के नाक से खून आ रहा था यह सब देखकर वो जोर जोर से चिल्लायी रस्सी से गला दबाया हुवा व नाक से खून देखकर उन्होने मुहल्ले वालो को बुलाया और इकट्ठा किया किसी ने 112 नंबर डायल कर पुलिस को सूचना दी घर पर रिश्तेदारों के पहुंचने पर पता चला कि पत्नी मर चुकी हैं मैने अपने छोटे बेटे की शादी 2 महीने पहले की थी शादी में कुछ पैसा बच गया था जो कि मुझसे उधार लिये था वह वापस करना था और मुझसे तहरीर मांगी गयी है। घर के जेवरात व समस्त पैसा का हिसाब किताब मेरी पत्नी व मेरे अलावा किसी को जानकारी में नहीं था। घर आने पर सभी आलमारियों को देखा तो गहने और रुपये गायब मिले 1 हार, 3 तोला सोने की अंगूठी, 2 कान का झुमका, 2.5 तोला सोना, 3 अंगूठी, 31.5 तोला सोना चैन, 6 तोला सोना, 1 पायल, 500 ग्राम चांदी व 2 लाख 90 हजार रुपये कैश गायब थे पोस्टमार्टम रिपोर्ट में आई थी हैंगिंग पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हैंगिंग (फांसी) से मौत की बात सामने आई थी। सोमवार की सुबह जब घर के अंदर बेड से डेड बॉडी बरामद की गई तो उसमें गला दबाकर हत्या की अशंकर जाहिर की गई थी। सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा था कि अगर पुष्पा देवी ने फांसी लगाई तो डेड बॉडी नीचे किसने उतारी। नाक से खून कैसे आया फिलहाल दारोगा निहाल सिंह यादव ने अपने पड़ोसी घनश्याम दुबे के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। घटना के बाद घनश्याम दुरब अपने घर से फरार चल रहा था।

डायरिया से बचाव के लिए सघन दस्त पखवाड़ा की हुई शुरूआत

अखंड भारत संदेश

मेजा। क्षेत्र में शिशु मृत्यु दर में कमी लाने तथा बच्चों को डायरिया से बचाव के लिए सघन दस्त नियंत्रण अभियान की बुधवार को शुरूआत की गई। 7 जून से 6 जुलाई तक चलने वाले इस अभियान के दौरान बच्चों को ओआरएस का घोल पिलाने के साथ ही डायरिया से बचाव की जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। सीएचसी मेजा के चिकित्सक बब्लू सोनकर ने फीता कटाकर इस अभियान की शुरूआत की। डॉ0 सोनकर ने बताया कि दस्त बाल मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है। इसे नियंत्रण करने व दस्त संबंधी कारण व इसके निदान के प्रति आम लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से दस्त नियंत्रण पखवाड़ा का आयोजन महत्वपूर्ण है। पखवाड़ा के दौरान कम उम्र के बच्चों के बीच ओआरएस व जिंक की दवा वितरित की जाएंगी। दस्त के कारण होने वाले शिशु मृत्यु के मामलों को न्यूनतम स्तर तक लाना इस पखवाड़ा का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि डायरिया से होने वाले मृत्यु का मुख्य कारण निर्जलीकरण व शरीर में इलेट्रोलाइट्स की कमी है। ओआरएस व जिंक के प्रयोग से डायरिया से होने वाली मौत को टाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि इस अभियान के दौरान आपसी समन्वय के आधार पर दस्त नियंत्रण के उपाय, दस्त की शिकायत होने पर ओआरएस व जिंक दवा का प्रयोग, दस्त के दौरान उचित पोषण व समुचित इलाज के प्रति आम लोगों को जागरूक किया जाएगा। आशा घर-घर जाकर ओआरएस व जिक दवा का वितरण करेंगी। पखवाड़ा के दौरान आशा कार्यकताओं द्वारा घर-घर जाकर पांच साल से कम उम्र के बच्चों के बीच ओआरएस व जिक दवा का वितरण किया जायेगा। इस मौके पर डॉक्टर समीम अख्तर, डॉक्टर शास्वत सिंह, डॉक्टर सुरेश सोनकर,स्टाफ नर्स आशा कुमारी, वंदना, रचना, आशा पुष्प सिंह, देवी, दिलोसा, पूनम, निशा, आरती देवी, सीमा शर्मा, फार्मासिस्ट कमलेश मिश्र और सुनील सिंह मौजूद रहे।

पुराने नंबर प्लेट लगे है तो अब होगा चालान

प्रयागराज। अब से गाड़ियों हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट न होने पर सीधे चालान कर दिया जाएगा इसकी जांच के लिए प्रयागराज में चार टीमें गठित कर दी गई है दो टीमें शहर और एक-एक टीम गंगापार और यमुनापार में जांच करेगी एआरटीओ (प्रशासन) राजीव चतुवेर्दी ने कहा कि हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा इसके लिए चार टीमें गठित कर दी गई है ऐसे वाहनों का चालान किया जाएगा जिन पर अभी भी पुराने नंबर प्लेट लगे हुए हैं पहली बार में 5 हजार रुपए काचालान किया जाएगा दूसरी बार पकड़े जाने पर 10 हजार रुपये का चालान कर दिया जाएगा उन्होंने सभी वाहन मालिकों से अपील किया है कि वह वाहन पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट अवश्य लगवा लें संभागीय परिवहन विभाग की ओर से अब सख्ती की जा रही है पूरे जनपद की बात की जाए तो यहां 15 लाख से ज्यादा वाहन पंजीकृत हैं, जिसमें 6.90 लाख वाहनों में हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लग चुके हैं लेकिन 8 लाख से ज्यादा ऐसे वाहन हैं जिन पर पुराने नंबर प्लेट लगे हुए हैं शत प्रतिशत वाहनों पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगवाने के लिए विभाग की ओर से कई बार अभियान भी चलाया गया लेकिन लक्ष्य नहीं हासिल हो सका।

उषा इंटरनेशनल लिमिटेड की नकली पंप बेचने वाले दुकान संचालको के विरुद्ध केश दर्ज

मेजा पुलिस को मिली बडी कामयाबी 12 नकली पंप बरामद

अखंड भारत संदेश

मेजा। स्थानीय बजार मेजारोड मे कथित एक हार्डवेयर एण्ड पेंट स्टोर के दुकान संचालको द्वारा नकली उषा समरसेवल पंप बेचे जाने का मामला प्रकाश मे आया है कम्पनी के मैनेजर सुनील कुमार की तहरीर पर मेजा पुलिस केस दर्ज कर कार्यवाही में जुट गई है । प्राप्त जानकारी के अनुसार मेजा थाना क्षेत्र के मेजारोड बाजार स्थित कैलाश हार्डवेयर एण्ड पेंट स्टोर व त्रिलोकी पेंट हाउस के दुकान संचालको द्वारा दिल्ली की उषा इंटरनेशनल लिमिटेड कम्पनी के नाम व पते की नकली लेवल लगाकर उषा समरसेवल पंप बेचे जाने की सूचना किसी प्रकार कम्पनी के मैनेजर सुनील कुमार को मिली जिस पर बुधवार को कम्पनी के मैनेजर अपनी टीम के साथ उक्त दुकानो पर पहुंचे और आम ग्राहक बनकर उषा समरसेवल पंप खरीदने की बात दुकान संचालक से कहा दुकान संचालकों द्वारा उषा इंटरनेशनल लिमिटेड का नकली लेवल लगा पंप जैसे ही दिखाया तो मैनेजर व उनके सहयोगियो के होश उड़ गये और आनन फानन मे मेजा थाना पहुंचकर उक्त दुकान संचालको के विरुद्ध लिखित तहरीर दिया । गौरतलब है कि कम्पनी के मैनेजर की शिकायत को गंभीरता से लेते हुए त्वरित कार्यवाही किये जाने हेतु नवागंतुक थाना प्रभारी मेजा राजेश उपाध्याय ने उप0नि0 योगेंद्र सिंह के

नेतृत्व मे गठित पुलिस टीम मौके पर भेजकर कर छापे मारी की गई छापे मारी के दौरान पुलिस को उक्त दुकान संचालको की दुकान से 12 सेट उषा इंटरनेशनल लिमिटेड का नकली लेवल व पता लिखा समरसेवल पंप बरामद कर लिया है हलाकि कम्पनी के मैनेजर के तहरीर मेजा पुलिस गम्भीर अपराधो में केश दर्ज कर जांच परताल की कार्यवाही में जुट गई है।

बेटे-बहू की पिटाई से भयभीत-बुजुर्ग ने सीएम से लगाई गुहार

प्रयागराज। मांडा थाना क्षेत्र के कनेवरा गांव में बेटे-बहू की पिटाई और नगदी सहित 7 लाख के जेवरात चोरी के मामले में स्थानीय पुलिस व जिले के उच्चधिकारियों की लापरवाही से आजिज आकर पीड़ित ने अब सीधे मुख्यमंत्री से न्याय के लिए गुहार लगाई है। इसबसे पुलिस महकमे में भी खलबली मच गई है। पीड़ित ने बेटे बहू के साथ साथ मुख्यमंत्री से पुलिस की शिथिलता का भी जमकर शिकायत किया है।मांडा थाना क्षेत्र के कनेवरा गांव के रहने वाले राज देव मिश्रा उम्र 83 वर्ष ने आज मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र देकर आरोपित किया है कि उनके सगे बेटे एवं बहू और नाती ने बीते एक पखवाड़े पूर्व घर पर उनकी गैर मौजूदगी में बॉक्स का ताला तोड़कर एक लाख नगदी सहित कुल ?7 लाख का जेवरात गायब कर दिया था। पूछताछ के दौरान बेटे बहू और नाती ने उनकी जमकर पिटाई किया। साथ ही 15 लाख रुपए की मांग को लेकर रोजाना प्रताड़ित किया जा रहा है।

चंपारण से प्रयागराज पहुंचा पुरानी पेंशन का आंदोलन

प्रयागराज जनपद के शिक्षकों ने पुरानी पेंशन के नायक विजय बंधु से की वार्ता, प्रयागराज से प्रतापगढ़ के लिए रवाना हुआ पुरानी पेंशन

बहाली प्रयागराज के शांतिपुरम में शिक्षकों ने विजय बंधु का स्वागत करते लोग।

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पुरानी पेंशन बहाली आंदोलन के नायक विजय बंधु की पेंशन बहाली रथ चंपारण से चलकर देश के विभिन्न जनपदों से होता हुआ प्रयागराज पहुंचा। जो शांतिपुरम चौराहा से होता हुआ प्रतापगढ़ रवाना होगा। शांतिपुरम चौराहा पर भीषण गर्मी में शिक्षक एवं कर्मचारियों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। विजय बंधु ने कहा कि जाति, धर्म और राजनीतिक पार्टियों से ऊपर उठकर कर अपने बुढ़ापे की लाठी के लिए एकजुट होना चाहिए। पंजाब, हिमाचल, कर्नाटक जैसे राज्यों की तरह हमारी जायज मांग पुरानी पेंशन हमारा अधिकार है। हमारी पार्टी और हमारा नेता वही होगा जो हमारी पुरानी पेंशन बहाल करेगा। इस दौरान उपस्थित शिक्षक एवं कर्मचारियों को शांतिपुरम के नवनिर्वाचित ऊजार्वान पार्षद सुरेन्द्र कुमार यादव द्वारा मिष्ठान और पानी की भरपूर व्यवस्था किया। पूरे समय उपस्थित रहकर सभी उपस्थित जनों के कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे। इस अवसर पर मुख्य रुप से एमएलसी डाक्टर मान सिंह, दूधनाथ पटेल, पार्षद सुरेन्द्र यादव, जयराम सिंह, विनीत सिंह यादव, धर्मराज, शिवांकर सिहं, बृजेश फूलएश्वर, दीपनारायण, सुरेंद्र आदि लोग उपस्थित रहे।

पुरानी पेंशन को लेकर कर्मचारियों ने भरी हुंकार

सोरांव। बुधवार को कर्मचारी शिक्षक संगठन (अटेवा) के अध्यक्ष विजय बंधु के सोरांव आगमन पर सोरांव ब्लॉक के सफाई कर्मचारियों सहित सचिवगणों ने उनका माल्यार्पण कर स्वागत किया। तथा कर्मचारियों के सैकड़ों की संख्या में एकत्रित होकर पुरानी पेंशन बहाली को लेकर जोरदार एकता दिखाई। बंधु ने कहा कि अब पुरानी पेंशन बहाल करना सरकार की मजबूरी होगी। कई राज्यों में पुरानी पेंशन बहाल हो चुकी है। इस मौके पर सफाई कर्म चारी अरुण मौर्य ने स्वागत गीत के माध्यम से विजय बंधु का स्वागत किया। इस मौके पर ग्राम पंचायतों के सेक्रेटरी मुकेश मौर्य,अंकित मौर्य, अजय यादव, राजीव मौर्य,साकिब ,नरेंद्र सिंह संग उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अनिल कुमार, ब्लॉक महामंत्री गिरीश मौर्य(अकेला),कोषाध्यक्ष रवि प्रकाश, अरुण मौर्य, फूलचंद्र,प्रेम पटेल, धर्मेंद्र कुमार आदि कर्मचारी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में गिरीश मौर्य महामंत्री के द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने को लेकर ब्लॉक में काफी चर्चा और प्रशंसा भी की हुई।

सभी मेडिकल कालेजों के इमरजेंसी में आए मरीजों का देना होगा ब्यौरा

प्रयागराज समेत सभी मेडिकल कॉलेजों को बताना होगा कितने मरीजों को बचाया, प्रयागराज के एसआरएन अस्पताल में स्थित है ट्रामा सेंटर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेजों में इमरजेंसी में आने वाले मरीजों से संबंधित व्यौरा अब प्रतिदिन शासन को देनी होगी कितने मरीजों का इलाज वहीं पर किया गया और कितने मरीजों को अन्य बड़े अस्पतालों के लिए रेफर किया गया, इसकी प्रतिदिन की रिपोर्ट तैयार कर शासन को भेजी जाएगी प्रयागराज के मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज समेत प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्यों को इसके लिए प्रमुख सचिव (चिकित्सा शिक्षा) आलोक कुमार की ओर से पत्र भी जारी कर दिया गया है कॉलेजों की आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्था में सुधार करने के उद्देश्य से यह व्यवस्था लागू की जा रही है दरअसल, जिला अस्पतालों और मेडिकल कॉलेजों से रेफर होने के बाद ज्यादातर गंभीर मरीज लखनऊ के एसजीपीजीआई, केजीएमयू, राम मनोहर लोहिया संस्थान के ट्रामा सेंटर पहुंचते हैं। यही कारण है कि यहां इमरजेंसी में मरीजों का लोड बढ़ जाता है इसमें कई ऐसे भी केस आते हैं जिन्हें मेडिकल कॉलेज स्तर पर ठीक किया जा सकता है, फिर भी वह इलाज करने से कतराते हैं और रेफर पर्चा बनाकर हायर सेंटर भेज देते हैं अब ऐसा नहीं हो पाएगा प्रमुख सचिव के आदेश में स्पष्ट किया गया है कि इमरजेंसी में आने वाले मरीजों का इलाज कितनी देरी में शुरू हुआ, क्या इलाज किया गया, कितने मरीजों का इलाज करके उन्हें घर भेजा गया और कितने मरीजों को सीथे लखनऊ के लिए रेफर किया गया यह सब विवरण प्रतिदिन शासन स्तर पर उपलब्ध करानी होगी मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एसपी सिंह बताते हैं, प्रयास होता है कि इमरजेंसी में आने वाले मरीजों का इलाज यहीं किया जाए, लेकिन गंभीर मरीजों को चिकित्सक लखनऊ भेजते हैं अब यहां आने वाले मरीजों के इलाज संबंधित विवरण उच्चाधिकारियों को भेजा जाएगा।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं मोहम्मद सारिब पुत्र महबूब हसन निवासी दनियालपुर लालगोपालगंज थाना नवाबगंज जनपद प्रयागराज का मूल निवासी है। त्रुटि वश पासपोर्ट में मेरे नाम के साथ फारुकी जुड़ गया है। जबकि पासपोर्ट के अलावा मेरे सभी अभिलेख मोहम्मद सारिब के नाम से ही है। आज से मुझे मोहम्मद सारिब पुत्र महबूब हसन के नाम से ही जाना एवं पहचाना जाए।

हॉस्टल की समस्याओं को लेकर अभविप ने डीआईओएस को सौंपा ज्ञापन

प्रतापगढ़। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकताओं ने नगर के राजकीय इंटर कालेज में स्थित हास्टल की समस्याओं को लेकर डीआईओएस को ज्ञापन सौंपा। प्रांत सह मंत्री सुधांशु रंजन मिश्रा ने कहा कि विद्यालय कैंपस में विद्यार्थियों के रहने के लिये नए हास्टल का निर्माण कराया जा रहा है लेकिन कार्यदायी संस्था द्वारा की जा रही लापरवाही के कारण उसका निर्माण पूर्ण नहीं हो पा रहा है। वहां पर लगे उपकरणों को अराजकतत्वों द्वारा क्षति पहुंचाया जा रहा है। नगर कार्यकारिणी सदस्य षिवांग श्रीवास्तव ने कहा कि हॉस्टल में गंदगी का अम्बार लगा हुआ है। उन्होंने मांग किया कि हास्टल का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूर्ण कराकर छात्रों को आवंटित किया जाए। ज्ञापन देने वालों में बालाजी ओझा, शुभम मिश्रा, प्रिंस सिंह, अंश त्रिपाठी, अहम शुक्ला, सौरभ पाल, आकाश बारी, रोहित उपाध्याय आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पूरे विश्व में भारत में ही सुरक्षित है मुसलमानः शाहनवाज

मोदी सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने पर प्रबुद्ध सम्मेलन में बोले राष्ट्रीय प्रवक्ता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। चिलबिला स्थित श्रीराम वाटिका में मोदी सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रबुद्ध सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन ने दीप प्रज्वलन कर विधिवत शुभारम्भ करते हुये कहा कि मोदी सरकार ने बिना भेदभाव के विकास करने का काम किया। कभी उन्होंने जाति पाति और वर्ग विशेष को चिन्हित कर योजना नहीं बनाई। श्री हुसैन ने कहा कि आज भारत विकास के आधार पर विश्व पटल पर एक माडल के रूप में स्थापित हो चुका है।

सांसद संगम लाल गुप्ता ने कहा कि सरकार की सर्वांगीण विकास की सोच का परिणाम है कि आज आजादी के 70 साल बाद प्रतापगढ़ जैसी जगह पर भी मेडिकल कॉलेज की स्थापना कराए जाने में हम सफल हो सके। सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य ने कहा कि आज बड़े पैमाने पर प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कायाकल्प योजना में दुरुस्तीकरण कराने के साथ साथ नये भवनों का निर्माण और कई शासकीय इंटर कॉलेजों और महाविद्यालयों का निर्माण कराकर भावी पीढ़ी को शिक्षा से जुड़ी सुविधाएँ उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। जिला अध्यक्ष भाजपा हरिओम मिश्र ने कहा कि देश ने पूरी मजबूती से कोरोना महामारी का सामना किया।

राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज का स्वागत करते भाजपाई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रदेश कार्य समिति सदस्य शिवप्रकाश मिश्र सेनानी ने आये हुये सभी प्रबुद्धजनो का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अशोक श्रीवास्तव जिला उपाध्यक्ष ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष ओम प्रकाश त्रिपाठी, राम अवध पांडे, प्रमोद मौर्या, पवन गौतम, राजेश सिंह, अशोक मिश्र, रूची केशरवानी, सिंधुजा मिश्र, गुड्डू पाण्डेय, रामजी मिश्र, गिरधारी सिंह, राधवेन्द्र शुक्ल, देवेश त्रिपाठी, पूनम इंसान सहित सैकड़ों प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान डॉ० कलाम यूथ रत्न अवार्ड 2023 के लिए अनिल कुमार निलय का चयन

अन्तर्राष्ट्रीय यूथ कान्फ्रेंस 2023 में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे अनिल कुमार निलय

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अन्तर्राष्ट्रीय युवा केन्द्र चाणक्यपुरी नई दिल्ली में आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कलाम यूथ लीडरशिप कान्फ्रेंस 2023 में धर्मनगरी चित्रकूट के खुटहा गाँव के मूल निवासी व राजकीय हाईस्कूल सराय आनादेव प्रतापगढ़ के विज्ञान शिक्षक अनिल कुमार निलय को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान डा० कलाम यूथ रत्न अवार्ड 2023 से सम्मानित किया जायेगा इस तीन दिवसीय कान्फ्रेंस में साऊदी अरब, बांग्लादेश, श्रीलंका, मलेशिया, पाकिस्तान सहित 25 देशों के प्रतिनिधि शिरकत करेंगे।

निलय को अन्तर्राष्ट्रीय डा० कलाम यूथ रत्न अवार्ड 2023 सम्मान के साथ ही साथ राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधित्व का अवसर प्रदान किया जा रहा है विश्व में शांति लाने के लिए युवा क्लबों के माध्यम से भविष्य की तैयारी विषय पर निलय द्वारा अपने विचारों का प्रस्तुतीकरण किया जायेगा। भारत और जर्मनी की संयुक्त पहल गंगा बॉक्स के मास्टर फैसलिटेटर रह चुके निलय का नाम द ब्रिटिश वर्ल्ड रिकॉर्ड्स लंदन में दर्ज है

अनिल कुमार निलय।

और आस्ट्रेलिया की अन्तर्राष्ट्रीय ई पत्रिका व अमेरिका से प्रकाशित समाचार पत्र में इनकी रचनाओं का प्रकाशन हो चुका है। ये राष्ट्रीय शिक्षा रत्न सम्मान 2019 से सम्मानित हैं। विज्ञान प्रतियोगिता में प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं। सम्मान हेतु चयनित होने पर डा० ओ०पी०राय जिला विद्यालय निरीक्षक, एस०पी०यादव सह जिला विद्यालय निरीक्षक, वरिष्ठ साहित्यकार दयाराम मौर्य रत्न, वरिष्ठ समाजसेवी रोशनलाल ऊमरवैश्य, आनंद मोहन ओझा, प्रेम त्रिपाठी, श्रीनाथ मौर्य, काकाश्री, प्रियंका, शशि, माया सहित अन्य जनपदवासियों ने निलय को बधाई दी।

सेवा समिति की बैठक संपन्न

पट्टी, प्रतापगढ़। नव चेतना सेवा समिति की एक बैठक का आयोजन पट्टी में किया गया जिसमें संस्था के सभी सदस्य और पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक का आयोजन पट्टी नगर स्थित रायपुर रोड पर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विपिन श्रीवास्तव ने कहा कि संस्था हमेशा सामाजिक न्याय के क्षेत्र में काम करती है। उन्होंने प्रतापगढ़ के नवागत जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश श्रीवास्तव का जिले में स्वागत करते हुए उम्मीद जताई कि न्याय के क्षेत्र में निश्चित रूप से उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। बैठक में मुख्य रूप से डॉक्टर डी एस गुप्ता, शुभम, मनीष श्रीवास्तव, शुभम श्रीवास्तव, तेज प्रताप पांडे, सहित कई लोग मौजूद रहे।

सूखे पड़े अमृत सरोवर, कैसे होगा जल संरक्षण

यह कैसा आदेश पानी भरवाने की जगह शुरू हो गया तालाबों का सौंदरीकरण

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। एक तरफ जहां अधिकारियों ने सभी तालाबों में पानी भरवाने का आदेश दिया है, वहीं आदेशों को दरकिनार करते हुए सौंदरीकरण का कार्य शुरू हो गया है सूखे पड़े अमृत सरोवरों से जहां बेजुबानो को गला तर करने के लिए निराश लौटना पड़ रहा है,वही इस तरह की लापरवाही के चलते जल संरक्षण कैसे संभव होगा।

स्थानीय विकास खंड में इस गर्मी माह में गावो में पड़े अधूरे अमृत सरोवर दूसरो की प्यास बुझाने की जगह खुद प्यासे दिखाई दे रहे है। शासन द्वारा अमृत सरोवर

लालगंज के बेलहा में सूखा पड़ा अमृत सरोवर।

का मुख्य उद्देश्य है की देश में तेजी से घट रहे जल स्तर को बनाए रखना। इसके लिए सरकार ने 24 अप्रैल 2022 को इस योजना की शुरुवात की। 15 अगस्त 2022 के पहले ही इसे पूर्ण करने का लक्ष्य भी था और आजादी के 75वां महोत्सव सरोवर के उद्घाटन से ही होना था।

अधिकांश अमृत सरोवर अभी अपूर्ण ही है। जब गर्मियों में बेजुबानों को पानी की जरूरत है साथ जल स्तर को बनाए रखने की जरूरत है तो अधिकारियो को सौंदरीकरण की याद आ गई और तालाबों पर निर्माण कार्य शुरू करा दिया गया। वहीं सभी तालाब जलमग्न रहे ऐसा ही शासन का आदेश है, लेकिन यहां तो पानी भरवाने की जगह सभी लोग तालाबों के सौंदरीकरण में जुट गए हैं। आखिर इस तरह लापरवाही के चलते सरकार की मंशा जल स्तर को बनाते रखने की क्या पूर्ण हो पाएगी? इस संबंध में एडीओ पंचायत आद्या प्रसाद द्विवेदी ने उचित जवाब न देकर बीडीओ साहब से जानकारी करने की बात कही।

मोबाईल व नगदी के साथ दो अभियुक्त चढ़े पुलिस के हत्थे

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। थाना महेशगंज उ0नि0 सुनील कुमार गुप्ता व उ0नि0 हेमन्त कुमार वर्मा अपने हमराही के साथ देखभाल व क्षेत्र चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र के झींगुर तिराहा के पास से सूरज पाण्डेय पुत्र गिरजाशंकर पाण्डेय नि0ग्राम छता का पुरवा झींगुर, थाना महेशगंज जनपद प्रतापगढ के पास से मु0अ0सं0 76/23 धारा 457, 380, 411, 413 भादवि से सम्बन्धित अभियुक्त के पास चोरी के दो एंड्राइड मोबाइल फोन व 240 रुपये नकद बरामद किया।

अभियुक्त उपरोक्त की निशानदेही पर उदयप्रताप सिंह उर्फ राय साहब पुत्र स्व0 इन्द्रजीत सिंह उर्फ बूटी सिंह नि0ग्राम हीरागंज ऐंधा थाना महेशगंज जनपद

चोरी के मोबाईल व पेड़ काटने की मशीन बरामद

प्रतापगढ के पास से मु0अ0सं0 77/23 धारा 379, 411, 413 भादवि से सम्बन्धित लकड़ी काटने की मशीन बरामद की गई। गिरफ्तार अभियुक्त सूरज पाण्डेय ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि मैं तथा मेरे एक अन्य साथी ने मिलकर कई चोरियां की हैं। हम लोग नशे के आदी हैं, चोरी के सामान को बेचकर जो पैसा मिलता है उससे अपना नशा व अन्य खर्चा चलाते हैं, यह बरामद मोबाइल व पैसा जो मेरे हिस्से में आया था 5 जून को थाना महेशगंज क्षेत्रान्तर्गत बहोरिकपुर के पास स्थित एक होटल से चुराया था व शेष अन्य सामान मेरा साथी ले गया था। 22 मई को छता का पुरवा झींगुर से बरामद हुई लकड़ी काटने की मशीन को चुराकर उदयप्रताप सिंह उर्फ राय साहब के हाथ बेच दिया। पुलिस ने लिखा पढ़ी करके अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया।

चार अवैध देसी बम के साथ गिरफ्तार

प्रतापगढ़। जिले के थाना कन्धई के उ0नि0 राहुल कुमार मय हमराह देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर थानाक्षेत्र कन्धई के नहर पुलिया देवकली के पास से एक व्यक्ति शनि सरोज पुत्र विजय सरोज नि0ग्राम देवकली थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को 04 अदद देसी बम के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना कन्धई में विस्फोटक अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया।

खराब सड़क व बजबजाती नाली से गुजरने को मजबूर ग्रामवासी

परियावां, प्रतापगढ़। एक तरफ केंद्र की मोदी सरकार व प्रदेश की योगी सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में गांवों को इंटरनेट सुविधा से सुसज्जित कर विकास पर पानी की तरह पैसा बहा रही है तो दूसरी तरफ गांव में क्षतिग्रस्त सड़क व बज बजाती नालियों के बीच ग्रामीणो को गुजरना पड़ रहा तो जिसकी लिखित शिकायत ग्रामवासियो ने खण्ड विकास अधिकारी प्रवीण कुमार श्रीवास्तव से किया, लेकिन अभी तक समस्या का निदान नही हो सका। गांव मे जर्जर इंटरलाकिंग व बदबूदार नाली के गंदा पानी के बीच लोग आ जा रहे है जिससे भीषण गर्मी में कोई बड़ी बीमारी फैल सकती है। ग्रामवासियो ने नवागत जिलाधिकारी व सीडीओ प्रतापगढ़ से समस्या से निजात दिलाने के लिए इस ओर ध्यान आकृष्ट कराया है। इस बाबत पूछे जाने पर खण्ड विकास अधिकारी कालाकांकर प्रवीन कुमार श्रीवास्तव ने बताया की मामला संज्ञान मे आया है जल्द ही समस्या का समाधान कर दिया जायेगा।

जमीनी विवाद में दो पक्षों मे मारपीट, तहरीर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद को लेकर बुधवार को दो पक्षो में लाठी डंडे चले। दोनों पक्षों की ओर से पुलिस को तहरीर दी गयी है। जगन्नाथपुर निवासी स्व. नर्वदा प्रसाद की पत्नी रामलली ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बुधवार को सुबह साढ़े दस बजे वह अपनी भूमिधरी मे मकान बनाने के लिए नींव खुदवा रही थी। आरोप है कि तभी गांव के ही बालकृष्ण तिवारी, राजकुमार व नीरज तिवारी पुत्रगण इंद्र नारायण लाठी डंडे व फर्से से लैस होकर वहां आ गये। आरोपियो ने मकान के निर्माण मे लगे मजदूरों को गाली देते हुए भगा दिया। पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपियो ने उसके साथ मारपीट करते हुए दुर्व्यवहार किया। पीड़िता का बेटा मनोज मां की पिटाई देख वहां पहुंचा तो आरोपियो ने उस पर भी जानलेवा हमले का प्रयास किया। शोर मचाने पर आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। वहीं घटना को लेकर दूसरे पक्ष के बालकृष्ण तिवारी की पत्नी गायत्री देवी ने भी पुलिस को तहरीर देकर कहा है कि जमीनी विवाद को लेकर गांव के मनोज शुक्ल, मयंक शुक्ल पुत्रगण नर्वदा प्रसाद तथा विशाल सिंह पुत्र मिथलेश, संजीव सिंह पुत्र जय बहादुर ने एकराय होकर उसके दरवाजे पर हमलावर हो उठे। आरोपियो ने पीड़िता को गाली देते हुए मवेशी का खूंटा तोडकर उसे भगा दिया। पीड़िता के विरोध करने पर आरोपियो ने उसके साथ बदसलूकी की। शोरशराबे पर गांव के लोग जुटने लगे तो आरोपियो ने जानलेवा धमकी भी दी।

नए सृजित पदों पर नियुक्ति पर भ्रष्टाचार के विरोध में युवाओं ने किया प्रदर्शन

जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन कर पारदर्शी नियुक्तियां कराने की मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन के माध्यम से सैकड़ों युवाओं ने विद्युत वितरण मंडल प्रतापगढ़ के अधीन 800 नए सृजित पदों पर नियुक्तियों को लेकर आउट सोर्स एजेंसी मैसर्स ग्लोबटेक क्रिएशन प्राइवेट लिमिटेड पर गंभीर अनियमितता और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है।

प्रदर्शनकारियों का कहना है कि उत्तर प्रदेश सरकार के शासनादेश के क्रम में उत्तर प्रदेश के सभी सरकारी विभागों उसके अधीन सभी संस्थाओं और उपक्रमों में अनिवार्य रूप से सेवायोजन पोर्टल के माध्यम से नियुक्तियां की जानी थी। यही नहीं अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण की व्यवस्था भी उत्तर प्रदेश शासन के शासनादेश के

भ्रष्टाचार के विरोध में विरोध प्रदर्शन करते युवागण।

क्रम में दी गई व्यवस्था और अध्यक्ष उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन द्वारा दिए गए आरक्षण सुनिश्चित किया जाना था किंतु फार्म के द्वारा बिना विज्ञप्ति प्रकाशित किए हुए बिना कोई इंटरव्यू किए हुए चुपके चुपके पैसे लेकर भर्तियां कर ली गई। जिन युवाओं ने ऑनलाइन फॉर्म भरा था और जो पैसे नहीं दे सके उन्हें ना तो इंटरव्यू के लिए बुलाया गया और ना ही उन्हें कोई जानकारी दी गई ऊपर से रजिस्ट्रेशन के नाम पर धन उगाही कर ली गई।

प्रदर्शनकारियों ने आज प्रदर्शन के माध्यम से मांग किया है कि पारदर्शी ढंग से प्रचलित समाचार पत्रों में पदनीय विज्ञप्ति प्रकाशित कराकर सेवायोजन पोर्टल के माध्यम से नियुक्तियां सुनिश्चित की जाएं और उत्तर प्रदेश शासन के व्यवस्था के क्रम में तथा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन द्वारा दी गई व्यवस्था के क्रम में अनिवार्य रूप से आरक्षण को लागू किया जाए। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि 15 दिन के अंदर मांगे मानते हुए कार्यवाही नहीं की गई तो ऊर्जा विभाग के मुख्यालय शक्ति भवन लखनऊ और विधान भवन पर प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व आरडी यादव कर रहे थे। प्रदर्शनकारियों में प्रमुख रूप से राघवेंद्र मणि, राम शंकर मौर्य, नवीन कुमार सरोज, आशीष कुमार सरोज, अजीत सरोज, अशर्फीलाल, राजकुमार चैरसिया, वीरेंद्र सरोज, रमण कुमार गौतम, पवन कुमार, सचिन कुमार हरिजन, बृजेश कुमार गौतम, दीपक गौतम, कैलाश कुमार, जितेंद्र कुमार भारती, अशोक कुमार वर्मा, कैलाश कुमार, शुभम सिंह, दीपक कुमार आदि प्रमुख रहे।

पर्यावरण संरक्षण को लेकर चेयरपर्सन ने दिलाया सामूहिक संकल्प, हुआ पौधरोपण

लालगंज, प्रतापगढ़। पर्यावरण संरक्षण को लेकर नगर पंचायत के नवीन कार्यालय भवन परिसर में पौधरोपण के साथ सामूहिक प्रतिज्ञान किया गया। नगर पंचायत अध्यक्ष अनीता द्विवेदी के द्वारा सभासदों व नपं कर्मचारियों के साथ परिसर में छाया देने वाले दर्जन भर पौधों को रोपित किया गया। इसके बाद नगर पंचायत कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय ध्वज के समक्ष कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने चेयरपर्सन अनीता द्विवेदी की अगुवाई में पर्यावरण की सुरक्षा का सामूहिक संकल्प ग्रहण किया। कार्यक्रम का संयोजन ईओ पदमजा मिश्रा व संचालन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी ने किया। इस मौके पर सभासद पन्ने लाल पाल, आशीष कौशल, शेरू खान, संजय सिंह, दारा सिंह, मो. मोकीम, सोनू शुक्ला, राममिलन, अरविंद कुमार मिश्र, अनिकेत दुबे, विकास तिवारी, रवि मिश्र, अखिलेश सिंह, शास्त्री सौरभ, मुन्ना सिंह आदि रहे। इसी क्रम में लालगंज क्षेत्र के पूरे तिलकराम स्थित प्राथमिक विद्यालय में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण व लोकप्रिय जनहित सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में विश्व पर्यावरण दिवस को लेकर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पीएलवी अधिवक्ता निरंजन प्रकाश तिवारी ने प्रकृति की संरक्षा के लिए ग्रामीणों को पौधरोपण के प्रति प्रेरित किया। इस मौके पर प्रमोद सरोज, शिखा सरोज, गीता, सीता, निर्मला, शबनम, मोना, अखिलेश आदि रहे। कार्यक्रम का समापन सिविल जज अरविंद सिंह के निर्देशन में सामूहिक पौधरोपण से हुआ।

मोदी सरकार की ढुलमुल नीति से अर्थव्यवस्था व सुरक्षा के हालात चिंतनीयः प्रमोद तिवारी

राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता ने कैम्प कार्यालय पर की जनसुनवाई

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने मोदी सरकार पर घरेलू तथा वैदेशिक मोर्चे पर कमजोर इच्छाशक्ति के कारण सुरक्षा के मुद्दे पर पूरी तरह असफलता को लेकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि केन्द्र की मौजूदा भाजपा सरकार इस समय आंतरिक सुरक्षा को लेकर भी लापरवाह बनी हुई है।

उन्होंने कहा कि देश के संवेदनशील सीमावर्ती राज्यों मणिपुर तथा आसाम व नागालैण्ड सीमा विवाद के कारण रोज हो

लालगंज कैम्प कार्यालय पर जनसमस्याओं की सुनवाई करते सांसद प्रमोद तिवारी।

रही उग्रवादी हिंसक घटनाएं चिंताजनक है। श्री तिवारी ने कहा कि कश्मीर में सुरक्षाबलों के जवानों की हो रही मौतों व वहां आम नागरिकों पर भी प्रायोजित आतंकवाद से जुड़े हिंसक हमलों को लेकर मोदी सरकार बेबस दिखी जा रही है। बुधवार को प्रतापगढ़ के एक दिवसीय दौरे पर लालगंज पहुंचे प्रमोद तिवारी ने मीडिया से रूबरू होते हुए मोदी सरकार पर राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हालात को काबू से बाहर बताते हुए तीखे हमले बोले। इसके पूर्व सांसद प्रमोद तिवारी ने कैम्प कार्यालय पर कार्यकताओं से मुलाकात की। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा संचालित करायी जा रही विकास योजनाओं में योगदान जारी रखने को कहा। कैम्प कार्यालय पर उन्होंने जनसमस्याओं की भी सुनवाई करते हुए निराकरण को लेकर सम्बन्धित अफसरों से फोनिक वार्ता की। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह बब्लू, लालगंज प्रमुख इं. अमित सिंह, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, आशीष उपाध्याय, जिपंस अरविंद सिंह, सुधाकर पाण्डेय, प्रवीण मिश्र, केडी मिश्र, हगपाल यादव, आचार्य राजेश मिश्र, छोटे लाल सरोज, पप्पू तिवारी, सुरेन्द्र सिंह ददन, सत्येन्द्र सिंह, मुन्नन सिंह, रामबोध शुक्ल, शेरू खान, आशीष कौशल आदि रहे।

दो दुकान का ताला तोड़कर नगदी चोरी, हड़कंप

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे के टहलू नगर बाजिदपुर मे मंगलवार की बीती रात अज्ञात चोरो ने थाना क्षेत्र के पूरे धनऊ का पुरवा परियावां निवासी महेंद्र कुमार मौर्य की हार्डवेयर की दुकान मे व बगल में व जावेद पुत्र रईस अहमद बाजिदपुर निवासी बालवर की दुकान की शटर का ताला तोड़कर दुकान के अंदर गुल्लक मे रखा महेंद्र कुमार मौर्य का पंद्रह सौ रुपया व जावेद की दुकान के अंदर गुल्लक मे रखा तीन हजार रुपया चुरा ले गये। बुधवार की सुबह जब आस पास के लोगों की नजर दोनों के शटर पर पड़ी तो ताला टूटा देख हड़कंप मच गया और घटना की जानकारी दोनों दुकानदार को फोन से दी गई। जानकारी मिलते ही मौके पर महेंद्र व जावेद पहुँचे। अंदर गुल्लक मे पैसा देखा तो गायब था। घटना की तहरीर नवाबगंज पुलिस को दी पुलिस छानबीन में जुटी हुई है।

दुष्कर्म व पाक्सो एक्ट के दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल की कानून व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त बनाये रखने के लिये थाना संग्रामगढ़ के उप निरीक्षक हरेन्द्र सिंह अपने हमराही के साथ देखभाल व क्षेत्र चेकिंग,वांछित की तलाश में वारण्टी अभियुक्त थाना संग्रामगढ़ के मु0अ0सं0 80/2023 धारा 363, 366, 376डी भादवि व 5जी/6 पाक्सो एक्ट व 3(2)5ए, 3(2)5 एससी/एसटी एक्ट में वांछित अभियुक्त रोहित साहू पुत्र पारसनाथ साहू नि0ग्राम इब्राहिमगंज थाना नवाबगंज जनपद प्रतापगढ़ व फैयाजअली उर्फ वाटे पुत्र मोमताज अली नि0ग्राम कुंदनगंज थाना बछरावां जनपद रायबरेली को मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र संग्रामगढ़ के खनवारी तिराहा, पनिगों रोड़ के पास से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेज दिया।

खबर संक्षेप

एक सप्ताह पूर्व गुमशुदा युवक का गंगा नदी में उतराता मिला शव

कौशाम्बी एक सप्ताह पूर्व गुमशुदा युवक का गंगा नदी में उतराता हुआ शव मिलने से हड़कंप मच गया,सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के असदपुर गांव के गंगा कछार में सैनी कोतवाली क्षेत्र के गौसपुर निवासी सुरेश कुमार मौर्य का शव गंगा नदी में उतराता हुआ मिला है,ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे परिजनों ने मृतक की शिनाख्त की है। सुरेश मौर्य पिछले एक सप्ताह पूर्व अचानक गायब हो गए थे,परिजनो ने बहुत तलाश करने के बाद सैनी कोतवाली में गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया था। आज सुबह परिजनों को जानकारी हुई कि कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के असादपुर घाट पर एक शव उतरा रहा है।परिजनों ने घाट पर पहुंचकर शव की शिनाख्त कर पुलिस को सूचना दी सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई।वही शव मिलने के बाद से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

पिता पुत्र ने मिलकर बेटी के प्रेमी को उतारा था मौत के घाट

मृतक के साथ आई उसकी प्रेमिका और उसके दोस्त कहां हो गए गायब !

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र में एक सप्ताह पूर्व रोहित दुबे की हत्याकांड से पर्दा उठाते हुए पुलिस ने घटना का खुलासा कर आरोपी पिता-पुत्र को जेल भेज दिया है हालांकि साथ में आए उसकी प्रेमिका और उसके दोस्तों को पुलिस ने क्लीनचिट दे दी है घटनाक्रम के मुताबिक साहिबा पुत्री किशन लाल निवासी प्रयागराज का रोहित दुबे पुत्र दुबे लाल से प्रेम प्रसंग चल रहा था दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे इस बात की जानकारी उनके परिजनों को लग गई 30 मई को साहिबा अपने दोस्तों और प्रेमी रोहित दुबे के साथ घूमने निकले थे रोहित दुबे के साथ घूमने निकले उसकी प्रेमिका और साथियों ने 30 मई की रात में बेरहमी से हत्या कर लाश को संदीपन घाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज पुलिस चौकी के बस स्टैंड के पीछे मुजाहिदपुर के पास खेत में फेंक कर फरार हो गए पुलिस ने जानू उर्फ विश्वास पुत्र जयकिशन व जयकिशन पुत्र स्व0 भुल्लन निवासी बाकराबाद थाना पूरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर लिया है प्रेमिका और उसके साथ आएं दोस्तों को पुलिस क्लीन चिट देने के फिराक में लगी है प्रेम प्रसंग के इस हत्याकांड में पुलिस ने बाप बेटों को गिरफ्तार कर अदालत में पेश कर दिया है।

गिरफ्तार हत्या अभियुक्त

अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए बच्चों को दिये जा रहे प्रशिक्षण का सीडीओ ने किया निरीक्षण

कौशाम्बी। अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में बच्चों की तैयारी के लिए जनपद कौशाम्बी में 03 सेन्टर निर्धारित किये गये है। इन सेन्टरों पर बच्चों को प्रवेश परीक्षा के सम्बन्ध में अध्यापकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कौशाम्बी मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने एस0ए0वी0 इण्टर कॉलेज-सैनी एवं दुर्गा देवी इण्टर कॉलेज ओसा का निरीक्षण किया। उन्होंने बच्चों को प्रवेश परीक्षा के लिए आवश्यक जानकारी भी दी। मुख्य विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान मौके पर बच्चों को आवश्यक स्टेशनरी भी उपलब्ध करायी गयी। इन बच्चों को जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रवक्ता, अभ्युदय कोचिंग के शिक्षक, माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा के शिक्षकों द्वारा परीक्षा की तैयारियॉं करायी जा रही है। यह प्रशिक्षण तीन दिवस चलेंगा। बतादें कि अटल आवासीय विद्यालय में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के बच्चों एवं कोविड-19 के दौरान अनाथ हुए बच्चों के नामांकन के लिए प्रवेश परीक्षा दिनॉक 11 जून 2023 को आयोजित की जा रहीं है। प्रवेश परीक्षा के लिए जनपद में दुर्गा देवी इंटर कॉलेज ओसा, एस0ए0वी0 इंटर कॉलेज सैनी एवं लाल बहादुर इंटर कॉलेज चायल केन्द्र बनाये गये हैं।

न्यूज झरोखा

शराब पीकर बीच चौराहे पर उत्पात मचाता पुलिस विभाग का फालोवर

कौशाम्बी। पुलिस महकमे के पुलिस लाइन में सिपाहियों को भोजन बनाने वाला फॉलोवर शराब के नशे का आदी है वह शराब के नशे में पूरे दिन उत्पात बचाता है फॉलोवर के उत्पात से पुलिसकर्मी भी परेशान है लेकिन अफसरों से कहने का साहस नहीं कर पाते बुधवार की सुबह लगभग 11:00 बजे यह फॉलोवर नगर पालिका मंझनपुर के मंझनपुर कोतवाली अंतर्गत ओसा चौराहा के पास सड़क पर घंटों जमकर उत्पात मचाता रहा चौराहे के लोग फॉलोवर के उत्पात से परेशान रहे काफी देर तक शराब के नशे में सड़क पर यह फालोवर पीर पठान की बातें करते हुए पड़ा रहा जिससे मौके पर तमाशबीनों की भीड़ लग गई बताया जाता है कि बीते कई वर्षों से फालोवर ड्यूटी के दौरान भी शराब के नशे में रहता है और पुलिसकर्मियों को भोजन खिलाता है भोजन बनाने के दौरान भी फालोवर के नशे की चर्चा आम हो चुकी है आए दिन पुलिस अधिकारी पुलिस लाइन के भोजन व्यवस्था की जांच करने पहुंचते हैं लेकिन लगातार शराब का नशा करने वाले फॉलोवर के कारनामों की बात पुलिस अधिकारियों के संज्ञान में नहीं पहुंची है बीच सड़क पर शराब पीकर उत्पात मचाने वाले फालोवर के कारनामों को पुलिस अधिकारियों को गंभीरता से लेना होगा क्योंकि शराबी का कोई वजूद नहीं होता वह कुछ भी कर सकता है और यह पुलिसकर्मियों के भविष्य का सवाल है बताया जाता है कि बीच सड़क में शराब पीकर उत्पात मचाने वाला फालोवर ओमप्रकाश है।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा हुआ मैराथन कार्यक्रम का आयोजन

कौशाम्बी। जन शिक्षण संस्थान कौशांबी जनभागीदारी जी-20 के तहत संस्थान मुख्यालय पर मैराथन कार्यक्रम एवं रंगोली कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में जन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष देशराज जायसवाल ने मैराथन दौड़ को झंडी दिखाकर रवाना किया तथा रंगोली कार्यक्रम का अवलोकन किया इसके बाद जन शिक्षण संस्थान के निर्देशक राजकुमार पांडे ने दिनांक 1 जून 2023 से 15 जून 2023 तक जनभागीदारी जी-20 में कार्यक्रमों की रूपरेखा के बारे में बताया तथा अपने संबोधन में यह भी बताया कि जनभागीदारी जीवन का उद्देश्य क्या है तथा साथ ही साथ रंगोली कार्यक्रम का अवलोकन भी किया तथा इस कार्यक्रम में संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी संजय सिंह सहायक कार्यक्रम अधिकारी बृजेंद्र मिश्रा राजू शुक्ला रवि मिश्रा सुल्तान सूरज हिमांशु करिश्मा रूपा रूबी वैष्णवी स्नेहा पायल आदि लाभार्थी मौजूद रहे

सभासद की मांग पर अध्यक्ष ने तालाब की सुंदरीकरण का कराया कार्य शुरू

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका भरवारी के वार्ड 23 के सभासद मुन्नान ने तालाब के सौंदर्यीकरण कराए जाने की मांग रखी थी वार्ड नंबर 23 डॉ एपीजे अब्दुल कलाम स्थित कुल्ला तालाब की साफ सफाई के साथ सौंदर्यीकरण के लिए नगर पालिका परिषद की अध्यक्ष कविता पासी एवम अधिशासी आधिकारी शैलेंद्र मिश्रा द्वारा तालाब का निरीक्षण कर कार्यवाही के लिए मौके पर पहुंचकर विकास की गति को धार देते हुए तत्काल प्रभाव से कार्य करने का आदेश दिया

शॉर्ट सर्किट से लगी आग से लाखो का सामान जलकर राख

कौशाम्बी मैहर दर्शन कर वापस लौटे घर के लोगो ने गर्मी से बचने के लिए पंखा चलाया तो शॉर्ट सर्किट हो गया और आग लग गई,जब तक घर के लोग समझ पाते आग बढ़ती चली गई और घर में खड़ी दो बाइक सहित लाखो का सामान जलकर राख हो गया।सूचना पर पहुंची पुलिस और फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने आग पर काबू पाया।मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के नारा बलीपुर गांव की घटना है जहा के बड़का अपने परिवार के साथ मैहर दर्शन के लिए गए थे,मंगलवार की दोपहर जब वह वापस लौटे तो गर्मी अधिक थी,जिसके लिए उन्होंने पंखा चलाया,पंखा चलाते ही शॉर्ट सर्किट हो गया और आग लग गई,आग लगने से घर में हड़कंप मच गया और सभी लोग बाहर निकल आए,लोगो ने इसकी सूचना पुलिस और फायर ब्रिगेड को दी,सूचना अपर पहुंची पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया लेकिन तब तक घर पर खड़ी दो बाइक और लाखो का सामान जलकर राख हो गया।

हादसे में घायल महिला की इलाज के दौरान मौत

कौशांबी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र के उमरपुर ईट भट्टे पर ईट पाथने के लिए अपने पति के साथ आई महिला हादसे का शिकार हो गई थी इलाज के दौरान महिला की मौत हो गई है मौत होते ही परिवार में कोहराम मच गया है जानकारी के मुताबिक हरगोविंद पुत्र बारेलाल निवासी महाराजपुर थाना महाराजपुर जनपद छतरपुर अपनी पत्नी को साथ लेकर ईट भट्टे पर मजदूरी करने आए थे 07 मई को हरगोबिंद की पत्नी काजीपुर बाजार जा रही थी तभी देवेश हॉस्पिटल के पहले बाइक सवार ने महिला को टक्कर मार दिया घायल महिला को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई है पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है और आरोपी बाइक चालक की तलाश शुरू कर दी है।

दो प्रधानों के बीच खूनी संघर्ष आठ घायल

अखंड भारत संदेश

राजस्व चकबंदी के अफसरों की भूमिका भी सवालों के घेरे में

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के मलाक भारत गांव में बुधवार दोपहर को दो प्रधानों के बीच गैंगवार की घटना हुई है दोनों तरफ से एकत्रित लोगों ने एक दूसरे पर लाठी डंडा ईट पत्थर से हमला कर दिया दोनों तरफ से हमले देखते ही मौके पर अफरा-तफरी मच गई इस हमले में 8 लोग घायल हैं मामले की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा है जानकारी के मुताबिक राजस्व चकबंदी लेखपाल की टीम ग्राम सभा की जमीन को चिन्हित करने गये थे मौके पर वर्तमान ग्राम प्रधान प्रहलाद व पूर्व ग्राम प्रधान का लड़का हासिम पुत्र मो० आजम अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंच गए! जमीन की पैमाइस के दौरान दोनों पक्ष एक दूसरे के ऊपर आरोप लगा कर अपनी-अपनी जमीन बताते हुए गाली गलौज करते हुए आपस में भिड़ गए! दोनों पक्षों में लाठी डण्डा व ईंट पत्थर चलने लगे ! दोनों तरफ से चार - चार लोग घायल हो गए! दोनों पक्ष एक दूसरे के विरुद्ध चार - चार लोगों के विरुद्ध तहरीर दी! दोनों पक्षों की तहरीर पर गम्भीर धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर पुलिस ने घायलों को इलाज हेतु अस्पताल भेजा है इस घटना के बाद दोनों पक्ष के बीच खूनी तलवारे खींची है और कभी भी बड़ी घटनाओं को अंजाम दिया जा सकता है।

गैंगेस्टर एक्ट के अभियुक्त की चार पहिया वाहन कुर्क

कौशाम्बी मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट के अभियुक्त का वाहन सीज कर लिया है बताया जाता है कि अवैध ओवरलोड बालू के वाहनों को पास कराने का कार्य करता है शासन की मंशा के अनुरूप पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध वर्तमान में चलाये जा रहे विशेष अभियान के अन्तर्गत थाना पश्चिम शरीरा पर पंजीकृत मुकदमा उत्तर प्रदेश गैंगस्टर एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त मो० गुफरान पुत्र इस्तखार निवासी महमदपुर थाना कोखराज द्वारा अपराधिक कृत्य से अर्जित की गयी सम्पत्ति से खरीदी गयी एक अदद चार पहिया वाहन वश-300 नम्बर वढ 73 श 3549 (अनुमानित कीमत 10,00,000/- रूपया को न्यायालय जिला मजिस्ट्रेट कौशाम्बी के आदेश के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर मय फोर्स द्वारा नियमानुसार अभियुक्त उपरोक्त की संपत्ति को धारा 14(1) गैंगस्टर एक्ट के तहत कुर्की की कार्यवाही अमल में लायी गयी उपरोक्त अपराधी जो अपने तथा हितैषियों के दुनियाबी आर्थिक, भौतिक लाभ हेतु अवैध बालू के ट्रकों को पास कराकर धन अर्जित करता था।

कौशाम्बी के सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र में 06 जून से 31 जुलाई 2023 तक धारा-144 लागू

कौशाम्बी जिला मजिस्ट्रेट सुजीत कुमार ने अवगत कराया है कि जनपद कौशाम्बी, शान्ति-व्यवस्था की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील है। संचालित उवएळ (वत्रः)/(ढत्रः)-2023 प्रवेश परीक्षा 07, 08 जून 2023 व बी0एड0 पाठ्यक्रम शैक्षिक सत्र 2023-2025 प्रवेश परीक्षा दिनांक 15.06.2023 एवं दिनांक 29.06.2023 को ईदुज्जहा (बकरीद) तथा दिनांक 29.07.2023 को मोहर्रम पर्व को सकुशल व सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराया जाना है। आसन्न राजनैतिक गतिविधियों के चलते यह आशंका है कि ऐसे अवसरों पर कतिपय साम्प्रदायिक, असामाजिक, गिरोह-बन्द एवं शरारती तत्व किसी भी स्थान पर किसी भी समय छोटी-छोटी घटनाओ को लेकर साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने का कुत्सित प्रयास कर सकतें हैं, जिसके चलते लोक परिशान्ति एवं लोक व्यवस्था सहित विधि व्यवस्था एवं जनसुरक्षा प्रभावित हो सकती हैं। जिला मजिस्ट्रेट ने दण्ड प्रक्रिया संहिता-1973 की धारा-144 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जन जीवन एवं लोक सम्पत्ति की हानि, हिंसा व बल्बा आदि के नियंत्रण/निवारण एवं जनपद के सम्पूर्ण सीमा क्षेत्र में विधि व्यवस्था व लोक परिशान्ति सहित लोक व्यवस्था व जनसुरक्षा कायम करने तथा कोविड-19 (कोरोना वायरस) के नये वेरियन्ट (ओमिक्रान) के संक्रमण को जनमानस में फैलने से रोकने तथा बचाव के उद्देश्य से दिनांक 06 जून 2023 से दिनांक 31 जुलाई 2023 तक निषेधाज्ञा जारी किया है जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि सामान्य परिस्थितियों को छोड़कर जनपद कौशाम्बी के सीमा क्षेत्र में किसी भी स्थल पर 05 या 05 से अधिक व्यक्ति/व्यक्तियों का समूह, जिनके क्रिया-कलापों से लोक/शान्ति व्यवस्था एवं जनसुरक्षा प्रभावित हो, एकत्रित नहीं होंगे, परन्तु यह प्रतिबन्ध शव-यात्रा, बारात या विवाह आदि समारोह पर लागू नहीं होगा। कोई भी व्यक्ति अपने पास लाठी, डण्डा, बॉस, बल्लम या किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र तथा आग्नेयास्त्र (फायर आर्म्स), धारदार हथियार या कुंद वस्तुएं, जिन्हें फेंककर प्रहार किया जा सकता है, लेकर न चलेगा और न ही एकत्रित करेगा, यह प्रतिबन्ध ड्यूटी पर तैनात पुलिस, पी0ए0सी0, पी0आर0डी0 एवं होमगार्डस तथा सरकारी कर्मचारियों, रोगियों, अपंग व्यक्तियों पर, जो सहारें के लिए लाठी, डण्डा का प्रयोग करते हैं, लागू नहीं होगा।

शराब के साथ सात अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एंव अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध विभिन्न थानों द्वारा सात अभियुक्तों को गिरफ्तार कर कब्जे से 110 लीटर अवैध शराब बरामद कर अभियुक्तों का चालान न्यायालय कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना मंझनपुर पुलिस द्वारा अभियुक्त राजेन्द्र सिंह पुत्र स्व0 राम सिंह निवासी बडोला थाना मंझनपुर को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना मोहब्बतपुर पइसा पुलिस द्वारा अभियुक्त सोहन लाल पुत्र विश्राम निवासी जलालपुर वारी थाना मोहब्बतपुर पहंसा जनपद कौशाम्बी को 12 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना चरवा पुलिस द्वारा अभियुक्त रामराज पुत्र ललई निवासी रसूलपुर थाना चरवा को 08 लीटर अवैध कच्ची शराब व शिवशंकर पुत्र बचन निवासी रैया देह माफी थाना चरवा को 07 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कड़ाधाम पुलिस द्वारा अभियुक्त अंगद पासी पुत्र रामऔतार निवासी अलीपुर जीता थाना कड़ाधाम को 20 लीटर अवैध कच्ची शराब व विमला देवी पत्नी शिवरतन निवासी सौरई बुजुर्ग थाना कड़ाधाम को 40 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कौशाम्बी पुलिस द्वारा अभियुक्त शिवबोधन सरोज पुत्र स्व0 मधई सरोज निवासी पल्टूपुर थाना कौशाम्बी को 40 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता का चालान न्यायालय कर दिया है।

ग्राम पंचायत कोसम इनाम में सीडीओ ने लगाई रात्रि चौपाल

अखंड भारत संदेश

बारा कौशाम्बी। विकास खंड कौशाम्बी के कोसम इनाम ग्राम पंचायत में मुख्य विकास अधिकारी रवि प्रकाश त्रिवेदी ने जनता दरबार के साथ रात्रि चौपाल लगा कर केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा चल रही योजनाओं जैसे प्रधान मंत्री जन-धन योजना (पीएमजेडीवाई), जन-धन से जन सुरक्षा, पत्र योजना,उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन,मुख्यमंत्री किसान एवं सर्वहित बीमा योजना,यूपी एफ आई आर स्टेटस,उत्तर प्रदेश एवं शीला उत्पाद योजना,दिव्यांगजन शादी विवाह प्रोत्साहन योजना,उत्तर प्रदेश कौशल सतरंगी योजना यूपी ग्रामोद्योग रोजगार योजना उत्तर प्रदेश विधवा पेंशन योजना यूपी परिवार रजिस्टर उत्तर प्रदेश सप्लाई मित्र योगी योजना में आवेदन की प्रक्रिया,वृद्धावस्था पेंशन योजना विधवा पेंशन योजना विकलांग पेंशन योजना सहित विभिन्न योजनाओं के बारे में जानता को बताए, उनके साथ मौजूद सभी अधिकारयों ने अपने अपने विभाग की योजनाओं को विस्तार पूर्वक जानकारी दिया और जनता से सीधे सवाल और समस्याओं से वार्ता के माध्यम से उनकी समस्याओं को जानने और निस्तारण का प्रयास किया अधिकारियों के बीच में डिपियो ने अपने विभाग के बारे में विस्तार पूर्वक जनता को बताया उसके बाद डीपीओ अपने विभाग के आंगनबाड़ी से अपना परिचय पूछा वहां मौजूद विभाग के लोग ही नही पहचान सके उसके बाद जिला पूर्ति अधिकारी के सप्लाई इस्पेक्टर सत्रुघ्न सिंह ने पूछा की समय समय पर राशन मिला रहा है की नही वही कोसम इनाम के नौहाई की सुग्गी देवी ने बताया की मेरे लड़के का नाम राशन कार्ड में नही जुड़ा कई बार विभाग के कार्यालय का चक्कर लगा चुकीं हूं इसी प्रकार बारी बारी से सभी अधिकारियों ने अपने अपने विभाग के योजनाओं को बताया और जनता की समस्या सुना एवं अधीनस्थों को समय से समस्याओं का निस्तारण का आदेश दिया ।रात्रि चौपाल के बाद लोक निर्माण विभाग के गेस्ट हाउस में रात्रि विश्राम भी करेंगे चौपाल में ग्राम प्रधान कोसम इनाम की फूला यादव,प्रधान प्रतिनिधि शिवपूजन यादव, खंड विकास अधिकारी प्रवीण कुमार, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रकाश सिंह, एबीएसए बृजेश सिंह, रोजगार सेवक अशोक कुमार पाल, ग्राम विकास अधिकारी सत्य प्रकाश द्विवेदी, जितेंद्र कुमार शुक्ल, सह विकास अधिकारी, समाज कल्याण अधिकारी, सफाई कर्मी अध्यक्ष राम लखन, ब्लाक सभी विभाग के कर्मचारी सहित ग्राम पंचायत की जनता, अनिल कुमार श्रीवास्तव, अशोक कुमार, मिथलेश, कोसम इनाम कोटेदार कौशल्या देवी, दूधनाथ निषाद गंगा निषाद, तीरथ निषाद मदन मोहन तिवारी राजू केशरवानी, रोहित यादव, मोहित यादव, शकूर बाबा, गुड्डू आंगनबाड़ी, बीपीएमसी लक्ष्मण गुप्ता, आशाबहु रवि प्रकाश सिंह ग्राम विकास अधिकारी बेरुई मौजूद रहे।

आखिर सैकड़ों ओवरलोड वाहन निकल जाने के बाद....

एक वाहन को दौड़ाकर पकड़ने के बाद वाहवाही लूट रही यातायात और महेवाघाट पुलिस !

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। महेवा घाट थाना क्षेत्र से प्रतिदिन सैकड़ों ओवरलोड वाहन अवैध ओवरलोड बालू गिट्टी के साथ निकलते हैं लेकिन महेवाघाट थाना पुलिस और यातायात पुलिस कुछ वाहनों को छोड़कर पुलिस किसी ओवरलोड वाहन को रोककर जांच करने का प्रयास नहीं करती मंगलवार की दोपहर में एक वाहन को सिपाहियों ने अढौली पेट्रोल पंप के पास रोकने का प्रयास किया लेकिन पुलिस से बचकर वाहन चालक भागने लगा जिस पर ट्रैफिक पुलिस के सिपाहियों ने कुछ दूर दौड़ा लिया कुछ समय बाद ओवरलोड वाहन को यातायात पुलिस ने रोक लिया बताया जाता है कि इस वाहन में बोल्डर गिट्टी लदी हुई थी जो ओवरलोड थी यातायात पुलिस ने उसे कब्जे में लेकर कार्रवाई कर दी है लेकिन सवाल उठता है कि पूरे दिन बालू के वाहन सड़कों पर दौड़ते हैं और यातायात पुलिस से लेकर महेवाघाट पुलिस सब कुछ देखते हुए रोकने का प्रयास नहीं करती है ओवरलोड वाहनों से वसूली का आरोप भी यातायात पुलिस और महेवा घाट थाना पुलिस पर लगातार लग रहा है जबकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अवैध वसूली पर रोक लगाने का फरमान दिया है लेकिन मुख्यमंत्री का आदेश कौशांबी में लागू होता नहीं दिख रहा है बल्कि उनके आदेश के विपरीत वसूली करने के लिए वाहन चालकों का शोषण किया जा रहा है पूरे जिले के विभिन्न सड़कों पर अनगिनत वाहन प्रतिदिन सड़को पर बेखौफ दौड़ते हैं जो यातायात पुलिस से लेकर महेवा घाट थाना पुलिस को दिखाई नहीं पड़ते हैं या फिर जानबूझ नजरअंदाज करते हैं यह जांच का विषय है आखिर एक वाहन जो गिट्टी लेकर बाहर से आ रहा था क्या इस वाहन से यातायात पुलिस को महीनों की बंधी हुई रकम नहीं मिलती है जिससे वाहन को पुलिस ने रोककर कार्यवाही कर वाहवाही लूटना शुरू कर दिया है यातायात पुलिस का यह कारनामा चर्चा का विषय बना हुआ है पुलिस अधिकारियों को यातायात पुलिस की इस कार्यवाही को संज्ञान लेते हुए यह देखना होगा कि एक वाहन पर कार्यवाही करने वाली पुलिस अन्य वाहनों पर क्यों कार्यवाही नही कर रही है इसके पीछे यातायात पुलिस और महेवाघाट पुलिस की क्या मंशा है पुलिस अधिकारियों ने यातायात पुलिस के कारनामों की जांच कराई तो महेवा घाट थाना पुलिस और यातायात पुलिस की अवैध वसूली के खेल का भंडाफोड़ होना तय है।

अवैध वसूली पर रोक लगाने का मुख्यमंत्री का आदेश कौशांबी में बेअसर

दुष्कर्म के अभियुक्त को 20 वर्ष सश्रम कारावास की सजा

कौशाम्बी। थाना सैनी अंतर्गत 07.06.2020 को नाबालिग पीड़िता के साथ दुष्कर्म के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मुकदमा पॉक्सो एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त सुमित यादव पुत्र राजेश यादव निवासी शाखा बरीपुर थाना सैनी को न्यायालय एडीजे-09 द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्त को सजा दिलाने के क्रम में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से 20 वर्ष कठोर कारावास तथा 12 हजार 500 रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया तथा अर्थ दण्ड न अदा करने पर 09 माह के अतिरिक्त कारावास की सजा सुनाई गयी।

दुष्कर्म का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त गोरेलाल पुत्र बिन्देश्वरी प्रसाद निवासी काजीपुर थाना सैनी को टेडीमोड़ के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कौशाम्बी में गिरवी हुआ योगी सरकार का बुलडोजर

अखंड भारत संदेश

सरकारी संपत्ति सड़क चकरोड तालाब पर हो रहे अवैध कब्जे को रोकने के लिए गंभीर नहीं है थाना से लेकर तहसील के अधिकारी

आम जनता सरकारी संपत्ति को बचाने के लिए कर रही फरियाद आला अधिकारी नहीं हो रहे गंभीर

कौशाम्बी। योगी सरकार के बुलडोजर की गर्जना से पूरे प्रदेश के भूमाफिया भयाक्रांत है लेकिन कौशांबी के भू माफिया सरकारी जमीन सड़क चकमार्ग तालाब बंजर ऊसर शत्रु संपत्ति पर बेखौफ तरीके से कब्जा कर रहे हैं लेकिन योगी सरकार का बुलडोजर कौशांबी में चलता नहीं दिख रहा है अब लगता है कि योगी सरकार का बुलडोजर कौशाम्बी में गिरवी हो चुका है जिससे भू माफियाओं के अवैध कब्जे पर योगी का बुलडोजर चलता नहीं दिख रहा है आए दिन सोशल मीडिया से लेकर अधिकारियों की चौखट तक सरकारी संपत्तियों में अवैध कब्जे की शिकायत कर आम जनता सरकारी संपत्तियों को खाली कराने की फरियाद आला अधिकारियों से कर रही है लेकिन आम जनता की फरियाद के बाद भी सरकारी जमीन बंजर ऊसर तालाब मरघट कब्रिस्तान और चकरोड सड़क पर आम रास्ता पर हुए कब्जे को खाली कराने के लिए आला अधिकारी बुलडोजर लेकर नहीं पहुंच रहे हैं जिससे भू माफिया बेखौफ हैं सवाल उठता है कि योगी सरकार ने डीएम एसपी को स्पष्ट शब्दों में निर्देश दिया है कि सरकारी संपत्ति के कब्जे को तत्काल हटाया जाए लेकिन उसके बाद भी सरकारी संपत्तियों के अवैध कब्जे नहीं हटाए जा रहे हैं बल्कि मामले में शिकायत मिलने के बाद थाना और तहसील अधिकारी आला अधिकारियों को गुमराह कर माफियाओं का मनोबल बढ़ा रहे हैं जनपद मुख्यालय मंझनपुर में दर्जनों स्थान पर सरकारी जमीनों में अवैध कब्जे हैं मंझनपुर कोतवाली के सामने देखते-देखते करोड़ों की सरकारी जमीन पर आलीशान भवन बन गया लेकिन योगी का बुलडोजर लेकर कोतवाल और तहसीलदार नहीं पहुंच सके हैं मंझनपुर कोतवाली के फरीदपुर गौरा गांव में प्रियंका यादव के घर के सामने आरसीसी सड़क के ऊपर माफियाओं ने निर्माण कर लिया प्रियंका यादव सरकारी सड़क के ऊपर हो रहे निर्माण को हटाने की फरियाद करती नहीं लेकिन उन पर तरह-तरह के आरोप लगाकर मंझनपुर कोतवाली पुलिस आला अधिकारियों को गुमराह करती रही लेकिन सड़क पर किए गए अवैध कब्जे को मंझनपुर कोतवाली से लेकर तहसील मंझनपुर के अधिकारी खाली नहीं करा सके हैं जिससे आम जनता अब कहने लगी है कि कौशांबी में योगी सरकार का बुलडोजर गिरवी हो चुका है।

संपादकीय

क्या हाथ खींच रही है सरकार

आम तौर पर किसानों के गेहूं में टूटे या गीले दानों की मात्रा 6 फीसदी तक होने पर ही उसकी खरीद सरकारी केंद्रों पर होती थी। इस बार यह सीमा सीधे 18 फीसदी कर दी गई है जबकि गेहूं की कटनी के समय फसल के भींगने और बर्बाद होने की खबर बहुत कम है। बल्कि इस बार फसल रहते हुई बरसात से जब काफी फसल गिर गई थी तब बबार्दी का अंदेशा जताया जा रहा था।

पहली जून को उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के रिलीज में जब सरकार की तरफ से 30 मई तक गेहूं की 2.62 करोड़ टन अर्थात पिछले साल के 1.88 करोड़ टन से काफी अधिक खरीद की सूचना दी गई तो सभी आर्थिक ही नहीं सामान्य अखबारों ने भी इस खबर को प्रमुखता से छापा। टीवी वालों के लिए ऐसी खबर शायद खबर ही नहीं होती। इसी रिलीज में यह सूचना भी थी कि आनलाइन खरीद से 21 लाख किसानों के खाते में 47000 करोड़ रुपए पहुंच गए हैं।

निश्चित रूप से ये दोनों सूचनाएं महत्वपूर्ण हैं और इनको प्रमुख जगह मिलनी चाहिए थी। पर किसी भी अखबार ने यह समझने की कोशिश नहीं की कि अगर गेहूं उत्पादन और खरीद की स्थिति इतनी अच्छी है तो गेहूं की खुले बाजार की कीमतों में बेमौसम तेजी क्यों दिख रही है। मई के महीने में गेहूं की कीमतें हर साल गिरती ही हैं, चढ़ती नहीं। फिर यह समझने का प्रयास भी नहीं किया गया कि इसी समय चावल की कीमतों में तेजी क्यों दिखने लगी है जबकि पिछले साल फसल अच्छी हुई है और सरकार भी टूटे चावलों समेत लगभग हर किस्म के चावल के निर्यात पर सख्ती जारी रखे हुई है। साल भर में चावल के दाम औसत आठ फीसदी बढ़े हैं।

और धीरज रखें। इस आलेख का मतलब खाद्यान्न संकट या महंगाई के एक और दौर की सूचना देकर आपको आतंकित करना नहीं है। ऐसा हुआ तो सरकार बख्शने वाली नहीं है। उसने गेहूं के निर्यात में भी अभी कोई ढील नहीं दी है जबकि यूक्रेन संकट के बाद पहली बार खुले बाजार में हमारे गेहूं की कीमतें निर्यात लायक बन गई थीं। सरकार की मुस्तैदी में महंगाई की चिंता या आम उपभोक्ता की चिंता न हों यह कहना मुश्किल है लेकिन वह जरूर अगले साल होने वाले चुनाव को लेकर ज्यादा चिंतित है। इसलिए जैसे ही कीमतों में ऊपर-नीचे होता है वह सख्त हो जाती है। संभव है खाद्य तेलों में वैश्विक गिरावट के बाद अपने यहां भी कीमतें कम हों। दलहन में फर्क पड़ा है। हालांकि मामला सिर्फ चना दाल का ही है। अरहर और उड़द अभी भी परेशानी का कारण हैं। दूसरी ओर वह ऐसे आंकड़े खास तौर से प्रचारित करती है जो अर्थव्यवस्था और खास तौर से खेती की तस्वीर बहुत सुनहरी बताते हैं। पिछले साल की गड़बड़ मानसून और फिर बिन मौसम बरसात से बरबाद हुई फसलों के चलते अन्न उत्पादन, खासकर गेहूं के उत्पादन में गिरावट आई लेकिन जब सरकार ने दस तिमाही आंकड़ों में खेती में 4.6 फीसदी के विकास का दावा किया तो काफी लोगों की भौंहें तनी थीं।

इस बार भी गेहूं के उत्पादन और खरीद को लेकर जिस तरह से आंकड़े दिए गए हैं उस पर भी उंगली उठ रही है। आम तौर पर किसानों के गेहूं में टूटे या गीले दानों की मात्रा 6 फीसदी तक होने पर ही उसकी खरीद सरकारी केंद्रों पर होती थी। इस बार यह सीमा सीधे 18 फीसदी कर दी गई है जबकि गेहूं की कटनी के समय फसल के भींगने और बर्बाद होने की खबर बहुत कम है।

बल्कि इस बार फसल रहते हुई बरसात से जब काफी फसल गिर गई थी तब बबार्दी का अंदेशा जताया जा रहा था। लेकिन फसल काटने और दाने निकालने के बाद यह आशंका निर्मूल साबित हुई। पिछले साल फसल कुछ कम हुई लेकिन खराब दाने वाले नियम और खुले बाजार में गेहूं की ऊंची कीमतों के चलते सरकारी खरीद काफी काम हुई थी-2007 के बाद इतनी कम खरीद नहीं हुई थी। कम खरीद के चलते सरकारी भंडार में भी गेहूं कम रहा। और कोढ़ में खाज की तरह यह भी हुआ कि जब यूक्रेन से आपूर्ति न होने की सूरत में आटा-गेहू का भाव बढ़ने की उम्मीद से आढ़तियों ने काफी गेहूं खरीदा और सीजन बीतने पर दाम बढ़ाना शुरू किया तो कीमतों को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने अपने स्टाक से गेहूं बाजार में निकाला। कीमतों के मामले में इसका लाभ भी हुआ।

जैसा पहले कहा गया है, सरकारी चिंता का एक कारण चुनाव का पास होना था। फिर उसे कोरोना काल वाली मुफ्त राशन योजना से भी बाहर निकलना था क्योंकि वह गले में फांस बनता जा रहा था। लेकिन उससे बड़े कारण की कोई चर्चा नहीं हुई जबकि साल भर से ज्यादा चले किसान आंदोलन और सरकार द्वारा तीनों विवादास्पद कानून वापस लेने के समय सरकार की सोच पर काफी चर्चा होती रही थी। बड़ा कारण यह है कि सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली और अनाज की सरकारी खरीद योजना से ही बाहर आना चाहती है। और विश्व बैंक-आईएमएफ जैसी संस्थाओं की यह सलाह भूमंडलीकरण अभियान की शुरूआत से पहले का है। सलाह ही नहीं उनका दबाव भी रहा है। और इसके चलते हमारे यहां बनी-बनाई दलहन और तेलहन विकास योजनाओं को जब सरकार ने ठंडे बस्ते में डाला था तब कुलदीप नैयर द्वारा दी गई इस सूचना पर काफी हंगामा मचा था। आज हम सब दलहन का संकट बार-बार झेल रहे हैं जबकि खाद्य तेल का आयात बिल पेट्रोलियम के बाद दूसरे नंबर पर बना हुआ है। सरकार अगर चुनाव की चिंता से इतनी मुस्तैद है तो उसे बड़ी बातों का पता न होगा यह मानना बेवकूफी होगी। पिछले ही साल जब फसल खराब होने के नाम पर सरकारी खरीद में सुस्ती बरती गई, और यूक्रेन के नाम पर बाजार की सक्रियता बढ़ी तो सरकार के खाते में 76000 करोड़ रुपए बचाने का अनुमान है। खरीद और रख-रखाव का बजट 1.32 लाख करोड़ का था और खर्च हुए मात्र 55973 करोड़ रुपए। खरीद भी मात्र 1.88 करोड़ टन की हुई जिसके चलते गेहूं का स्टाक 5.25 करोड़ टन से गिरकर तीन करोड़ टन के आसपास आ गया। यह सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के लिए तो कम न था लेकिन कीमतें घटाने के लिए सरकार द्वारा बाजार में गेहूं उतारने की स्थिति के लिए कम था। इसलिए निर्यात आयात के मामले में बेवजह सख्ती हुई।

नेपाल के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा लाई संबंधों में और नजदीकी

– अरुण कुमार श्रीवास्तव

अन्य देशों में दौरा करने के लिए सबसे पहले भारत को चुनकर, नेपाल के प्रधानमंत्री ने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा निर्धारित मानदंडों का पालन किया है। उन्होंने अपनी राजनीतिक विचारधारा को भारत के साथ संबंधों में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। इससे पता चलता है कि वह लोक लुभावनवाद पर व्यावहारिकता को चुन रहे हैं। नेपाल की संसद के लगभग आधे सदस्य, जो विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों से आते हैं।

अपनी चार दिवसीय भारत यात्रा के दौरान नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल ने भारतीय नेतृत्व के साथ औपचारिक जुड़ाव पूरा किया और रुचि के स्थानों का दौरा किया। भारत के साथ नेपाल के पारंपरिक संबंधों से जुड़े महत्व को देखते हुए, दहल की भारत यात्रा को भारत और नेपाल में बारीकी से देखा और विश्लेषित किया जाना तय है, और दोनों पक्षों के राजनीतिक नेता इस बात से पूरी तरह वाकिफ हैं।

इसे देखते हुए, भारतीय और नेपाली प्रतिनिधि मंडलों ने अनुमानों के लिए शायद ही कोई गुंजाईश छोड़ी है। जलविद्युत और कनेक्टिविटी से संबंधित समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गये और उनका आदान-प्रदान किया गया। ऐसा लगता है कि पूरी यात्रा दोनों पक्षों की एक दूसरे से अपेक्षाओं को कम करने के लिए डिजाइन की गई थी। हालांकि, इस तरह के उपाय रिश्तों को व्यावहारिक धरातल पर लाने में बहुत मदद करते हैं।

अन्य देशों में दौरा करने के लिए सबसे पहले भारत को चुनकर, नेपाल के प्रधानमंत्री ने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा निर्धारित मानदंडों का पालन किया है। उन्होंने अपनी राजनीतिक विचारधारा को भारत के साथ संबंधों में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। इससे पता चलता है कि वह लोक लुभावनवाद पर व्यावहारिकता को चुन रहे हैं।

नेपाल की संसद के लगभग आधे सदस्य, जो विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों से आते हैं, इस दौरान देश में मौजूद रहे। कम्युनिस्ट नेताओं में दहल शायद सबसे बड़े हैं। नेपाल के प्रधानमंत्री दहल की यात्रा दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे विविध संबंधों को और मजबूत प्रदान करेगी, आपसी सम्मान, सहयोग और समान संप्रभुता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर जोर देगी।

भारत और नेपाल का सदियों से धर्म, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राजनीति पर आधारित गहरा संबंध है। दोनों देशों के बीच साझा सीमा ने अप्रतिबंधित आंदोलन की सुविधा प्रदान की है, जिससे दोनों देशों के लोगों को विवाह और पारिवारिक संबंधों के माध्यम से संबंध बनाने की अनुमति मिलती है।

जहां एक ओर भारत के भू-राजनीतिक और सुरक्षा विचारों में नेपाल का अत्यधिक सामरिक महत्व है, वहीं भारत ने हमेशा संकीर्ण दृष्टिकोण से परे नेपाल के साथ अपने संबंधों का रुख किया है। एक रणनीतिक नोट पर, नेपाल के साथ भारत के लोगों से संबंध में अल्पकालिक सैन्य सेवाओं की अग्निपथ योजना को अपनाने के बाद एक महत्वपूर्ण गिरावट देखी गयी है, जिसमें भारतीय सेना में गोरखा भर्ती शामिल नहीं है। भारतीय सेना में छह गोरखा बटालियन हैं, और उनके पास कुल मिलाकर लगभग 40,000 सैनिक हैं। इनमें से करीब 12,000 नेपाली मूल के गोरखा हैं। इसके अलावा, नेपाल में लगभग 120,000 गोरखा भारतीय सेना पेंशनभोगी हैं। अग्निपथ से पहले हर साल करीब 1000 गोरखा सैनिकों को भारतीय सेना में भर्ती किया जाता था। हालांकि, अग्निपथ के लागू होने से 1947 से चली आ रही यह योजना व्यावहारिक रूप से ठप पड़ी है।

भारत का लक्ष्य रामायण और बुद्ध सर्किट ट्रेन कनेक्टिविटी के माध्यम से लोगों के बीच बढ़ते संबंधों के माध्यम से रिश्तों में आई गिरावट की भरपाई करना है। नेपाल के साथ भारत का जुड़ाव वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है) के सिद्धांतों और सबसे पहले पड़ोसी की नीति से निर्देशित है।

भारत का प्राथमिक उद्देश्य अवसंरचना विकास के लिए सहायता और अनुदान, सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देना, मानव विकास संकेतकों में सुधार करना और 2015 के भूकंप जैसी विपत्ति के दौरान सहायता प्रदान करके नेपाल के विकास में योगदान देना रहा है। नेपाली प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से बुनियादी ढांचे और अन्य सहयोगी प्रयासों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। उदाहरण के लिए, नेपाल ने भारत को पश्चिम सेती जलविद्युत परियोजना शुरू करने का प्रस्ताव दिया है, जो कुछ समय से रुकी हुई थी। जलविद्युत क्षेत्र भारत और नेपाल के बीच सहयोग के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है और इसे द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में देखा जाता है। हाल के वर्षों में, भारत ने पारस्परिक लाभ और सतत विकास के लिए अपनी क्षमता को पहचानते हुए, इस क्षेत्र में विकास को तेजी से प्राथमिकता दी है।

जलविद्युत परियोजनाओं की प्रगति अब गति पकड़ रही है। सतलुज जल विद्युत निगम (एसजेवीएन) की सहायक कंपनी द्वारा शुरू की गई 900 मेगावाट की अरुण-द्वद्वद्व परियोजना त्वरित गति से आगे बढ़ रही है। इसके अलावा भारत ने 750 मेगावाट वेस्टसेटी परियोजना को विकसित करने के लिए नेपाल और भारत के नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर करके नेपाल की सहायता करने के लिए कदम बढ़ाया है, जिसे एक चीनी कंपनी ने वित्तीय बाधाओं का हवाला देते हुए रोक दिया था।

इसके अलावा, 900 मेगावाट की ऊपरी करनाली परियोजना के निर्माण के लिए एक भारतीय कंपनी जीएमआर ने जिम्मेदारी ली है। नेपाल ने भारत को बिजली निर्यात फिर से शुरू कर दिया है क्योंकि यह मानसून के मौसम में अतिरिक्त बिजली का उत्पादन कर पाता है। पिछले सप्ताह से, नेपाल भारत को लगभग 600 मेगावाट बिजली का निर्यात कर रहा है। विशेष रूप से, अकेले जून से दिसंबर 2022 तक, नेपाल ने भारत को जलविद्युत निर्यात के माध्यम से 11 अरब भारतीय रुपये अर्जित किये।

व्यापार संभावनाओं को बढ़ाने और भारत के साथ नेपाल के बढ़ते व्यापार घाटे के संबंध में चिंताओं को दूर करने के लिए, नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड ने नेपाल के कृषि उत्पादों के लिए गैर-पारस्परिक बाजार पहुंच और अन्य सामानों के लिए सरलीकृत नियमों का अनुरोध किया है। इसके अतिरिक्त, नेपाल ने बिजली व्यापार के लिए 25 साल के द्विपक्षीय समझौते का प्रस्ताव दिया है, जो वार्षिक नवीनीकरण की वर्तमान प्रणाली को प्रतिस्थापित करता है जो व्यापार में अक्षमता और अनिश्चितता लाता है।

केरल से चेतावनी: हाथी गलियारा बने नेपाल सीमा पर !!

के. विक्रम राव

दक्षिणी गजराज “हिरासत” में !

आखिरकार अरिकंपन पकड़ लिया गया। मगर बेहोश कर दिए जाने के बाद ही। अब केरल से तमिलनाडू सीमावर्ती कुंबुम घाटी के पास कलक्काड राष्ट्रीय बाघ संरक्षण क्षेत्र में वह रखा गया है। अरिकंपन एक जंगली हाथी है जिसकी दोनों तटवर्ती दक्षिणी राज्यों, केरल तथा तमिलनाडु की सरकारें (मार्क्सवादी और द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम) गत कई सप्ताहों से पीछा कर रही है। यह गजराज सबको झांसा देकर जगहें बदल देता है। याद आया किस्सा चंदन तस्कर कुसा मुनिस्वामी वीरप्पन का जो डाकू और आतंकी था। उसको कर्नाटक और तमिलनाडु के सशस्त्र बल पकड़ने में सालों तक नाकारा रहे। इस अपराधी ने 180 नागरिकों की हत्या की थी। करोड़ों रुपए के चंदन वृक्ष काट डाले थे। वह श्रीलंका के लिट्टे नेता प्रभाकरन का प्रशंसक था। वीरप्पन को तमिलनाडु पुलिस ने जंगल में घेरकर भून दिया था (18 अक्टूबर 2004)। तब कहीं अंतर्राज्यीय आतंक का खात्मा हुआ था। पर अरिकंपन के लिए जीवित पकड़ने के प्रयास निरंतर चलते रहे। हालांकि इस दरम्यान इस हिंसक हाथी ने ग्यारह इंसानों को कुचल कर मार डाला, कई राशन की दुकानें तोड़ डाली, बस्तियों में हंगामा बरपा। अपने नाम को वह सार्थक करता रहा। मलयालम मे अरी मतलब चावल और कंपन मतलब हाथी। चावल खाने के लिए वह कई राशन की दुकानों को वह तोड़ चुका है। मगर इडुक्की जिले में उसके कई फैन हैं। हिल स्टेशन अन्नकारा में ऑटो चालकों के एक समूह ने अरिकंपन फैंस एसोसिएशन का गठन किया है। यहीं पर हाथी को बेहोश करके इंसानों की बस्ती से दूर जंगल में छोड़ा गया था। इसके लिए वन विभाग के अधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में पुलिस और स्थानीय लोगों को लंबी मशक्कत करनी पड़ी थी।

हाथी का ही एक और हादसा था। तब धर्मराज युधिष्ठिर को असत्य का आचरण करना पड़ा था। महाभारत में अश्वत्थामा नामक हाथी को महाबली भीम द्वारा मारे जाने के बाद कौरव सेनापति गुरु द्रोणाचार्य की द्रुपदपुत्र द्वारा हत्या तभी संभव हो पाई थी। अब शायद ही कोई हाथी इतना चर्चित रहा हो जितना अरिकंपन ! संभवतः इतिहास में झेलम तट पर महाराजा पोरस के हाथियों का एक जिक्र महत्वपूर्ण है। तब सिकंदर की धनुर्धारियों ने सूंड पर बाण मारकर भगदड़ मचा दी थी। नतीजन हाथी सेना ने अपने ही पैदल सेना को कुचल डाला था। इतनी हानि अरिकंपन ने जन-धन की तो नहीं की, पर वह दक्षिण भारतीय मीडिया पर तीन महीनों से छाया रहा। शासकीय आदेश था कि उसका वध न किया जाए। तमिलनाडु के द्रमुक सरकार के वन मंत्री डॉ. मायावन मतिवेंथन, जो पेशे से चिकित्सक हैं, ने स्वयं निश्चित किया कि इस हाथी को सही सलामत वन विचरण हेतु मुक्त रखा जाए। मारा न जाए। तमिलनाडु शासन में अपर मुख्य सचिव सुप्रिया साहू (पूर्व महानिदेशक : दूरदर्शन) के भी ऐसे ही निर्देश थे। शायद इन्हीं अहिंसक प्रयासों का परिणाम था कि इस चावल-भक्षी गजराज को निहायत सावधानी और सहृदयता से कल (5 जून 2023) पकड़ा जा सका। वन पशु चिकित्सा सर्जन और वन विभाग के अधिकारियों की एक टीम द्वारा तमिलनाडु के कुंबुम ईस्ट रेंज में सोमवार के शुरूआती घंटों में जंगली हाथी अरिकंपन को सुरक्षित रूप से ट्रैंकुलाइज (बेसुध) किया गया। मदद के लिए तीन कुमकी हाथियों को भी बुलाया था। इन कुमकी हाथियों को प्रशिक्षित किया जाता है ताकि जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए उनका इस्तेमाल किया जा सके। अब अरिकंपन एक उपयुक्त स्थान में स्थानांतरित किया गया जहां तमिलनाडु वन विभाग उसकी निगरानी कर रहा है। कैद होने के पूर्व अरिकंपन, तमिलनाडु के जंगल में प्रवेश करने के बाद, मेगामलाई लोअर कैंप, कंबम, सुरुलापट्टी, यानाई गजम और कूथनैची वन रेंज में घूम रहा था। उसे बेहोश करने के बाद एक पशु चिकित्सा दल ने यह देखने के लिए कि क्या उसे कोई अन्य चोट लगी है, अतः अरिकंपन के वाईटल्स की जाँच की। उसके बाद उसे एक विशेष वाहन में लाद दिया गया। जिस रास्ते से अरिकंपन को ले जाया गया, उस पर बिजली की आपूर्ति बंद कर दी गई। तमिलनाडु के वन अधिकारियों ने कंबम क्षेत्र में पिछले सप्ताह के बाद ही इस जंगली हाथी को घने जंगल क्षेत्र में छोड़ने की योजना पहले ही बना ली थी। नवीन सूचना के अनुसार अरिकंपन को कलक्काड टाइगर रिजर्व में रखा गया है। यह कलक्काड़ मुंडनतुरई टाइगर रिजर्व तिरुनेलवेली जिले के दक्षिणी पश्चिमी घाट में (तमिलनाडु) के कन्याकुमारी जिले में है। यह इस राज्य का दूसरा सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र है। केवल इरोड का सत्यमंगलम वन्यजीव अभयारण्य ही इससे बड़ा है। यह वन्यजीव अभयारण्य (251 वर्ग किमी) और मुंडनतुरई वन्यजीव अभयारण्य (567 वर्ग किमी) की स्थापना 1962 में हुई थी। इन दोनों को मिलाकर वीरपुली और किलामलाई रिजर्व फॉरेस्ट के कुछ हिस्सों को जोड़ा गया था।

अरिकंपन को बाघ संरक्षण वन मे भेजने का वहां की जनजाति ह्लकानीह्व के लोगों ने विरोध किया था। ये आदिवासी कानी पारंपरिक रूप से खानाबदोश समुदाय हैं, जो अब केरल और तमिलनाडु के पश्चिमी घाटों के जंगलों में मुख्य रूप से बसे हैं। कानी ज्यादातर त्रिवेंद्रम और कोल्लम जिलों के निवासी हैं। शहरीकरण, तेजी से औद्योगीकरण और अर्थव्यवस्था में बदलाव के कारण यह आदिवासी परंपराएं तेजी से लुप्त हो रही हैं। जनजातीय ज्ञान के उचित शोधकार्य का अभाव है। कानी जनजाति के पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

यूं इस मदमस्त गजराज अरिकंपन द्वारा दक्षिण भारत में हुए नुकसान के संदर्भ में उत्तर प्रदेश से प्रचारित हाथी गलियारा पर शीघ्रकार्य होना चाहिए। नेपाल और भारत की सीमा पर ऐसी वीथिका रूप ले रही है। दोनों पड़ोसी राष्ट्रों के वनाधिकारी पीलीभीत में वार्ता कर चुके हैं। पिछले वर्ष 2022 में योगी सरकार ने एलिफेंट कॉरिडोर को मंजूरी दी थी। इसके बाद अब इसे विकसित करने की प्रक्रिया होनी है। इसमें नेपाल के शुक्लाफांटा का भी कुछ भाग पीलीभीत टाइगर रिजर्व से जुड़ा रहेगा। वन प्रबंधन के अंतर्गत हाथी गलियारा की व्यवस्था को लेकर रणनीति बननी है। अक्सर नेपाल क्षेत्र के हाथी भारतीय क्षेत्र में आते जाते हैं। बचाव आवश्यक हो गया है।

एशिया-प्रशांत क्षेत्र: नाटो की आहट और चीनी घबराहट

कमलेश पांडेय

जब आप दूसरों को परेशान करने की योजना बनाते हैं, इस बारे में अनवरत रूप से सोचते-गुनते रहते हैं तो आपको उस स्थिति की भी कल्पना कर लेनी चाहिए, जो कि प्रतिक्रिया स्वरूप आपको नाहक ही सौगात में मिलेगी। न्यूटन का तीसरा नियम भी कहता है कि प्रत्येक क्रिया के बराबर विपरीत प्रतिक्रिया होती है। चीन-अमेरिकी 'खलनीति' जिसे दुनिया कूटनीति समझती है, के ऊपर भी यही बातें लागू होती हैं। भारतीय चाणक्य नीति के सामने इनकी बेचारगी देखते ही बनती है।

मसलन, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में नाटो जैसे गठजोड़ की जो कोशिश अमेरिका कर रहा है, उससे विस्तारवादी देश चीन का चिंतित होना स्वाभाविक है। खासकर तब जब रूस के पड़ोसी देश यूक्रेन की तरह ही चीन के पड़ोसी देश भारत की भी दिलचस्पी नाटो की सदस्यता लेने में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हो। भारत के अलावा ताइवान भी तो यही चाहता है। इस कड़ी में और कई देश कतारबद्ध हो सकते हैं यदि अमेरिका और यूरोपीय देश ईमानदारी पूर्वक प्रयास करें तो।

एक बात और, भारत को पता है कि उसका ऐसा कोई भी कदम रूस को नागवार गुजरेगा। लेकिन चीन जो मूर्खतापूर्ण चालें भारत के खिलाफ चलता आया है, चलता रहता है, उसके दृष्टिगत वह रूस को समझाने में सफल रहेगा कि बढ़ती चीनी चुनौतियों के मद्देनजर और चीन-पाकिस्तान के बीच बढ़ते आर्थिक व सैन्य सहयोग के परिप्रेक्ष्य में उसके पास इसके शिवाय कोई अन्य चारा भी नहीं बचा है, क्योंकि आप चीन के खिलाफ खुले तौर पर हमारा साथ नहीं दे पाएंगे।

कहना न होगा कि यह नौबत इसलिए आ रही है कि भारत के विरूद्ध चीनी हरकतों को रोकने में रूस या तो अपने पूर्ण प्रभाव का इश्तेमाल नहीं कर पाया है या फिर चीन उसे भी भुलावे में रखकर भारत को नियंत्रित करने का मंसूबा पाले हुए है और वक्त वेवक्त तरह तरह के तिकड़म करता रहता है। इसलिए यह सवाल सहज ही लोगों के जेहन में उठ रहा है कि तो क्या अब चीन भी भारत में वही करने की तैयारी में जुटा हुआ है, जो रूस महत्वाकांक्षी देश यूक्रेन के खिलाफ युद्ध थोपकर पूरी दुनिया को अचंभित कर चुका है और अपनी असीमित ताकत का एहसास करवा रहा है। हालांकि रूस-यूक्रेन युद्ध के 15 माह की परिस्थितियां इस बात की चुगली कर रही हैं कि किसी भी देश को जीतना अब मुश्किल है, क्योंकि सैन्य तकनीकी क्षमताओं से अब लगभग सभी बड़े देश लैस हो चुके हैं और जिनके पास इसकी किल्लत है, उसे विपत्ति के समय देने वालों की कमी नहीं है। ऐसा सिर्फ इसलिए कि प्रतिस्पर्धी मजबूत देश को कमर तोड़वाई जा सके। यहां यूक्रेन की मदद करके अमेरिकी नेतृत्व वाले नाटो देश परोक्ष रूप से रूस-चीन को ही तो कमजोर कर रहे हैं!

कहना न होगा कि यूक्रेन में रूस अपनी युद्धगत कोशिशों में इसलिए कामयाब हुआ कि यूक्रेन एक परमाणु बम संपन्न देश नहीं है। उसके मित्र पश्चिमी देश खुलकर उसके पक्ष में युद्ध करने को तैयार नहीं हैं, बल्कि सिर्फ आर्थिक, नैतिक और सैन्य साजोसामान से मदद कर रहे हैं। क्योंकि पश्चिमी देशों को पता है कि रूस का स्वाभाविक मित्र देश भारत आज काफी मजबूत स्थिति में है और जैसे ही वह अमेरिका को रूस के खिलाफ प्रत्यक्ष युद्ध में पाएगा, तो वह खुलेआम रूस की तरफ से हथियार उठा लेगा। क्योंकि रूस अपनी सैन्य मदद और वीटो का प्रयोग एक नहीं बल्कि कई बार भारत के पक्ष में नापाक पाक और अमेरिकी गठजोड़ के खिलाफ कर चुका है, वो भी ऐसी ही अमेरिकी तिकड़म के खिलाफ।

तीन मौतों के जिम्मेदार आरोपी की जिला जज ने खारिज की जमानत, सेमरदहा में बेटी और पत्नी को गोली मारकर आत्महत्या का मामला

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सोशल मीडिया में बेटी का आपत्तिजनक वीडियों देखकर पत्नी और बेटी को गोली मारकर मौत के घाट उतारने के बाद आत्मग्लानि के चलते हत्यारोपी के आत्महत्या करने की घटना के जिम्मेदार आरोपी युवक की जमानत सत्र न्यायाधीश विष्णु कुमार शर्मा ने खारिज कर दी है।

बुधवार को जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी श्यामसुन्दर मिश्रा ने बताया कि 14 मार्च 2023 को सेमरदहा गांव के अनिल कुमार त्रिपाठी ने बहिलपुरवा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। वादी के अनुसार चाचा नन्दकिशोर त्रिपाठी की बेटी खुशी को माराचन्द्रा के अतरी निवासी पंकज यादव पुत्र उमेश ने बहला-फुसलाकर आपत्तिजनक वीडियों बना लिया था। इसे सोशल मीडिया में वायरल कर दिया था। इस कृत्य से आहत नन्दकिशोर त्रिपाठी ने लाइसेंसी बन्दूक से बेटी खुशी व पत्नी प्रेमिला को गोली मारकर हत्या कर दी। इसके बाद गांव के बाहर जंगल में पेड में रस्सी डालकर स्वयं भी आत्महत्या कर ली। पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज करने के बाद आरोपी पंकज यादव को गिरफ्तार कर उसका मोबाइल भी बरामद किया था।

आरोपी ने इस मामले में अधिवक्ता के जरिए न्यायालय में जमानत पेश की थी। बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद सत्र न्यायाधीश विष्णु कुमार शर्मा ने बुधवार को आरोपी पंकज यादव का जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त कर दिया।

एनडीपीएस एक्ट आरोपी को हुई डेढ साल की सजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवीकर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी नागेन्द्र कुमार नागर व पैरोकार आशोक कुमार यादव की पैरवी के चलते अपर जनपद न्यायाधीश एफटीसी सुशील कुमार वर्मा की अदालत ने आरोपी बहगुण उर्फ सीताराम पुत्र चंदू निवासी बछरन थाना पहाडी को एक वर्ष छह माह 15 दिन की सजा व पांच हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया है।

ज्ञात है कि एक दिसम्बर 2021 को पहाडी थानाध्यक्ष की टीम ने आरोपी बहगुण उर्फ सीताराम को दो किलो गांजा के साथ गिरफ्तार किया था। उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट का मामला दर्जकर आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया था। इस मामले में सहायक शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी प्रस्तुति एवं बहस के नतीजतन न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी न्यू सुशील कुमार वर्मा की अदालत ने आरोपी बहगुड़ उर्फ सीताराम पुत्र चन्दू निवासी बछरन थाना पहाड़ी को एक वर्ष छह माह 15 दिन के कठोर कारावास व पांच हजार रुपए का जुमार्ना से दंडित किया है।

हादसे के बाद पुलिस नहीं करा रही डॉक्टरी परीक्षण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाने के सोतीपुरवा मजरा पराको के गोरेलाल पुत्र स्व गोपी निषाद ने पुलिस अधीक्षक को लिखे पत्र में कहा कि बडी दुर्घटना के बाद पुलिस ने मामले की रिपोर्ट तो दर्ज कर ली है, लेकिन डॉक्टरी परीक्षण आज तक नहीं कराया। आरोपियों को गिरफ्तार भी नहीं किया।

बुधवार को सोतीपुरवा के गोरेलाल निषाद ने पुलिस अधीक्षक को लिखे पत्र में कहा कि 22 फरवरी 2023 को यूपी 70जीटी- 7695 से ट्रैक्टर यूपी 96-1169 ने रामसिंह पुरवा मजरा सिकरी के समीप प्लाट में एक्सीडेन्ट कर दिया था। इस बाबत पुलिस ने रिपोर्ट तो दर्ज कर ली, लेकिन उसका डॉक्टरी परीक्षण आज तक नहीं कराया। उसके सिर व दांत तथा मुंह और आंख में गम्भीर चोट आई है। पीडित को इलाका पुलिस डॉक्टरी परीक्षण को लगातार तीन माह से टहला रही है, लेकिन डॉक्टरी परीक्षण नहीं करा रही।

पीडित ने कहा कि हादसे से वह अपाहिज हो गया है। जल्द डॉक्टरी परीक्षण कराकर ट्रैक्टर चालक के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाये, ताकि उसे न्याय मिल सके।

सृष्टि शुक्ला की मौत सवालों के घेरे में

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कोतवाली कर्वी के एलआईसी तिराहे के पास जेपी इंटर कालेज के पास किराये के घर में रहने वाली 21 वर्षीय सृष्टि शुक्ला ने अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है।

आत्महत्या की ये घटना मंगलवार की रात हुई। बताया गया कि राजापुर थाना क्षेत्र के बरद्वारा गांव की निवासी सृष्टि शुक्ला पिता के निधन होने के बाद पढाई करने को मां-बेटी जेपी इंटर कॉलेज के पास किराये के कमरे में रहती थी। कुछ दिन पहले रगौली से नर्स का कोर्स करके जिला चिकित्सालय में तीन दिन की ट्रेनिंग को आई थी।

इस दौरान पता नहीं क्या हुआ कि उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सवाल है कि नर्स का डिप्लोमा करने के दौरान उसके साथ कुछ नहीं हुआ। जैसे ही वह तीन दिन को जिला चिकित्सालय में ट्रेनिंग को आई तो ये हादसा हो गया। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। मर्चरी में परिजन भी सृष्टि शुक्ला की मौत के मामले में कुछ भी बताने को तैयार नहीं है।

जिला पंचायत अध्यक्ष पति का नाम हटाते ही दर्ज हुई एफआईआर

छिबरामऊ। कोतवाली क्षेत्र के कल्यानपुर गांव में सड़क निर्माण के दौरान स्नानघर गिराने को लेकर मारपीट हुई थी। जिसमें जिला पंचायत अध्यक्ष के पति का नाम जोर-शोर से आया था। मारपीट में घायल युवक की तहरीर पर कोई कार्रवाई न करने पर रविवार को भाजपा नेताओं ने पीड़ित के साथ कोतवाली में धरना दिया था। विधायक द्वारा समझौता कराने के बाद मामले में छह नामजद समेत 10 अज्ञात पर रिपोर्ट दर्ज की गई। लेकिन जिपं अध्यक्ष के पति का नाम हटा दिया गया।

कल्यानपुर गांव निवासी सुनील कुमार पुत्र गिरजेश कुमार ने गांव के ही धर्मेंद्र, ब्रजेंद्र, जितेंद्र, गौरव, नीलू, प्रबल व उनके 10 अन्य अज्ञात साथियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है कि दो जून की सुबह 10 बजे वह अपनी जमीन व खेत देखने जा रहा था, तभी रास्ते में जिला पंचायत द्वारा सड़क निर्माण कराया जा रहा था।

मोर्चो के पदाधिकारी जनता तक पहुंचायें केन्द्र व प्रदेश की योजनायें: रणवेन्द्र प्रताप सिंह

कर्वी विधानसभा मोर्चा सम्मेलन सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में भाजपा के महा-जनसम्पर्क अभियान के तहत मोर्चा सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री रणवेन्द्र प्रताप उर्फ धुन्नी सिंह ने कहा कि भाजपा ही एक मात्र ऐसा राजनीतिक दल है। जिसमें सरकार और संगठन में सभी वर्गों को बराबर सहभागिता का मौका मिला है।

बुधवार को चित्रकूट इंटर कालेज में जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे की अध्यक्षता मे मोर्चा सम्मेलन हुआ। सम्मेलन मे बतौर मुख्य अतिथि/पूर्व मंत्री रणवेन्द्र प्रताप उर्फ धुन्नी सिंह व बतौर विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष युवा मोर्चा शिवेन्द्र सिह मौजूद रहे। मुख्य अतिथि रणवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि पार्टी ने मोर्चो का गठन किया है। महिलाओ को पार्टी मे सही प्रतिनिधित्व मिले। राजनीति मे महिलाओ की भागीदारी कैसे बढे, कैसे महिलाये समाज मे आगे आये। इसके लिये महिला मोर्चा, युवाओ को संगठन ज्यादा से ज्यादा जोडने को युवा मोर्चा, पार्टी और सरकार की बात को किसानो, अनुसूचित वर्ग के लोगो, अल्पसंख्यकों, पिछडो तक कैसे आसानी से पहुंचायी जा सके। इन मोर्चो का गठन किया है। मोर्चो से पार्टी ने समाज के हर वर्ग के लोगो को जोडने के साथ सरकार और संगठन मे बराबर की भागीदारी देने का काम सिर्फ भाजपा मे ही सम्भव है। अन्य दलो मे ये व्यवस्था नही है। अन्य दलो मे जाति विशेष या एक ही परिवार के लोगो को सरकार और संगठन मे मौका दिया जाता है। सभी वर्गो को ज्यादा से ज्यादा पार्टी मे जोडने का काम किया जा सके, इसके लिये इन मोर्चो का गठन पार्टी ने किया है। मोर्चो का गठन पार्टी ने बूथ स्तर तक किया है। मुख्य अतिथि ने कहा कि जल्द ही लोकसभा चुनाव में फिर से प्रदेश के अंदर कमल खिले, सभी मोर्चो को अपने क्षेत्र में सरकार की योजनाओं को प्रचारित करना है। युवाओ, किसानो, महिलाओ और अनुसूचित मोर्चा को इन वर्ग के लोगो के बीच मे जाकर केन्द्र व प्रदेश सरकार के इन वर्गो मे किये कामो और भाजपा की सरकार बनने के बाद देश का मान-सम्मान दुनिया में बढने की बातें बताने और छूटे पात्रों को योजनाओं को लाभ दिलाने का काम करना है। विशिष्ट अतिथि शिवेन्द्र सिंह ने कहा कि जैसे मनुष्य का शरीर कई अंगो से मिलकर बना है। प्रत्येक अंग का अपना-अपना काम है। अपना-अपना महत्व है, ठीक उसी तरह संगठन मे मोर्चो का अलग-अलग काम व महत्व है। जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने कहा कि पार्टी के जन सम्पर्क कार्यक्रम के तहत पूरे महीने कार्यक्रम होंगे। कल मानिकपुर विधानसभा का सम्मेलन मऊ मे होगा। सभी मोर्चो को पार्टी के तय कार्यक्रम में बढ-चढकर हिस्सा लेना है। सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि सरकार और संगठन मे कैसे तालमेल बना रहे, कैसे सरकार के कामो को संगठन से धरातल तक पहुंचे, इसके लिये मोर्चो का गठन किया गया है। जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव ने कहा कि मोर्चा सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गो को जोडना है। पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा ने कहा कि पार्टी हर मोर्चे पर कैसे सफल हो इसके लिये मोर्चो का गठन किया गया है। मोर्चा सम्मेलन युवा मोर्चा विकाश मिश्रा की अगुवाई में हुआ। संचालन युवा मोर्चा महामंत्री प्रमेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। सम्मेलन में महिला मोर्चा अध्यक्ष दिब्या त्रिपाठी, युवा मोर्चा अध्यक्ष विकास मिश्रा, अनुसूचित मोर्चा अध्यक्ष राकेश कोल, पिछड़ा मोर्चा अध्यक्ष लवलेश निषाद, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष शेरा खां, किसान मोर्चा अध्यक्ष पुष्पराज सिंह, देव त्रिपाठी, राजेश जयसवाल, राघवेन्द्र सिंह, मोहित मिश्रा, रामसागर चतुर्वेदी, पीयन सिंह, विनीता द्विवेदी, राखी चैबे, सुरेश अनुरागी, शक्ति प्रताप सिंह तोमर, आभेष मिश्रा व मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी समेत कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मिलावट रहित दूध से बनी चीजें खायें: पंकज

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर हुई गोष्ठी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन आयुक्त लखनऊ के आदेश के अनुपालन में कृषि भवन में विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर हुई गोष्ठी में व्यापार मंडल के उपाध्यक्ष पंकज अग्रवाल ने कहा कि खाद्य पदार्थों को खरीदते समय शुद्धता व स्वच्छता का विशेष ध्यान दें।

बुधवार को कृषि भवन में हुई गोष्ठी में मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी राहुल सिंह ने कहा कि खाद्य पदार्थों के लेबिल को अवश्य पढें। नमक-चीनी व खाद्य तेलों का प्रयोग कम करें, ताकि बीमारियों से बच जा सके। भोजन में ताजे व मौसमी फल तथा सब्जियों का प्रयोग करें। भोजन में बसा व खाद्य तेलों का इस्तेमाल कम करें। उन्होंने कहा कि खाद्य पदार्थों को मानक के अनुरुप होने व विभिन्न खाद्य पदार्थों के मानकों के बारे में जानकारी दी। सहायक आयुक्त डॉ सीआर प्रजापति ने खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग के क्रियाकलापों की जानकारी दी। व्यापारियों से आवाहन किया कि खाद्य पदार्थों में किसी तरह की मिलावट से बचें। शुद्ध एवं सुरक्षित खाद्य पदार्थों का ही क्रय-विक्रय करें।

डा प्रजापति ने बताया कि विभाग ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में जिले में छापेमार कार्यवाही कर विभिन्न खाद्य पदार्थों के 233 नमूने जांच को संग्रहित किये है। 262 की जांच रिपोट मिली है। जिनमे 132 जांच रिपोट मानक अनुरूप नही मिली। वित्तीय वर्ष में 98 वाद न्याय निर्णय न्यायालय में 22 वाद न्यायिक न्यायालय में दाखिल किये है। न्याय निर्णय न्यायालय ने 74 वाद निस्तारित किये है। जिनमें 58 लाख 49 हजार रुपये का जुमार्ना किया गया है।

उप निदेशक कृषि राज कुमार ने कहा कि फसलों में रासायनिक खादों एवं दवाईयों का कम से कम प्रयोग करें। उनके प्रयोग से भूमि एवं पर्यावरण को क्षति पहुंचती है। उनके अवशेष खाद्य पदार्थों में भी आ जाते है। जो नुकसान दायक होते है। रासायनिक खादों एवं दवाईयों के स्थान पर जैविक खादों एवं रोगाणुनाशकों के प्रयोग की सलाह दी। गोष्ठी की अध्यक्षता व्यापार मण्डल जिला उपाध्यक्ष पंकज अग्रवाल ने की। उन्होंने कहा कि शुद्ध दूध एवं दुग्ध उत्पादों के सेवन व मिलावट रहित खाद्य पदार्थो के सेवन के प्रति सभी को जागरूक किया। स्वच्छता के प्रति ध्यान देने को कहा। उन्होने बताया कि दूध एक महत्वपूर्ण आहार है। उसका शुद्ध होना अति आवश्यक है। उसमें किसी भी तरह की मिलावट नही होनी चाहिए। गुलाब गुप्ता ने व्यापरियों से कहा कि विभाग के साथ तालमेल बनाकर काम किया जाये तो अच्छे परिणाम मिलेंगे। मिलावट खोरों के विरूद्ध कार्यवाही भी होगी। मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी राहुल सिंह ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

दस्त नियंत्रण पखवाडे का सीडीओ ने किया शुभारम्भ

सीएमओ ने दी जानकारी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सघन दस्त नियंत्रण पखवाड़ा में सीडीओ अमृतपाल कौर ने नगरीय प्राथमिक केन्द्र कर्वी में सघन दस्त नियंत्रण पखवाड़ा का शुभारम्भ किया। मौजूद आशा, आंगनबाड़ी एवं महिलाओं से कहा कि बच्चों वाले प्रत्येक घर में ओआरएस पैकेट बांटे। घरों में दस्त प्रभावित बच्चे को ओआरएस का घोल कैसे बनाना है, कब-कब पिलाना है, ये अवश्य बतायें।

बुधवार को सीएमओ डा भूपेश द्विवेदी ने कहा कि 0-5 वर्ष तक के सभी बच्चों को ओआरएस दें। दस्त प्रभावित बच्चों को इलाज देना ही पखवाडे का लक्ष्य है, ताकि जनता में ओआरएस के उपयोग को बढ़ाते हुए बाल मृत्यु को रोका जा सके। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी/नोडल अधिकारी डा महेन्द्र जतारिया ने कहा कि जिले में लगभग 125000 बच्चों को ओआरएस पैकेट आशाओं को बांटना है। दस्त प्रभावित बच्चों को प्रत्येक चिकित्सा इकाई में बने ओआरएस जिंक कार्नर के सहयोग से इलाज करना है। जिले में लगभग 175000 ओआरएस पैकेट व 194284 जिंक की टेबलेट बांटी जानी है। इस मौके पर अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा इम्तियाज अहमद, डा राजेश कुमार आजाद, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा मुकेश पहाडी, डा रेनू श्रीवास्तव चिकित्सा अधिकारी, डीपीएम आरके करवरिया, सीडीपीओ बीएल गुप्ता, डीएएम लवकुश कुशवाहा, डीसीपीएम विकास कुशवाहा, सन्तोष श्रीवास्तव, रामबाबू अर्बन हेल्थ कोर्डिनेटर, रूपनारायण, गर्व तिवारी, अभिलाष खरे, कुलदीप सिंह, नरोत्तम सिंह, अल्का सिंह, साधना पाण्डेय एवं आशा व आंगनबाडी कार्यकत्रियां मौजूद रहीं।

पुलिस ने दबोचे तीन वारंटी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में पुलिस ने एक वांछित व दो वारंटी गिरफ्तार किया है।

बुधवार को प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा की अगुवाई में वरिष्ठ दरोगा रामवीर सिंह की टीम ने वांछित अजय तिवारी उर्फ गोलू पुत्र सुभाष तिवारी निवासी देबिन टोला कस्बा राजापुर को गिरफ्तार किया है। इस आरोपी की राजापुर थाने में हिस्ट्रीशीट खुली है। इसके खिलाफ न्यायालय ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। टीम में वरिष्ठ दरोगा रामवीर सिंह, सिपाही उमेन्द्र त्रिपाठी शामिल रहे।

इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की अगुवाई में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने पाक्सो एक्ट के वारंटी मनीष पुत्र निरपत उर्फ भगत धोबी निवासी ब्यौहरा थाना सरधुवा को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, सिपाही राहलु पुरी शामिल रहे। प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी नागेन्द्र कुमार नागर की अगुवाई में दरोगा त्रिलोकीनाथ मिश्रा की टीम ने वारंटी चुनकवना पुत्र चुन्ना निवासी रइयापुरवा मजरा गड़ीघाट थाना पहाड़ी को गिरफ्तार किया है। टीम में दरोगा त्रिलोकीनाथ मिश्रा, सिपाही संजीव सोनी, सिपाही विनोद कुमार, सिपाही अनिकेत शामिल रहे।

जालसाजी कर नगर पंचायत का निवासी बना सरहट का प्रधान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नगर पंचायत निवासी आखिर कैसे बना ब्लाक मुख्यालय के गांव का प्रधान। प्रधान रहते मनरेगा योजना से अपने खाते में निकाली मनरेगा मजदूरी।

मानिकपुर ब्लाक के सरहट गांव के प्रधान प्रमोद कुमार विश्वकर्मा का गांव में कोई घर/मकान नहीं है। फिर वह कैसे सरकारी दस्तावेजों में सरहट गांव का प्रधान बन गया। नगर पंचायत मानिकपुर के पटेलनगर में प्रधान परिवार सहित रह रहा है। सूत्रों ने बताया कि प्रधान की पत्नी अहिल्याबाई ने नगर पंचायत से प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ लिया है। एक व्यक्ति नगर पंचायत और ग्राम पंचायत का निवासी कैसे हो सकता है। फर्जी दस्तावेजों के सहारे प्रमोद कुमार विश्वकर्मा गांव का प्रधान बन गया है। धोखाधड़ी व जालसाजी करके प्रधान बनने वाले प्रमोद कुमार विश्वकर्मा के विरुद्ध जांचकर कार्यवाही होनी चाहिए। धोखाधड़ी व जालसाजी कर प्रधान बनने वाले प्रमोद कुमार विश्वकर्मा के फजीर्वाडे दिन-प्रतिदिन सामने आ रहे हैं।

अमृत सरोवर के नाम पर रगौली में उड रहीं नियमों की धज्जियां

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सदर तहसील कर्वी के रगौली गांव स्थित छत्रपति शाहूजी महाराज इंटर कॉलेज के पीछे बन रहे अमृत सरोवर व खेल मैदान में बडे पैमाने पर धांधली की जा रही है।

बुधवार को रगौली गांव के अमृत सरोवर व खेल मैदान में धांधली की खबर मिली है। ये टेंडर किसके नाम जारी हुआ है, इसके बारे में खोजबीन की जा रही है। क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष व बीडीओ तथा जेई रगौली गांव में बन रहे अमृत सरोवर व खेल मैदान में धांधली की बाबत मूक दर्शक बने हैं। बताते हैं कि ठेकेदार के खासे रसूख के चलते कोई कुछ बोलने को तैयार नहीं है। जिम्मेदार अधिकारी भी खामोशी धारण किये हैं। बताते हैं कि इसका टेंडर एक असरदार ठेकेदार को हुआ है। विद्यालय के बाहर अमृत सरोवर तालाब का निर्माण किया जा रहा है। शासन के नियमों की अनदेखी कर तालाब का सुंदरीकरण किया जा रहा है। लोगों का कहना है कि तालाब कम विद्यालय का सुन्दरीकरण व कायाकल्प तालाब के नाम पर हो रहा है। निजी उपयोग के लिए तालाब को अमृत सरोवर का नाम दिया जा रहा है। इसके चलते क्षेत्र पंचायत से ठेका दिलाया गया है। इस मामले में पडताल की जा रही है। जिला प्रशासन मामले को संज्ञान में लेकर जांच करे तो बडा घोटाला सामने आ सकता है।

25 साल पुराने रास्ते पर कब्जा कर रहा पुलिस विभाग का फॉलोअर, जिम्मेदार मौन ?

सुल्तानपुर। पुलिस विभाग का फालोवर खाकी शह पर 25 साल पुराने रास्ते पर अवैध कब्जा हो रहा है। मामला नगर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत गभडिया चौकी क्षेत्र के महुवरिया रोड से जुड़ा हुआ है। स्थानीय मोहल्ले वासियों की सूचना को पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा ने गंभीरता से लिया है।

महामुकाबले के बाद एसपीएल क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन

- एसपी वृंदा शुक्ला ने बैटिंग कर मैच का किया शुभारंभ-एसपीएल-इलेवन ने सीजन-13 किया अपने नाम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सदगुरु शिक्षा समिति से संचालित सदगुरु पब्लिक स्कूल खेल मैदान में सदगुरु मित्र मण्डल ने सदगुरु प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता सीजन-13 के समापन पर क्रिकेट प्रतियोगिता में सदगुरु ट्रस्ट के तहत संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं सेवा प्रकल्पों की 13 टीमों ने इस लीग में हिस्सा लिया था।

बुधवार को सदुरु प्रीमियर लीग सीजन-13 के फाइनल मैच में जिले की पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला ने बतौर मुख्य अतिथि मैच का शुभारंभ कराया। खिलाड़ियों को आशीर्वाद देकर उत्साहवर्धन किया। एसडीओपी आशीष जैन बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे। जिले की पुलिस अधीक्षक वृन्दा शुक्ला आईपीएस ने शिक्षा समिति अध्यक्षा श्रीमती उषा जैन के साथ बैटिंग कर एसपीएल फाइनल मैच का शुभारंभ किया। इस सीजन में टीम

एसपीएस-इलेवन ने 19 रनों से गंगा-यमुना इलेवन को फाइनल में हराकर विजेता का खिताब अपने नाम किया। अंशुमान पयासी (एसपीएस-इलेवन) ने मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार अपने नाम किया। देवेश यादव (गंगा-यमुना इलेवन) ने मैन ऑफ द सीरीज का पुरस्कार हासिल किया। कार्यक्रम की समाप्ति पुरस्कार वितरण से हुआ। विजेता टीम को 11000 रूपए, रनर उप को 7100 रूपए, प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी खिलाडियों को स्मृति चिन्ह दिये गये। समारोह में डॉ बीके जैन, उषा जैन, डॉ राजपूत, ड बीके अग्रवाल, डॉ पूनम आडवानी, डॉ दीपक शर्मा, अनुभा अग्रवाल, सुबीस के, प्राचार्य सुरेन्द्र तिवारी, राकेश तिवारी, शंकरदयाल पाण्डेय, दीपक वानी, फिरोज खान, रेफरी तुषारकांत शास्त्री, धीरेन्द्र वर्मा, रोशन सेन, विनोद पाण्डेय, राजकुमार आदि मौजूद रहे।

लेबनान में हिरासत में गद्दाफी के बेटे की तबीयत बिगड़ी

बेरूत। लेबनान में बिना किसी मुकदमे के हिरासत में लिए जाने के विरोध में तीन दिन से भूख हड़ताल कर रहे लीबिया के दिवंगत नेता मुअम्मर गद्दाफी के बेटे हन्नीबल गद्दाफी की तबीयत लगातार खराब होती जा रही है। उनके वकील ने मंगलवार को यह जानकारी दी। वकील पॉल रोमानोस ने कहा कि हन्नीबल गद्दाफी सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और चलने-फिरने में कठिनाई से पीड़ित हैं। हन्नीबल ने शनिवार से भूख हड़ताल शुरू की।

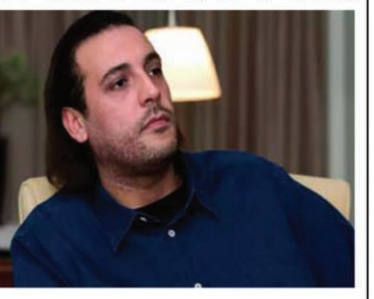

हन्नीबल को 2015 से लेबनान में हिरासत में रखा गया है, जब उन्हें पड़ोसी सीरिया से अगवा कर लिया गया था, जहां वह एक राजनीतिक शरणार्थी के रूप में रह रहे थे। गौरतलब है कि 45 साल पहले लीबिया में लापता हुए प्रमुख लेबनानी शिया मौलवी मौसा अल-सद्र के ठिकाने की जानकारी मांगने वाले लेबनान के आतंकवादियों ने हन्नीबल गद्दाफी का अपहरण कर लिया था। लेबनानी पुलिस ने बाद में घोषणा की कि उसने हन्नीबल को पूर्वोत्तर शहर बालबेक से हिरासत में लिया है। उसके बाद से उसे बिना किसी मुकदमे के बेरूत जेल में रखा गया है।

इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी ने अपने खिलाफ दर्ज सभी मामलों में गिरफ्तारी से संरक्षण मांगा

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पत्नी बुशरा बीबी ने लाहौर उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर कर देश भर में उनके खिलाफ दर्ज सभी मामलों में गिरफ्तारी से संरक्षण का अनुरोध किया। नौ मई को नागरिक और सैन्य प्रतिष्ठानों पर हमलों के बाद खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी के खिलाफ कार्रवाई तेज होने के बीच यह याचिका दायर की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक खान की पत्नी ने अपनी याचिका में कहा है कि उन्हें आशंका है कि उनको किसी मामले में गिरफ्तार किया जा सकता है। बुशरा ने देश में अपने खिलाफ दर्ज सभी ज्ञात और अज्ञात मामलों का भी ब्योरा सरकार से मांगा है। अपने मामले में संघीय और प्रांतीय सरकारों, महानिरीक्षकों, संघीय जांच एजेंसी (एफआईए) और अन्य निकायों

का नाम लेते हुए पूर्व प्रधानमंत्री की पत्नी ने अदालत से पुलिस और कानून लागू करने वाली एजेंसियों को किसी भी मामले में उन्हें गिरफ्तार करने से रोकने के लिए एक आदेश जारी करने का अनुरोध किया। राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी), रावलपिंडी ने बुधवार को बुशरा बीबी को 19 करोड़ पाउंड के राष्ट्रीय अपराध एजेंसी (एनसीए) ब्रिटेन निपटारा मामले में अल-कादिर यूनिवर्सिटी ट्रस्ट की ट्रस्टी के रूप में बयान दर्ज करने के लिए तलब किया है। बुशरा का बयान गवाह के तौर पर दर्ज किया जाएगा। एनएबी ने अल-कादिर विश्वविद्यालय से मिले दान और ट्रस्ट को दान देने वालों का रिकॉर्ड भी मांगा है।

भ्रष्टाचार रोधी संस्था ने अल-कादिर ट्रस्ट मामले में जांच का दायरा बढ़ाते हुए पूर्व प्रधानमंत्री खान की कैबिनेट के 22 सदस्यों द्वारा बेचे और खरीदे गए वाहनों का ब्योरा मांगा है। नौ मई को एनएबी ने खान को भूमि के कथित अवैध कब्जे और अल-कादिर विश्वविद्यालय के निर्माण तथा रियल एस्टेट कारोबारी और बहरिया टाउन के मालिक, मलिक रियाज को फायदा पहुंचाने के मामले में गिरफ्तार किया था। खान की गिरफ्तारी के बाद देशभर में हिंसक प्रदर्शन हुए थे।

नेपाल में शुरू हुआ अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन, बाबा रामदेव शामिल

काठमांडू। नेपाल में अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक सम्मेलन शुरू हो गया है। मंगलवार को सुदूर पश्चिम प्रांत के खप्तड़ नेशनल पार्क में आयोजित विशेष कार्यक्रम में नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल

प्रचंड ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। प्रचंड ने खप्तड़ क्षेत्र में एक अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक केंद्र बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि खप्तड़ के धार्मिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य केन्द्र बनाने के लिए उपयुक्त है। योग गुरु रामदेव भी धार्मिक स्थल खप्तड़ में तीन दिवसीय सम्मेलन के लिए खप्तड़ में हैं। उद्घाटन समारोह में बाबा रामदेव के अलावा आचार्य बालकृष्ण, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री झलनाथ खनाल, उप प्रधानमंत्री नारायण काजी श्रेष्ठ, विदेश मंत्री नारायण प्रसाद सऊद भी शामिल हुए।

यूएमएल के नेतृत्व वाली नेपाल की कोशी राज्य सरकार अल्पमत में

काठमांडू। सीपीएन (माओवादी केंद्र) ने कोशी राज्य सरकार से समर्थन वापस ले लिया है। इस वजह से सीपीएन (यूएमएल) के नेतृत्व वाली सरकार अल्पमत में आ गई है। कोशी प्रांत में 25 दिसंबर, 2022 को हिकमत कार्की यूएमएल, माओवादी केंद्र, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) और जनता समाजवादी पार्टी (जेएसपी) के समर्थन से मुख्यमंत्री बने थे। 93 सदस्यीय कोशी राज्य सरकार में यूएमएल के 40 सांसद, माओवादी केंद्र से 13, आरपीपी से 6 और जेएसपी से 1 सांसद समर्थित थे। जसपा पहले ही सरकार से समर्थन वापस ले चुकी है। अब विपक्ष में कांग्रेस के 29, माओवादी के 13, सीपीएन (यूएस) के 4 और जसपा के 1 सहित 47 सांसद हैं। समर्थन वापसी के बाद चूंकि विपक्ष बहुमत में है, इसलिए वे सरकार बनाने की तैयारी कर रहे हैं। नेपाली संविधान के अनुसार मुख्यमंत्री कार्की को 30 दिनों के भीतर विश्वास मत हासिल करना होता है। नेपाल के 7 प्रांतों में से यूएमएल की सरकार केवल कोशी प्रांत में है। केंद्र में सत्ता संतुलन बदलने के बाद प्रांतों में भी बदलाव आया।

चीन को पीछे करने के लिए अमेरिका-भारत को मिलकर काम करने की जरूरत, मोदी की यात्रा से पहले बोले अमेरिकी सांसद

वाशिंगटन। भारतीय-अमेरिकी कांग्रेसी ने कहा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने लोकतांत्रिक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारत और अमेरिका को मिलकर काम करने की जरूरत है। साथ ही अपनी ताकत का लाभ उठाकर सत्तावादी चीनी मॉडल का व्यवहार्य विकल्प प्रदान करना होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (छ्ष्टक्क) के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा पर अमेरिकी कांग्रेस के सदस्य राजा कृष्णमूर्ति की यह टिप्पणी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका की पहली राजकीय यात्रा से पहले आई है। गौरतलब है, पीएम मोदी राष्ट्रपति जो बाइडन के निमंत्रण पर अमेरिका की यात्रा पर जाने वाले हैं। कृष्णमूर्ति ने कहा कि मुझे लगता है कि पीएम मोदी की यात्रा अमेरिका-भारत संबंधों की ताकत का प्रतीक है और ये राजनीति से कई ऊपर है। उन्होंने कहा कि हमें इस रिश्ते को और मजबूत करना होगा। साथ ही सुनिश्चित करना होगा कि हम इसे नई ऊंचाइयों पर ले जाएं। उन्होंने कहा कि हमें यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि एक तेजी से आक्रामक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने लोकतांत्रिक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बिखर न जाए। यह कार्य अकेले अमेरिका का नहीं है। हमें भारत जैसे देशों की भी जरूरत है। संयुक्त राज्य अमेरिका और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा पर सदन की चयन समिति ने अध्यक्ष माइक गैलाघेर और सदस्य राजा कृष्णमूर्ति के नेतृत्व में नाटो प्लस को मजबूत करने के लिए भारत को शामिल करने वाले एक प्रस्ताव को अपनाया गया।

चीनी जहाजों ने हनोई में विरोध के बाद वियतनाम की समुद्री सीमा को छोड़ा

हनोई/बीजिंग। दक्षिण चीन सागर से लगे वियतनाम के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में लगभग एक महीने से संचालित चीनी अनुसंधान जहाज और उसको सुरक्षा देने वाले जहाज को सोमवार को भारी विरोध के बाद वियतनाम की समुद्री सीमा से हटना पड़ा है।

पोत-ट्रैकिंग आंकड़ों के अनुसार, चीनी पोत जियांग यांग होंग 10 ने 7 मई को वियतनाम के ईईजेड में पहुंचा था। इस पोत के जहाजों ने करीब दर्जन भर रूसी कंपनियों द्वारा संचालित गैस और तेल क्षेत्रों को पार किया। जानकारी के अनुसार आधी रात के आसपास वियतनाम के ईईजेड को छोड़कर चीनी जहाज और उसके दल के आधा दर्जन से अधिक जहाजों ने वापस चीन के हैनान द्वीप की यात्रा शुरू की। जहाजों की आवाजाही के बारे में पूछे जाने पर चीन के विदेश मंत्रालय ने हैनान की वापसी के बारे में कोई टिप्पणी नहीं की।

चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन ने एक प्रेस वार्ता में कहा कि चीनी अनुसंधान जहाजों के लिए अपने अधिकार क्षेत्र के तहत पानी में सामान्य

अनुसंधान गतिविधियों को करना वैध और कानूनी है, और अन्य देशों के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में प्रवेश करने के बारे में ऐसा कोई मुद्दा नहीं है।

अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत, ईईजेड के माध्यम से जाने की अनुमति है, लेकिन अनधिकृत सर्वेक्षण की अनुमति नहीं है। जहाजों को विदेशी दक्षिण चीन सागर में चीन के संचालन लंबे समय से इस क्षेत्र के देशों के लिए समस्या का कारण रहा है। 25 मई को सार्वजनिक विरोध में, वियतनाम की सरकार ने वरिष्ठ रूसी अधिकारी दिमित्री मेदवेदेव द्वारा हनोई की यात्रा के बाद चीनी अनुसंधान जहाज और उसके अनुरक्षण से देश के ईईजेड को छोड़ने का आग्रह किया था। इस घटना के बीच वाशिंगटन और बीजिंग के बीच हाल की घटना के बाद बढ़ते आक्रोश को देखा जा सकता है।

ब्रिटेन में बंद हुआ चीन का खुफिया पुलिस स्टेशन

लंदन। ब्रिटेन में चीन का खुफिया पुलिस स्टेशन को बंद कर दिया गया है। यह जानकारी संसद में ब्रिटिश सुरक्षा मंत्री टॉम तुगेंदत ने एक लिखित बयान में दिया है। सुरक्षा मंत्री ने लिखित बयान में कहा कि विदेशी राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय ने चीनी दूतावास से कहा है कि ब्रिटेन में ऐसे 'पुलिस सेवा स्टेशनों' से संबंधित कोई भी कार्य अस्वीकार्य है और उन्हें किसी भी रूप में काम नहीं करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि पुलिस लोगों की हिफाजत के लिए होती है। हरेक राज्य की अपनी-अपनी पुलिस फोर्स होती है। लेकिन क्या हो अगर कि कोई अन्य देश की पुलिस चौकी भी किसी और देश में खोल ली जाए। दरअसल, यह खबर आई थी कि जिसमें दावा किया गया था कि चीन की तरफ से ब्रिटेन में पुलिस स्टेशन खोल दिया गया था। जिसके बाद ब्रिटिश सुरक्षा मंत्री टॉम तुगेंदत ने कहा कि चीन ने ब्रिटेन भर में साइटों पर पुलिस सेवा स्टेशनों को बंद कर दिया गया। इन साइटों पर

चीनी राज्य द्वारा किसी भी अवैध गतिविधि का पता नहीं चला। यूके के कानून के अनुरूप किसी भी अन्य आरोप की तेजी से जांच की जाएगी। गौरतलब है कि इससे पहले अप्रैल के महीने में खबर आई थी कि चीन ने अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में खुफिया पुलिस चौकी स्थापित कर ली थी। एफबीआई ने न्यूयॉर्क में चीन के पुलिस बल के लिए एक सीक्रेट स्टेशन चलाने और अमेरिका में रहने वाले चीनी असंतुष्टों पर नज़र रखने के लिए एक आधार के रूप में इसका इस्तेमाल करने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

बांध टूटने से यूक्रेन में भीषण बाढ़, रूस पर लगाया बांध उड़ाने का आरोप

कीव। यूक्रेन पर रूसी हमले के सवा साल से अधिक बीतने के बाद भी दोनों देशों की आक्रामकता बनी हुई है। यूक्रेन की निप्रो नदी पर बने कखोव्का बांध नष्ट होने से भीषण बाढ़ आ गयी है। यूक्रेन ने रूस पर यह बांध उड़ाने का आरोप लगाया है। यूक्रेन ने रूस पर प्रमुख परमाणु संयत्र के पास स्थित कखोव्का बांध को विस्फोट से उड़ाने का आरोप लगाया है। यूक्रेन ने कहा है कि बांध के टूटने से युद्ध क्षेत्र में बाढ़ का पानी फैल गया है। राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने बांध उड़ाए जाने के बाद यूक्रेन की राष्ट्रीय सुरक्षा व रक्षा परिषद की आपात बैठक बुलाई है। रूस ने बांध उड़ाने का आरोपों को खारिज करते हुए यूक्रेन को ही इसके लिए जिम्मेदार ठहराया है। यूक्रेन के विदेश मंत्री दमित्रो कुलेबा ने सोशल मीडिया पर लिखा कि रूस ने हजारों नागरिकों को खतरे में डालते हुए कखोव्का बांध को नष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह एक जघन्य युद्ध अपराध है। यूक्रेन के अधिकारियों ने कहा है कि अगले पांच घंटों में पानी गंभीर स्तर तक पहुंच सकता है। क्षेत्रीय गवर्नर ऑलेक्जेंडर प्रोकुडिन ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर कहा कि पांच घंटे में पानी गंभीर स्तर तक पहुंच जाएगा। निप्रो के पश्चिमी तट पर दस गाँव और खेरसॉन शहर का एक हिस्सा

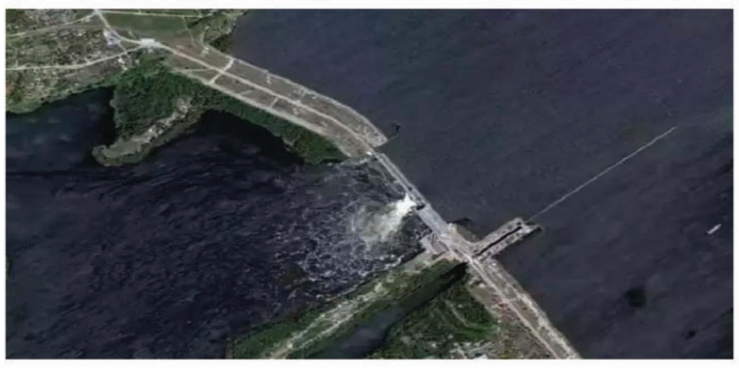

बाढ़ के खतरे का सामना कर रहा है और लोगों से निकासी की तैयारी करने का आग्रह किया गया हैसोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में विस्फोट से प्रभावित बांध को दिखाया गया है और तेजी से पानी के बहाव को दिखाया गया है। 2014 में मास्को ने इस बांध पर कब्जा कर लिया था, किन्तु 2022 के अंत में यूक्रेनी सेना ने इसे रूस से वापस ले लिया था। इस बांध से क्रीमिया प्रायद्वीप को पानी की आपूर्ति होती है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने कहा है कि बांध को नष्ट किए जाने से परमाणु संयंत्र में कोई जोखिम सामने नहीं आया है। वैसे इस स्थिति की बारीकी से निगरानी की जा रही है।

अफगानिस्तान में कार बम हमले में बदख्शां राज्य के डिप्टी गवर्नर सहित चार की मौत

काबुल। तालिबान की हुकूमत आने के बाद अफगानिस्तान में आतंकी हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही है। एक कार बम हमले में बदख्शां राज्य के डिप्टी गवर्नर सहित चार लोगों की मौत हो गयी। आधा दर्जन से अधिक लोग जख्मी बताए गए हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अफगानिस्तान में तालिबान की बदख्शां राज्य की राजधानी फैजाबाद में सुबह सवा 08 बजे उन पर कार बम से हमला किया

गया। उनकी गाड़ी से कार भिड़ा दी गयी और भिड़ंत होते ही कार बम धमाके के साथ फट गया। कार के परखच्चे उड़ गए। अहमदी एवं उनके दोनों सुरक्षाकर्मियों की मौके पर मौत हो गयी। उनकी कार के चालक की भी धमाके में मौत हो गयी। इस तरह अहमदी सहित चार लोगों की मौत हुई। घटना में आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हुए हैं। उन्हें अस्पताल ले जाया गया है। उनमें से छह की हालत गंभीर है। माना जा रहा है कि अभी मृतक संख्या बढ़ सकती है। अगस्त 2021 में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान की सत्ता संभालने के बाद लगातार आतंकी घटनाएं होती रही हैं, किंतु फैजाबाद में पहली बार कार बम से हमला हुआ है। बदख्शां राज्य के सूचना निदेशक मुइजुद्दीन अहमदी ने हमले में डिप्टी गवर्नर निसार अहमद अहमदी की मौत की पुष्टि की है।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।

सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025

ऑफिस मो.:
9565333000

Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

एयर इंडिया का एक विमान रूस में फंसे यात्रियों को सैन फ्रांसिस्को ले जाने के लिए भेजा गया

मुंबई/नई दिल्ली। रूस में फंसे 216 यात्रियों को अमेरिका में उनके गंतव्य सैन फ्रांसिस्को तक पहुंचाने के लिए एयर इंडिया का एक विमान बुधवार को अपराह्न तीन बजकर 20 मिनट पर मुंबई से मगदान (रूस) भेजा गया है। एयर इंडिया का यह विमान मगदान में फंसे यात्रियों और चालक दल के सदस्यों को लेकर आठ जून को सैन फ्रांसिस्को की उड़ान भरेगा।

एयर इंडिया ने बुधवार को जारी एक बयान में कहा कि मुंबई से मगदान के बीच हमारी एक उड़ान रवाना हो चुकी है। इसके आठ जून को स्थानीय समयानुसार सुबह साढ़े छह बजे रूस पहुंचने का अनुमान है। बयान के मुताबिक एयरलाइन कंपनी का एक दल भी विमान में सवार है, जो मगदान में मौजूद यात्रियों और चालक दल कर्मचारियों को जरूरी सहायता प्रदान करेगा। इस विमान से रूस में फंसे यात्रियों और चालक दल के सदस्यों के लिए भोजन और अन्य जरूरी वस्तुएं भी भेजी गई है।

पीटीआई समर्थकों की अमेरिका से दखल की गुहार से खड़ी हुई इमरान के लिए मुसीबत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सत्ताधारी गठबंधन पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट (पीडीएम) ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर अब उनके ही एक हथियार से हमला शुरू कर दिया है। आरोप लगाया जा रहा है कि इमरान खान के समर्थकों ने अमेरिका से पाकिस्तान के अंदरूनी मामलों में दखल देने की गुहार लगाई है। इसके पहले इमरान खान पीडीएम को अमेरिका की कठपुतली बताते रहे हैं। अमेरिका में इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के समर्थकों ने वहां के सांसदों के बीच लॉबिंग की मुहिम छेड़ी हुई है। इसके तहत अमेरिकी सांसदों से ऐसा विधेयक लाने की अपील की जा रही है, जिससे अमेरिकी सहायता को पाकिस्तान के मानव अधिकार संरक्षण संबंधी रिकॉर्ड से जोड़ा जा सके। पाकिस्तान के अखबार एक्सप्रेस ट्रिब्यून के मुताबिक अभी यह साफ नहीं है कि

पीटीआई समर्थकों ने अपनी मुहिम के लिए इमरान खान से हरी झंडी ली थी या नहीं। इसके बावजूद इमरान खान के विरोधियों ने इसे यहां एक बड़ा मुद्दा बना दिया है। कुछ मीडिया टिप्पणियों में पीटीआई समर्थकों की मुहिम की तुलना 2011-12 के बहुचर्चित 'मीमोगेट' कांड से की जा रही है। तब राजनयिक हुसैन हक्कानी ने तत्कालीन अमेरिकी सेनाध्यक्ष माइक मुलेन को एक मीमो (पत्र) सौंपा था। उसमें पाकिस्तान की सेना के खिलाफ तत्कालीन सरकार की मदद करने की अपील की गई थी। तब पाकिस्तान सरकार 2011 में एबटाबाद में आतंकवादी ओसामा बिन लादेन को मार गिराने की अमेरिकी कार्रवाई से बाद बने माहौल में घिर गई थी। आरोप लगा था कि पाकिस्तान सरकार ने गुपचुप इस कार्रवाई में अमेरिका की मदद की। 'मीमोगेट' कांड की जांच के लिए पाकिस्तान में न्यायिक जांच आयोग बना था, जिसने विवादित पत्र तैयार करने के लिए हुसैन हक्कानी को दोषी पाया था। आयोग ने कहा था कि हक्कानी पाकिस्तान के प्रति वफादार नहीं हैं। ताजा विवाद इस रविवार को खड़ा हुआ। उस रोज अमेरिका में पीटीआई के संयोजक की भूमिका निभाने का दावा करने वाले सज्जाद बुर्की ने एक ट्विट में कहा- 'अमेरिकी सांसद ग्रेग केसार की मेजबानी करने के लिए तारिक माजिद को शुक्रिया। अमेरिकी सांसद ने पाकिस्तान में लोकतंत्र, मानव अधिकारों और कानून के राज के संरक्षण के लिए समर्थन देने का वादा किया।'

इस ट्विट के साथ एक वीडियो भी टैग किया गया, जिसमें बुर्की और एक अन्य व्यक्ति अमेरिकी सांसद की मदद मांगते सुने गए हैं। बुर्की ने इस दौरान कहा कि अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के 86 सदस्य पीटीआई की उस अर्जी पर दस्तखत कर चुके हैं, जिसमें पाकिस्तान संबंधी विधेयक लाने की गुहार लगाई गई है। इसके पहले नौ मई को इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद हुई घटनाओं को लेकर पाकिस्तानी-अमेरिकी पॉलिटिकल कमेटी ने एक अभियान चलाया, जिसके तहत 60 से ज्यादा अमेरिकी सांसदों से संपर्क किया गया। उनसे यह अपील की गई कि पाकिस्तान सरकार पर दबाव डालने के लिए वे अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकेन से बात करें।

इस कमेटी का दावा है कि पाकिस्तान की पार्टी से उसका संबंध नहीं है। उसका मकसद सिर्फ पाकिस्तान में लोकतंत्र को मजबूत करना है। लेकिन मौजूदा मामले में उसने अमेरिका सरकार से पाकिस्तान के अंदरूनी मामले में हस्तक्षेप करवाने की कोशिश की है। इससे यहां इमरान खान के विरोधियों को एक सियासी औजार मिल गया है।